प्रकाशक
हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
सेवाग्राम (वर्धा, म प्र.)

मुद्रक
गुरुराम शर्मा
राष्ट्रभाषा प्रेस, वर्धा

अप्रैल, १९५३

मूल्य—सवा रुपया

विषय-सूची

भाग पहला

योजना

भाग दूसरा

प्रत्यक्ष काम

परिशिष्ट

निवेदन

यह पुस्तक 'पूर्व-बुनियादी तालीम' के नाम से सर्वोदय साहित्य संघ, काशी द्वारा पाठकों की सेवा मे अेक बार भेजी जा चुकी है। अुस वक्त मेरे पास परिमार्जन का समय नही था, लेकिन माँग बहुत तीव्र थी, अिसलिये जो भी मसाला मेरे पास पड़ा था अुसे अिकट्ठा करके पुस्तक का रूप दे दिया गया था। लेकिन बाद में जब अुसी चीज को अंग्रेजी में देने का प्रसंग आया तो मुझे अुसकी पुनरुक्तियो और कमियों का संशोधन करना आवश्यक जान पड़ा और वह किया भी।

लेकिन जनता ने अुस प्रकृत चीज को भी जिस चाव से ग्रहण किया तथा आज दूसरे संस्करण के लिये जितनी तीव्रता पूर्वक माँग हो रही है अुसका श्रेय अुसकी अनुभव—प्रधानता को है और अुसके लिये जितनी मै जनता की आभारी हूँ अुतनी ही अुनकी भी जिन्होने अिसे अनुभव-प्रधान बनाया।

अब यह चीज अंग्रेजी सस्करण के आधार पर पुनर्नियोजित कर दी गयी है लेकिन नियोजन मे पूर्णत. अग्रेजी अनुकरण नही है। अिसमें वे भी चीजे है जो अंग्रेजी पाठकों के लिये अनावश्यक न थी लेकिन हिन्दी वालो के लिये अुपयोगी है। यह सारा काम भाअी श्री खुशालसिह जी ने जिस श्रद्धा से सम्पन्न किया अुसके लिये अुन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद।

आशा है यह नयी चीज भी जनता को अुतनी ही रुचिकर होगी।

निवेदिका

शान्ता नारूलकर

पहले संस्करण के दो शब्द

पूर्व-बुनियादी का काम समझने तथा अुसे आगे बढ़ाने की माँग जोरों से थी। लेकिन अुसका तो प्रयोग ही चल रहा था। जो चीज अनुभव-सिद्ध नही, अुसे दूसरे को देना भी अुचित नही। अिसलिये अभी तक वह देश के सामने नही रखी गयी। और आज जो भी सिद्धि मिली है अुसका पूरा श्रेय मेरे सहयोगी श्री ना० रा० पवार और श्री घुगेजी को है। यदि अुन्होने काम को शास्त्रीय दृष्टि से समझकर अितनी अुत्कृष्टता पूर्वक न किया होता तो आज अुसे 'अनुभव-सिद्ध' नही कहा जा सकता था। अिस पुस्तक में जो प्रत्यक्ष काम आपके सामने रखा गया है वह अुन्हीके श्रम का फल है। जनता हमारे अिस कार्य को स्वीकार करे यही मेरी प्रार्थना है।

निवेदिका

शान्ता नारूलकर

प्रस्तावना

छोटे बच्चो की तालीम के बारे में शान्ता बहन ने अपने जो विचार प्रदर्शित किये हैं वे चिन्तन करने योग्य हैं। अक्सर अिस विषय का विचार शहरियों के खयाल से अभी तक किया गया है। लेकिन गाधीजी ने तालीम की वह व्यापक दृष्टि सामने रखी, जिनमे सबकी और जीवन भर की तालीम का समावेश था। और अुसमें खासकर देहातियो का विशेष खयाल था। वही दृष्टि लेकर शान्ता बहन के ये विचार हैं।

अिसमे अनुभव से काम किया है। यानी तालीम का प्रत्यक्ष तजरबा करने के बाद जो विचार सूझे हैं वे रखे गये हैं। अिसीलिये अिसका अेक महत्त्व है। वैसे पूर्व-पद्धतियो का भी सार ग्रहण अिसमे है। लेकिन सब कुछ होते हुअे भी अुसका मुख्य महत्त्व यही है कि ये विचार प्रयोग-जन्य हैं, और अनुभव-निष्ठ हैं। जो विचार प्रयोग-जन्य और अनुभव-निष्ठ होते हैं वे हमेशा दूसरो के प्रयोगो और अनुभवो के लिये भी गुंजायश रखते हैं, अर्थात् अुनमें आग्रह नही होता। वे केवल सुझाव-रूप होते हैं। वैसे ही ये हैं।

मेरी दृष्टि मे तो छोटे बच्चो की तालीम, जिसको हम पूर्व-बुनियादी तालीम कहते हैं, कुटुम्बो मे ही होनी चाहिये। माता-पिता ही बच्चो के प्रथम गुरु हैं और दूसरे गुरुओं से अुनका अधिकार भी श्रेष्ठ है बशर्ते कि वे शिक्षण की काबिलियत रखते हो। अभी वैसी स्थिति नही है। अिसलिये पूर्व-बुनियादी तालीम की योजना करनी पडती है और अुनका ढाँचा भी बनाना पडता है। लेकिन आदर्श तो यही होगा कि बुनियादी तालीम और प्रौढ शिक्षा का देश मे अितना फैलाव हो कि हरअेक कुटुम्ब अेक पाठशाला बने, और जैसे स्मृतिकारो ने सिखाया है, गर्भाधान से ही बच्चे की शिक्षा आरंभ हो। अिस आदर्श को जब तक नही पहुँचे हैं तब तक माता-पिताओ के प्रतिनिधि बनकर दूसरो को यह काम करना है। अुसकी अेक दिशा अिन विचारो में सूचित है। परिस्थिति के मुताबिक हर जगह अिसमे हेर-फेर हो सकता है। अुसी दृष्टि से पढनेवाले अिसे पढेंगे।

परम धाम,
पवनार २५-२-४९

—विनोबा

भाग १

योजना

१
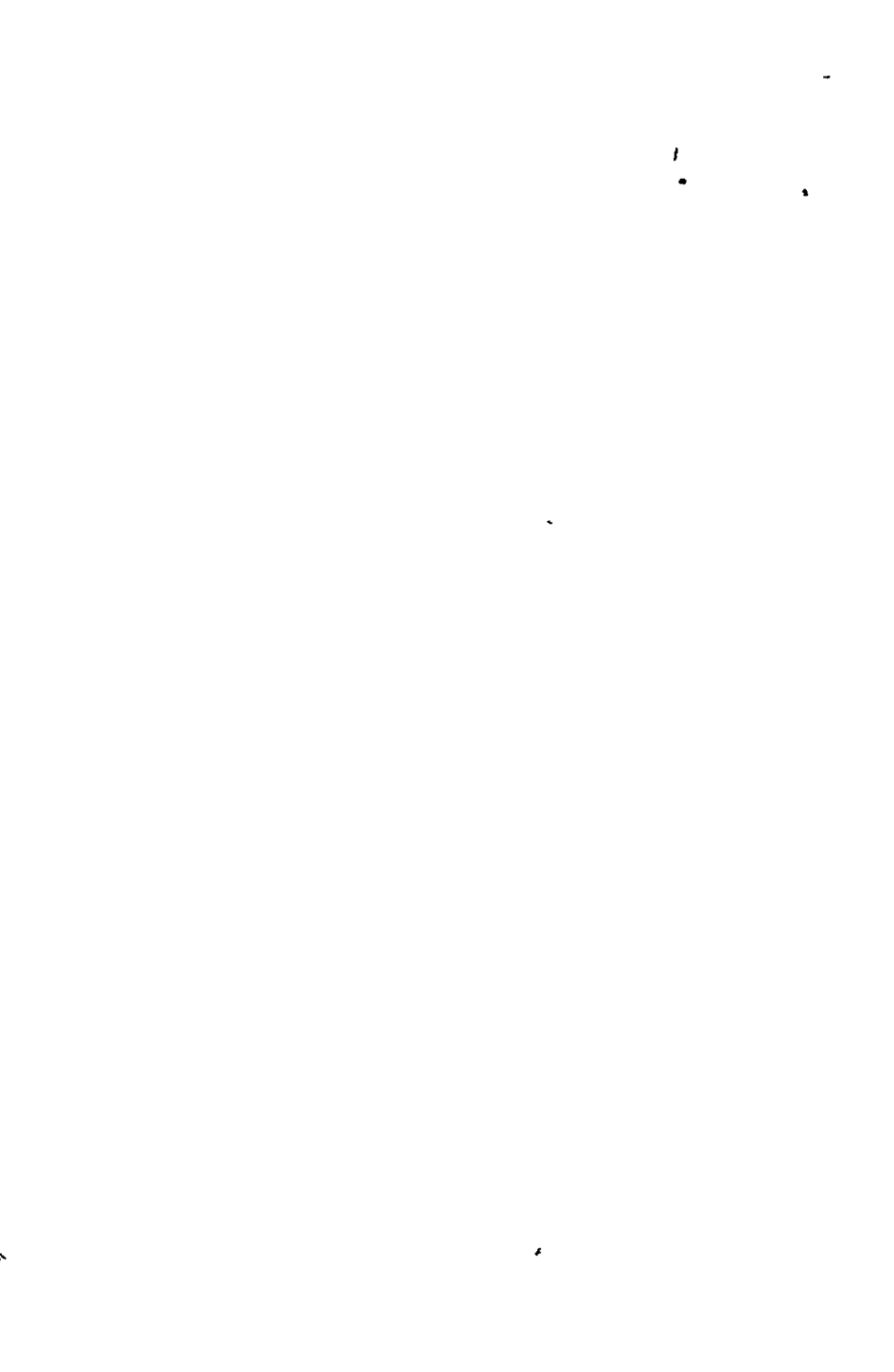
प्रारंभ

दुर्भाग्य से अभी तक हमारे देश मे शिक्षा का जितना भी कार्य हुआ है, वह ज्यादातर सात साल से अूपर की अुम्र के बालको के लिअे हुआ है। नीचे की अुम्रवालों के बारे मे हमने सोचा तक नही। हम जानते है कि अिस अुम्र में ही हमारे जीवन की नीव जमती है, लेकिन फिर भी अिन अभागोको अन्न-वस्त्र जैसी नित्य की आवश्यकतायें भी नसीब नही होती। शिक्षा की तो बात ही कैसी? जब बड़े-बडे सवालात हमारे सामने सोचने को पडे हो, तब अिस शिक्षा-विक्षा के झमेले में पडने की किसे फुरसत? लेकिन फिर भी हम हर शहर और हर गाँव मे शिक्षा के लिअे जमीन-आसमान अेक होते देखते है। चूंकि शिक्षा का सवाल अहम् सवालो मे नही आता, अिसलिअे क्या भुलाया जा सकता है? क्या हर प्रौढ का यह सहज कर्तव्य नही है? हम अपने अिन बालकों की शिक्षा के लिअे क्या करनेवाले है? अुनके लिये किस प्रकारकी शिक्षा अनुकूल है?

हमारे देश मे कहीं-कही शहरो मे पश्चिमी पद्धतियो के अनुसार चलनेवाले नये ढंग के अिने-गिने बाल-मंदिर खुले है, जैसे माण्टेसोरी पाठशालाये, किण्डरगार्टन और नर्सरी पाठशालाये वगैरा। लेकिन ये सिर्फ प्रायोगिक पाठशालाये हैं जिन्हे या तो सरकार चलाती है या अमीर लोग, और अुनमे ज्यादातर अमीरो के बच्चे ही पढ़ते है। गरीबो के लिअे अुनकी सख्या बिलकुल नगण्य है। गरीब बालक तो सामान्य स्वास्थ्य सफाअी के नियम भी नही जानता, सदाचार के नियमो की तो बात ही दूर रही। अुसके शारीरिक या मानसिक विकास की जिम्मेदारी किसी पर नही है। और फिर भी, ये ही बालक देश का नव-निर्माण

करनवाले है । यदि कोअी गरीव देहाती या शहरी वालक हम युवकों को पूछे कि आप मुझे कौनसी शिक्षा देनेवाले है जिससे कल वड़ा होनेपर मै आज से वेहतर जीवन विता सकूं और अपनी नागरिक जवाव-दारी का निर्वाह कर सकूं, तो हम क्या जवाव देंगे ? आज वह गंदगी से घिरा हुआ है, आवे-पेट, अर्व-नग्न रह रहा है, अुसके आसपास नरक का साम्राज्य है ! क्या वह भविष्य में हमारे अिस स्वतंत्र देशका नाग-रिक वन सकेगा ?

जव गांधीजीने देश के सामने अपनी वुनियादी तालीम की योजना रखी तो चारो ओर से प्रश्न अुठे थे कि सात साल से अूपर के वच्चो की शिक्षा के सम्वन्ध में तो आपने सोचा है, लेकिन सात से कम अुम्र वाले वच्चे कैसे रहेंगे ? अुनके लिअे क्या अिन्तजाम होगा? अुनके पास अुस वक्त अिन वच्चो के लिअे कोअी योजना न थी । लेकिन १९४४ मं जेल से लौटने के वाद अुन्होने महसूस किया कि अव अिन वालकों की और अविक अवगणना नही की जा सकती । तव अुन्होंने कहा : "वच्चा जैसे ही माँ के गर्भ मे आता है, और माँ अपनी अुस जिम्मेदारी को ग्रहण करती है, तभी से सच्ची शिक्षा की शुरुआत हो जाती है । यदि माँ का सही-सही मार्ग-दर्शन हो, और अुसे आनेवाली जिम्मेदारी के लिअे तैयार किया जाये, तो वही अुस वालक की भी शिक्षा होगी । वह अभिमन्यु के समान होगा जिसने अपना पहला पाठ अपनी माँ सुभद्रा के पेट में ही सीख लिया था । अिसलिअे पूर्व वुनियादी का श्रीगणेश प्रौढ़ शिक्षा से होता है और प्रौढ़ शिक्षा यानी वह शिक्षा जो माता-पिताओं को समझदार माता-पिता वनाती है ।"

जव कोअी नअी पद्धति शुरू होती है तो अुसकी अच्छाअी या योग्यता की जाँच तभी हो सकती है जव कि अुसे दूसरी प्रचलित पद्धतियों के साथ तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये, तथा वह आगामी समाज-रचना के लिअे कितनी अुपयुक्त है अिसे ध्यान में रखा जाये । हमारे देश में आज जो भी पाश्चात्य शिक्षण पद्धतियाँ प्रचलित है, वे जव अपने-अपने देशों में पहले-पहल दाखिल की गअी थी, तव अुनका आदर्श क्रान्तिकारी था । अुदाहरणार्थ, किंडरगार्टन पद्धतिने पहले-पहल छोटे वच्चों के

मानस-शास्त्र को समझकर घोषित किया कि खेल-खिलौने और चित्रों द्वारा बालको को शिक्षा दी जानी चाहिये, तथा अपनी घोषणा के अनुरूप ही प्रयोग भी किये। अुस जमाने में मानस शास्त्र अितना आगे नहीं बढ़ा था, फिर भी किंडर गार्टन पद्धतिने बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा के यांत्रिक तरीको को पलट दिया और अुनमें सजीवता पैदा की। आज भी शालाअे सफलता पूर्वक चल रही है।

दूसरी पद्धति है नर्सरी शाला की। यह बिलकुल छोटे बच्चो के लिअे है। अिन शालाओं मे बच्चो के स्वास्थ्य और परवरिश पर जोर दिया जाता है। ये शालाये पहले-पहल शहरो की गरीब आबादियों में शुरू की गअी थी। अिनमें वे बालक आते थे, जिनकी माताअे मजदूरी पर जाती थी। कुछ भी हो, आज अिनका हर समाज में प्रचलन है। नर्सरी काल के बालक जब तक स्कूल मे रहते है अुनकी अच्छी तरह देख-भाल की जाती है; अुनका स्वास्थ्य, खाना, विश्राम सभी का खयाल रखा जाता है और कभी-कभी माताओ से सम्बन्ध बढ़ाकर अुन्हे भी बच्चों की हिफ़ाजत के बारे मे बताया जाता है।

तीसरी पद्धति है डॉ.माण्टेसोरी की। यह सबसे अधिक प्रचलित है। डॉ.माण्टेसोरी ने अपनी पद्धति का प्रारभ शहरी मजदूर आबादियों के गरीब और असामान्य बालको के बीच किया, अिसलिअे अुनके साधन अत्यन्त शास्त्रीय है। अुन्होने प्राचीन पद्धतियो की काया-पलट कर दी है। वे बालक की सम्पूर्ण स्वतंत्रता और सर्वांगीण विकास की हामी थी। वे अुन महान् शिक्षा-विशारदो मे से अेक थी जिन्होंने बाल-शिक्षण मे बहुमूल्य योग दिया है।

हमारे छोटे बच्चो के लिअे भारतवर्ष मे ये तीन प्रकार की पद्धतियां प्रचलित है। अिनके शिक्षा विशारद सिर्फ बड़े-बड़े शहरो मे कार्य करते है। अेक देहाती बालक या शहर का गरीब बालक अिन शिक्षण-स्थलो से बहुत दूर रहता है। शहरों मे जहाँ ये प्रयोगशालायें चल रही है अुन तक सिर्फ अमीरों की ही पहुँच है। ये तीनो पद्धतियाँ अपने देशो में गरीब बच्चो के लिअे ही पैदा हुअी थी। फिर अिस गरीब देश में गरीब बालको के बीच क्यों नहीं पहुँची? शिक्षा-शास्त्रियोंरा

यह भी कहना है कि वे बड़ी खर्चीली है, अुनके साधन महंगे है, और साधन ही अुनमें प्रमुख है अिसलिअे फीस बहुत रहती है। अेक बच्चा जिसको अेक वक्त भी भर पेट भोजन नही मिलता, दाने दाने को तरसता है, वह अितनी फीस देकर अपने विकास की क्यों चिन्ता करने लगा ? अुसके लिअे तो ये अंगूर बढ़िया हों फिर भी खट्टे हैं।

हम अुसी शिक्षा-पद्धति को स्वीकार कर सकते है जो सबके लिअे अुपयोगी और लाभप्रद हो; और जो सबकी आवश्यकता को पूरी करती हो। अुसे नव-समाज के निर्माण मे लगनेवाली आवश्यक चीजों को पहचानना चाहिये, तथा अुसमें निर्माण की शक्ति होनी चाहिये। और अितना होनेपर भी अुसे समाज की मौजूदा स्थिति को नही भुलाना चाहिये, अुसके मौजूदा दृष्टिकोण को सामने रखकर चलना चाहिये। वही समाज प्रगतिशील माना जाता है जो शिक्षा के हर नये प्रयोग की छान-बीन करके अुपयोगी राह दिखा सकता है तथा अुन्हें प्रगतिशील मार्गपर बनाये रखने की शक्ति रखता है। अूपर दी हुअी विदेशी पद्धतियाँ हमारी आज की हालत में आम जनता के बच्चों तक नही पहुँच सकी हैं। यही अुनकी कमी है। और अुसका मुख्य कारण है अुनके खर्चीले साधन और व्यवहार। हमारे गरीब देश में बिलकुल सस्ते साधन होने चाहिये, यह बात हमे नहीं भूलना चाहिये। दूसरी बात यह है कि अुनकी अच्छाअियों के बावजूद वे हमारे बालकों के जीवन के लिअे अस्वाभाविक है, क्यों-कि वे हमारे देहात से मिलती हुअी नही हैं। वे विदेशी परिस्थिति के अनुभव के आधार पर बनी हुअी हैं। जब तक अुनमे निश्चित परिवर्तन नही कर दिये जाते, तब तक अुन्हे अपने देश में अपनाया नही जा सकता। अिसलिये बापूजीने कहा है कि यह विदेशी लिबास हमारे बालकों के लिअे स्वाभाविक नही है। वह जहरी है क्योकि निरी नकल है।

बापूजी नअी तालीम के निर्माता थे। और पूर्व बुनियादी शिक्षा अुसी सम्पूर्ण का अेक अंग है, अिसलिअे वे सात लाख देहातो के बच्चों को भुला नही सकते थे। अुनका निश्चय था कि अुनकी शिक्षा पहले होनी चाहिये। लेकिन अुस शिक्षा का बोझ कौन ले ? वह सम्पूर्ण बोझ सरकार अुठाये यह व्यावहारिक नही; न बच्चो के माता-पिता ही अितने शिक्षित है कि वे अपने बालको की अिस अुम्र में शिक्षा की आवश्यकता

को महसूस कर सके। आज तो अुन बालको के घर ही समस्या बने हुअे है। वे बालकों की शिक्षा के योग्य स्थान नही है। अिसलिअे हमने बार-बार लोगो को कहते सुना है कि ये घर बालक के विकास के लिअे प्रतिकूल है। ये बालक यदि पूरे दिन के लिअे नही तो कम से कम कुछ घण्टों के लिअे अपने अैसे घरों के प्रभाव से दूर रखे जाने चाहिये।

तब सवाल यह आता है कि आज की हालतो में हम अिन सवालो को किस तरह हल करेगे? घर और शाला के बीच कैसा सम्बन्ध रहेगा? क्या हम बच्चो को अुनके घर के वातावरण से यानी घर से अलग कर लेंगे? ये घर स्वभाव के प्रतिकूल है। वे माता-पिता के चरित्र, स्नेह-मय वातावरण से बालक के स्वाभाविक विकास मे सहायक नही होते। अिसलिअे २४ घण्टो मे कुछ ही घण्टे क्यो न हो, बालक यदि अुस वातावरण में रहे तो अुसके मानसिक विकास और शारीरिक स्वास्थ्य में बाधा आने ही वाली है। अिसलिअे जब हम बच्चे के प्रश्न को हाथ में लेते है तो क्या अुसके माता-पिता, अुसका घर, अुसके अड़ोस-पड़ोस के वातावरण सम्बन्धी विचार को छोड़ सकते है? क्योकि ये ही तो अुसके सच्चे गुरु है।

आज नवीनतम पाश्चात्य शिक्षा-प्रणालियाँ बतलाती है कि बाल-शिक्षण में बच्चे के माता-पिता, अुसके घर और अड़ोस-पड़ोस के वातावरण का बड़ा भाग रहना चाहिये। क्योकि अिन्ही से बच्चे को स्नेह-सुविधाये अुपलब्ध होती है, और अिसलिअे घर ही छोटे बच्चोंके सच्चे और स्वाभाविक विकास के शिक्षा-स्थल है। यदि बच्चोंके माँ-बाप अपने बालको की आवश्यकताओ को समझने लगें, यदि वे अपने बालकों से सहयोग और सहानुभूति रखे तो बालको का बाल्य-काल सुखमय होगा, वे तन्दुरुस्त, खुश-मिजाज, और मिलनसार बनेगे। और वही अुनके सफल जीवन की नींव होगी। अिसलिअे अब हमें शिक्षा की अैसी योजना तैयार करनी है जो बाल-काल को सच्चा सुखमय बना सके, जो कम खर्चीली हो, तथा वर्तमान परिस्थितियों को न भूलते हुअे जो अिस देश के लिअे स्वाभाविक, अुत्तम और सम्पूर्ण हो। वह योजना बापूजीने ही सुझाअी भी है।

२

पूर्व बुनियादी शिक्षा की तजवीज

कस्तूरबा ट्रस्ट और नअी तालीम की योजनाओं पर विचार-विमर्ष हो रहा था तभी पूर्व-बुनियादी शिक्षा का प्रयोग भी शुरु हुआ। यह जन्म से लेकर बुढ़ापे तक पूर्व बुनियादी से प्रौढ़ वय तक चलनेवाली शिक्षा का नमूना था। बापूजी स्वयं यह देखना चाहते थे कि देहात में बिना विशेष खर्च के यह प्रयोग किस प्रकार सफल होता है।

सन् १९४५ के आरंभमें अेक दिन सुबह जैसे ही मेरा वर्ग शुरू हुआ मैंने बापूजी से पूछा कि जब हम पैसा नही खर्च कर सकते तो सेवाग्राम में सात साल से कम अुम्रवाले बालको की शिक्षा का स्वरूप कैसा होना चाहिये ? बापू ने कहा :

"हमारा प्रयत्न तो यह होना चाहिये कि जितने बच्चे हैं अुन सबको हम खीच लें। जो नही आते अुनके लिअे हम स्वयं दोषी हैं। अिन बच्चोंको खीचने के लिअे हमें काफी आकर्षण पैदा करना होगा। जितने भी बच्चे हमारे पास हैं अुन्हे हमें अपने समझ कर चलना है। अुनका शरीर स्वस्थ हो जाये, अुनकी बुद्धि बढ जाये, अुनमें सामान्य सभ्यता आ जाये, तो हमें मानना चाहिये कि हमारा काम हो गया। मैं नही मानता कि बच्चे तोड़ना-फोड़ना सीखते हैं। मैंने बहुत बच्चो को पढ़ाया है, लेकिन किसी को अुत्पात नहीं करने दिया। अगर बच्चे मेरे हाथ में रहे तो मै अैसी तालीम दूं कि वे बचपन से ही अुत्पात नहीं करना, विध्वंस नही करना, यह सीखें। वे जो कुछ करे वह सृजनात्मक हो। अिसी में कला है।

"मै यह नही मानता कि बच्चे जन्म से अच्छे या बुरे होते हैं। हाँ, स्वभाव में तो जरूर कुछ भिन्नता होती है, लेकिन अुसे हमें ठीक करना

है। जिससे ज्ञात होता है कि जब बच्चा माँ के पेट में आता है, तभी से अुसकी तालीम शुरू होती है। अिसी पर प्रौढ़-शिक्षा खड़ी है। प्रौढ़ों के संस्कार बच्चो पर पड़ते है। बच्चो के सस्कारो की शुरुआत वही से होती है। बच्चे के हाथ-पैर हरदम हिलते-डुलते रहते है और वह हर समय अपने आप कुछ न कुछ करता रहता है। अुसे पता नही होता कि वह क्या कर रहा है, लेकिन अुसकी हर क्रिया रचनात्मक होती है, ध्वंसात्मक नहीं।

"दो-ढाअी साल के बच्चे हमारे हाथ मे आये और हमारे बताये तरीके से अपने हाथ-पैर अिस्तेमाल करे तो वे कहा तक जायेंगे, मैं अुसकी हद नही बाँध सकता। अुन्हें मार कर नही, बल्कि प्रेम से ही सिखाना है।

"सिखाने की मेरी पद्धति यह होगी कि पहले रगो की पहचान करा कर चित्र से शुरू करे। अक्षर भी तो चित्र ही होते है। कोअी तोते का चित्र बनायेगा, कोअी चिड़िया का, तो कोअी किसी अक्षर का। अिस प्रकार सबके अलग-अलग चित्र होंगे। लिखना चित्र के द्वारा शुरू किया जाये। १,२,अलिफ,बे,अ,आ आदि चित्र से सिखाये जाये। जब वे अक्षर चित्रके द्वारा सीखेंगे तो अलग से अुन्हें सिखाने की आवश्यकता नहीं होगी। लिखाअी-पढाअी-हिसाब बाद मे आयेगे। आज की तरह लिखाअी-पढाअी-हिसाब नही सिखाये जायेंगे। पहले पढना आ जायेगा तब चित्र रूप लिखना शुरू किया जायेगा। जेल में मैंने अेक प्रायमरी रीडर लिखी थी।[1] अिसी तरह बच्चे की बुद्धि बढती जाती है, हाथ-पैर भी चलने हैं, और वह सब खेलते-खेलते सीखता है।

"काम और खेल दो विभाग नहीं हैं। बच्चा आगे बढना है तो अिसी तरह अुसकी जिन्दगी काम या खेल बन जाती है। मेरे पास चन्द घण्टा

---

[1] यह पुस्तिका मूल गुजराती में 'बाल पोथी' नाम से छपी है, जिसका हिन्दी अनुवाद भी नव जीवन कार्यालय अहमदाबाद मे छपा है। की ०-३-० डाक खर्च ०-१-०

काम और चन्द घण्टा खेल अैसा कोअी विभाजन नही है। मैं बचपन से अैसा ही चला हूँ। मुझे कभी खयाल नही आता कि अब खेल का समय हुआ। बारह साल तक अिसी प्रकार रहा। आज मैं तो कोशिश करता हूँ कि दोनो लिपियाँ सीख लूं। मेरे लिअे यह काम आज कठिन मालूम होता है, किन्तु बच्चों के लिअे तो वह बिलकुल आसान है। अुन्हें तो मैं अुनकी दो साल की अुम्र में ही सिखा दूँगा। और जैसे-जैसे वह बढ़ता जायेगा; अुसके लिअे सब खेल बनता जायेगा। मेरे लिअे तो सच्ची नअी तालीम यही है कि बच्चे खेलते-खेलते सीखे। विदेशी भाषा सीखने में जितना समय दिया जाता है अुतने समय में बच्चे दूसरी दस लिपियाँ सीख सकते है।

"यहाँ हमे यह याद रखना है कि सरकारी मदरसे जब शुरू हुअे थे तो अुनके लिअे वातावरण पैदा करना पड़ा था। सत्ता रहते हुअे भी कठिनाअियों का सामना करना पड़ा था। हमे भी वातावरण पैदा करना है। यही पुनरुद्धार है। हमारी सब प्रकार की अच्छाअियाँ जो मिट चुकी है, अुन्हें नअी तालीम के द्वारा फिर से फैलाना है। तभी हमारा काम आसान होगा। अभी तक हमने गाँवों मे सही दृष्टि से प्रवेश नही किया है। अिसलिअे हमें यह काम आसान नही लगता। नअी तालीम मे वह शक्ति है जो ग्रामोत्थान का काम बड़े चमत्कार के साथ पूरा करेगी।

"बचपन से ही यदि लडके-लड़कियां हमारे हाथ मे आवें और सात साल या अुससे भी अधिक समय तक हम अुन्हे शिक्षित करें फिर भी यदि अुनमे स्वावलम्बन की शक्ति न आवे, तो हमे यह मानना पड़ेगा कि नअी तालीम का पूरा-पूरा अर्थ हमने ग्रहण नहीं किया। हमें जो आधुनिक शिक्षा दी जाती है अुसी के कारण हमारे मन मे दुविधा होती है कि शिक्षा स्वावलम्बी हो ही नहीं सकती। मेरा दृढ़ विश्वास है कि यदि नअी तालीम के द्वारा हम बालक को पूर्ण स्वावलम्बी नही बना सके तो मानना होगा कि शिक्षक समुदाय अुसे समझ ही नही पाया है। मेरी राय मे नअी तालीम के जितने लक्षण है अुनमें स्वावलम्बन अेक मुख्य अंग या लक्षण है। अगर यह बात छोटे लडके-लड़कियों के लिअे
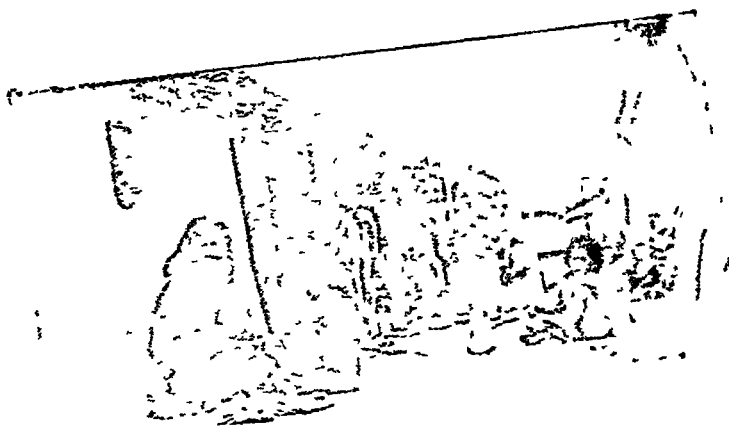
यह है गाव के घर और बच्चे के आसपास के वातावरण का चित्र, जिनमें से बच्चो (और अुनके साथ अुनके माता-पिताओ) को पूर्व-बुनियादी तालीम मे आकर्षित किया जाता है।

पूर्व-बुनियादी शिक्षा मे स्वाभाविक ही प्रौढ शिक्षा का भी समावेश है। चित्र में बच्चे को स्नान कराते समय अुनकी मा को शिक्षक मार्ग-दर्शन [illegible] रहा है।
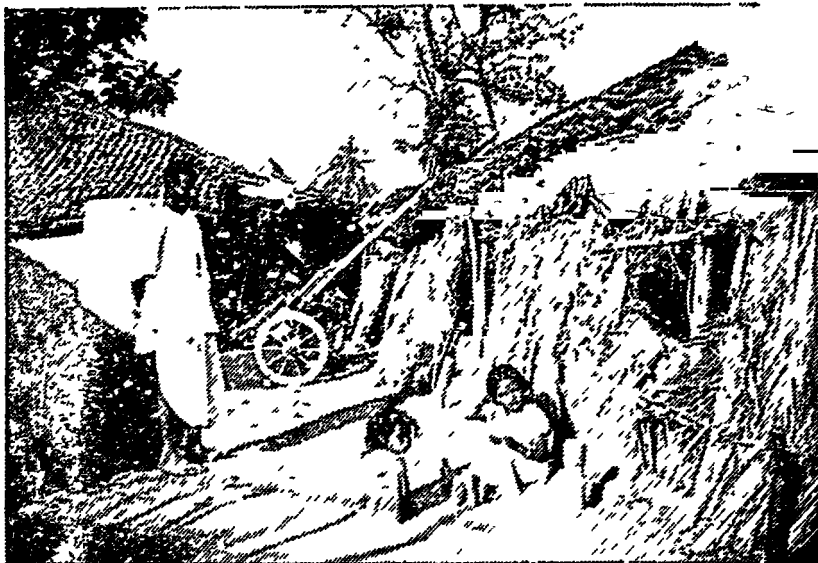
स्वच्छ और साफ रहना शिक्षा का अेक अंग है, पहले तो स्कूल जाने के लिये यह सीखते है, मगर फिर सारे जीवन के लिये । स्वाश्रय सबसे अच्छा बीज-मंत्र है, जो अिन्हे चिर काल तक साथ देता है ।

सेवाग्राम गाव की शाला । घर का रास्ता नाप रहे है । जैसे साफ होकर घर से आये थे, अुससे कही अधिक साफ बनकर घर चले ।

सही है तो फिर प्रौढ़-शिक्षा मे तो स्वावलम्बन होना ही चाहिये। अगर अैसा माना जाये कि प्रौढ़-शिक्षा मुश्किल काम है, तो मैं कहूँगा कि यह सिर्फ वहम है। बच्चो को जिस प्रकार हम 'लिखाअी-पढ़ाअी-हिसाब' सिखाने के पक्ष मे नही है, ठीक अुसी प्रकार हमे यह भी नहीं भूलना चाहिये कि नअी तालीम में सम्पूर्ण सहयोग आरंभ से ही अमल मे लाना चाहिये। जो सहयोग का पूरा अर्थ जानता है अुसके मन मे स्वावलम्बन के प्रति प्रश्न अुठ ही नही सकता।"

बापू का यह वक्तव्य पूर्व बुनियादी और प्रौढ़ शिक्षा का सिद्धान्त रूप है। बालक की शिक्षा अुसकी माँ की शिक्षा और बुद्धि से सम्बन्धित है—यह अेक हकीकत है। मा-बाप के परम्परागत संस्कार आचरण और सार-सभाल का ढग बहुत कुछ बालक के स्वभाव और आचरण को प्रभावित करता है। जिस घर मे वह पैदा होता है और रहता है वह भी अुसे प्रभावित करता है तथा वही अुसके शिक्षण का साधन है। यह स्वाभाविक है कि बच्चे का शरीर, बुद्धि और मन अुसी वातावरण में निर्मित होते है। आधुनिक शिक्षा-विशारद मानते है कि बालक का सर्वांगीण विकास और शिक्षा अुसके घरेलू वातावरण और अुनकी वास्तविक सृष्टिपर निर्भर करते है। कृत्रिम वातावरण मे अुनका पूर्ण विकास नही हो सकता। शाला और घर के लालन-पालन में विरोधी-भाव नही होना चाहिये, क्योंकि अुसका अुसके जीवन पर असर पड़ता है। अिसी अुम्र में बालक का शारीरिक और अैन्द्रिक विकास होता है। अनेकों सहज शक्तियो और भावनाओ का अुसमे प्रादुर्भाव होता है। अुन्हें समझने की बूझ माता-पिता और शिक्षक को होनी चाहिये। क्योंकि वे ही बालक की परवरिश के जिम्मेदार है। अुन्हे अुनकी जिम्मेदारी का ज्ञान देना जरूरी है। यह प्रौढ शिक्षा का अेक अंग है। हमने अिसीलिये प्रौढ शिक्षा और पूर्व बुनियादी का गहरा सम्बन्ध माना है। जब हम किसी बालक की शिक्षा का बोझ अपने पर लेते है तो अुसके माता-पिता को अपना सहयोगी बनाना जरूरी हो जाता है। बालक के विकास के लिअे क्या जरूरी है अिसे समझते हुअे अुन्हे हमारे कार्य में मदद करनी

चाहिये। शिक्षक और बालक का यह स्नेह-सम्बन्ध बालक के जीवन को आनन्द-मय कर देता है।

तब स्वावलम्बन का सवाल रह जाता है। शुरु में ही कहा गया है कि हमारी शिक्षा खर्चीली नहीं होनी चाहिये, वर्ना खर्च का बोझ कौन अुठायेगा? अिसके लिअे माता-पिता, शिक्षक और समाज का सम्बन्ध अिस तरह हो कि सब बच्चे की शिक्षा को अनिवार्य मानने लगें। शिक्षण का तरीका अितना सीधा-सादा और सरल हो कि अुसमें से स्वावलम्बन का पाठ बच्चे के साथ मां बाप और समाज को भी मिले, सभी अुसमें अपना-अपना योग दे। देहात का जीवन स्वावलम्बी होता है। हमारी शिक्षा मे अुसी जीवन को अमली रूप देते हुअे हमें आगे बढ़ना है।

बालक, पालक और समाज

बाल्यावस्था मे बालक का अपने घर और समाज से चोली-दामन का-सा सम्बन्ध रहता है। यह तो सभी जानते है कि बालक की शिक्षा जन्म से शुरू होती है। जब हम किसी बच्चे में गुण या अवगुण देखते है तो चट कह अुठते है— जैसा बाप वैसा बेटा, जैसी मा वैसी बेटी। अिसका मतलब यह है कि जो संस्कार माँ-बाप मे पहले से विद्यमान रहते है अुनका असर बच्चों के स्वभाव और व्यक्तित्व द्वारा प्रकट होता है। अुसके चाल-चलन, रहन सहन, बोल-चाल आदि को देखकर आप कह सकते है कि अुसमे अमुक वंशगत विशेषता है। आनुवंशिकता का बालक के विकास मे बडा हाथ रहता है। अुसी तरह अुनके दादा, नाना, मा-बाप आदि के स्वभाव, प्रकृति आहार-विहार, सभी बालक की शिक्षा पर गहरा प्रभाव डालते है। अिसलिये जब हम बाल-शिक्षा की बाते करते है तो हमे ये सब चीजे पहले समझनी होगी। यानी शिक्षक और पालक, स्कूल और घर के बीच सम्बन्ध रहना अनिवार्य है, और वह भी खास कर मा के साथ होना चाहिये।

जन्म के बाद जब से बच्चा माँ की गोद मे पलता है तभी से वह अुसका आश्रय स्थान बनती है। समझदार माँ अगर बच्चे की परवरिश करे तो वह तन्दुरुस्त और खुश मिजाज होगा। अिसका मतलब यह नही कि वह अुसे ज्यादा लाड़-प्यार से बिगाड दे। यदि वह अुसकी पूरी देख-भाल करती है, साफ रखती है, समय पर खाना देती है, सन्तुलित आहार या बालक की अुम्र के मुताबिक आहार का मतलब समझती है, ढंग के समय के अनकूल कपड़े पहनाती है, अुसके स्वतंत्र खेल-कूद मे बाधा

नही डालती, अुसमें अच्छी आदतें डालने का प्रयत्न करती है, बीमारी
में सार-संभाल करना, घरेलू अिलाज करना जानती है तो अितने में ही
वह अपनी जिम्मेदारी पूर्ण रूप से निर्वाह कर लेती है। धीरे-धीरे वह
अुसके शारीरिक और मानसिक विकास की ज़रूरत को समझने लगती
है, और वह अुसकी प्रगति है।

मां की गोद के वाद वच्चा अपने घर को आश्रय-स्थान वनाता है,
जिसमे माँ-वाप भाओ-वहन सभी है। यदि अुस आश्रय स्थान में शिक्षा-
प्रद और सुखमय वातावरण नही होगा तो वच्चे का स्वभाव विगड़ेगा,
क्योंकि वातावरण के मुताविक ही वच्चा वनता है। प्रकृति के वाद
ही परवरिश का स्थान है। वालकको स्नेह-ममता अपने घर मे प्राप्त
होती है। यह स्नेह भाव, यह ममता की प्राप्ति-अप्राप्ति ही अुसके
सुखी-दु:खी, सदाचारी-दुराचारी जीवन की नीव है, वही अुसे आगे
वढ़ने की शक्ति प्रदान करती है। असे घर के वनानेवाले होते है
माँ-वाप और वहाँ रहनेवाले दूसरे लोग। सुखमय जीवन, ममता और
आदर्शमय माता-पिता वाल-काल को आनन्दमय वना देते है। अिसलिये
मां-वाप की जिम्मेदारी महान है। वे ही भावी पीढ़ी और नव समाज
रचना के निर्माता हैं।

अिसलिये प्रौढ़ शिक्षा मे 'पालकों की जिम्मेदारी' अेक महत्त्व का
विषय होनी चाहिये। अिस जिम्मेदारी को समझकर अुन्हे वालक की
देख-रेख, पालन-पोषण किस तरह करना चाहिये, यह समझना चाहिये।
आज गरीव घरों में वच्चों से गुलामों की तरह काम लिया जाता है।
वच्चे काम करें यह तो हम चाहते है, लेकिन घर पर वच्चे जो काम
करते है अुसे शिक्षा नही कहा जा सकता। वह तो निरी मजदूरी है
जो माता-पिता अपने वच्चोंसे करवाते है; और खास कर लड़कियाँ तो
घर का पूरा भार ही अुठा लेती है। अतः माँ-वाप को समझाना अेक
अनिवार्य वात है। अुन्हे यह समझाना होगा कि आगे आने वाले
समाज को यदि शक्तिशाली वनाना है तो अुन्हें अपनी सन्तान को अिस
तरह सिखाना चाहिये कि अुससे अुसकी वुद्धि वढ़े। अुसे गुलाम की
तरह नही, वल्कि स्वतन्त्र अिन्सान की तरह जीना सीखना चाहिये।

अेक ओर जहाँ काम कराने वाले मां-वाप जानवरो की नन्हे वच्चो से काम लेते है वहाँ दूसरी ओर अत्यन्त लाड़-प्यार से अुन्हे विगाड़ डालते हैं। हमारी प्रौढ शिक्षा का मूल अुद्देश्य यही है कि माँ-वापों को अपने दायित्व का भान करावें, जिससे जो अडचने वालक के समुचित विकास मे वाधक वनती हैं अुन्हे दूर कर सके।

छोटे वच्चो की शाला के वातावरण में घर का आभास मिलना चाहिये। जव घर और शाला मे स्नेह-भाव रहेगा, तो वालक को अेकता महसूस होगी। वह शाला की कअी अच्छाअियाँ सीख कर घर लायेगा, वे मा-वाप को जँचेगी और वे अुन्हे अपना लेगे। परन्तु अगर घर और शाला के वातावरण में परस्पर विरोध रहा तो अुनसे वच्चे के विकास-मार्ग मे वाधा आयेगी, क्योकि अुसके मन पर दो परस्पर विरोधी वातावरणो का प्रभाव पड़ेगा, दोनो मे अुस पर कावू पाने के लिअे कशमकश चलेगी, और यशस्वी वही प्रभाव होगा जो शक्तिशाली होगा, फिर वह अच्छा हो या वुरा। अिसलिअे पालक और शिक्षक वालक को समझने के लिअे अेक-दूसरे के अत्यन्त निकट आये, अुनका वालक के जीवन पर मिला-जुला प्रभाव पडे जिससे अुसे शाला और घर में अुत्तम अनुभव प्राप्त हो, और दोनो अुसके सर्वांगीण विकास मे योग दें। अिस तरह वालक की शिक्षा की जिम्मेदारी पालक और शिक्षक दोनो पर समान रूप से है।

जैसे शाला और घर दोनो मिलकर अैसे वातावरण का निर्माण करते है जिस पर वच्चे की शिक्षा निर्भर करती है, वैसे ही जिस समाज में वच्चा जन्म से परवरिश पाता है, वह समाज भी अपना काम करता है। हमारे देश मे आज जो समाज-रचना है अुसका शिक्षा-केन्द्र देहात है। हर प्राणी अिस सामाजिक शासन के दायरे में रहता है। वह सरकारी कानून तोड़ सकता है लेकिन सामाजिक कानून के विरुद्ध कुछ करने की हिम्मत नही कर सकता। फिर चाहे वह कितना ही पढ़ा-लिखा और विद्वान क्यों न हो अगर अुसे अपने कुटुम्ब के साथ रहना है तो अुसे समाज-शासन के अन्तर्गत चलना ही होगा। अिसलिअे हमारी

योजना अैसी होनी चाहिये कि अुसमें यह सामाजिक-शिक्षा-केन्द्र अन्तर्हित रहे।

समाज मे हर व्यक्ति जानता है कि वैयक्तिक और सामाजिक जीवन मे समन्वय रहना चाहिये। आज के बालक कल के नागरिक है। यदि कोअी समाज अपने शासन से व्यक्ति के जीवन को दबाने की कोशिश करेगा तो वह जिन्दा नही रह सकता। ठीक अुसी तरह अगर कोअी व्यक्ति सदा सामाजिक शासन के विपरीत चलता है तो वह अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारता है। कहने का मतलब यह है कि समाज पर व्यक्ति और व्यक्ति पर समाज निर्भर हैं। दोनों अेक-दूसरे के पोषक हैं, अेक-दूसरे की शक्ति बढ़ाते है। अच्छे, समझदार और शिक्षित नागरिकों का समाज प्रभावशाली समाज होता है। यदि पालक और शिक्षक दोनों समझ ले कि हमारे पारस्परिक सहयोग से प्रभावशाली समाज बननेवाला है और हम अुस समाज के अग है, और यदि वे अिस दिशा में सच्चा प्रयत्न करें तो बालकों की शिक्षा पूर्ण होगी अुनका भविष्य अुज्ज्वल होगा। अिस तरह हम देखते है कि पूर्व बुनियादी और प्रौढ शिक्षा साथ-साथ चलती है। अगर बालक-शिक्षक के नाते हमें अनुकूल वातावरण तैयार करना है तो हमे अुसके कुटुम्ब और समाज से मेल बढ़ाना होगा, क्योकि हमारे पास आनेवाला बच्चा कुटुम्ब और समाज का अुत्तरदायित्व अुठानेवाला है।

अब आगे स्वावलम्बन की बात आती है। कोअी पूछ सकता है कि पूर्व बुनियादी शिक्षा मे स्वावलम्बन का क्या अर्थ है। अिसका अर्थ यदि कमाअी है तो दो-तीन साल का बच्चा क्या काम कर सकेगा? बात बिलकुल ठीक है। अितने छोटे बच्चे से कमाअी की अपेक्षा नहीं की जा सकती। परन्तु यह भी सत्य है कि अुसका हिलना, चलना, खेल-कूद, सभी सृजनात्मक होते हैं। खेल का मतलब होता है कुछ करते सीखना। यदि शुरू से अुसे रचनात्मक काम की आदत पड़ जाये तो अुसकी प्रगति अुसी दिशामे होगी। वह आलसी नहीं होगा और आगे चलकर अुसे कोअी काम बोझ नही मालूम होगा। कामके साथ वह अुस काम में दिमाग भी लगायेगा जिससे अुसकी सृजनात्मक प्रवृत्ति

अधिक बढ़ती जायेगी। जिस परिवारमें मा-बाप काम करने वाले होते हैं वहाँ बच्चा भी कुछ-न-कुछ करता ही रहता है। काम के साथ साथ बुद्धि भी तैयार होती जाती है, क्योंकि कोअी काम क्यों किया गया यह माता-पिता बतलाते रहते हैं। अिसलिये आगे की शिक्षासंस्थाओं को स्वावलम्बन के महत्त्व को समझना चाहिये। बापूजी हमेशा देहात की दृष्टि से सोचते थे यानी सारी दुनिया के समाज को देखते थे। वे हमारी सामाजिक और आर्थिक हालत को जानते थे, अिसलिये अुन्होंने कहा था : प्रौढ़-शिक्षा के मानी प्रौढ़ों को अुनकी जिम्मेदारी समझाना है, अुनकी कमाने की शक्ति को बढ़ाना है। अेक कमाये और सब खाये यह चल नहीं सकता। हर अेक कमाये और हर अेक खाये, यही सामुदायिक जीवन का मूल मन्त्र है। मुझे मरीज़ के मरने का डर नहीं है, मैं अुसे मरीज़ बनने से रोकूँ अितना ही बस है। अच्छे समाज में पंगु बहुत कम रहते हैं। बच्चों को तो मा-बाप खिलाते ही हैं। (अच्छे समाज में बच्चे भी लम्बे अरसे तक भार नहीं रहते। बच्चा जहाँ चार-पाँच साल का हुआ, कि कुटुम्ब की मदद करना प्रारम्भ कर देता है। यही हमारी नयी तालीम है।) और यही हमारी नअी तालीम के स्वावलम्बन का अर्थ है। मतलब यह कि हर अेक को श्रम करना, कमाअी करना और कमाअी भी विवेक पूर्वक समझ-बूझ के साथ करना सीखना चाहिये। किसी को भी, फिर वह बालक हो, प्रौढ़ हो, मामूली आदमी हो या विद्वान् हो, अपने कुटुम्ब पर बोझ नहीं बनना चाहिये।

४

पूर्व बुनियादी की चार अवस्थायें

मां की गर्भावस्था से लेकर सात साल के वच्चे का जीवन वहुत महत्त्वपूर्ण है। यह समय चार विभागो में वाँटा जा सकता है—(१) गर्भावस्था से जन्म तक (२) जन्म से लेकर ढाअी साल तक, (३) ढाअी साल से चार साल तक (४) चार साल से सात साल तक। यह सम्पूर्ण समय पूर्व वुनियादी काल है।

पहली दो अवस्थाओ में मां और वच्चा दोनो का हमारी शिक्षा से सम्वन्ध रहता है, क्योंकि मां और वच्चे को अलग-अलग नही किया जा सकता। यह वक्त खास कर शारीरिक विकास का है, अिसलिये मां और वच्चे के स्वास्थ्य, स्वस्थ वातावरण और सफाअी महत्त्वपूर्ण चीजें है। अिसलिये मां की शिक्षा में हमें मातृ-जीवन सम्वन्वी विपयों के साथ अिन विपयों पर ज्यादा जोर देना चाहिये। कस्तूरवाट्रस्ट के वैद्यकीय विभाग ने अिसकी अेक रूप-रेखा वनाअी है। कहीं-कहीं अुसपर अमल हो रहा है।

माँ के स्वास्थ्य पर वच्चे का स्वास्थ्य निर्भर है और मां को मातृ-जीवन का जितना ज्ञान है अुसपर वच्चे की हिफाजत निर्भर है। पुराने विचारों के घरो में अक्सर खाने-पीने और संगोपन में जितना ध्यान लड़कों की ओर दिया जाता है, अुतना लड़कियों की ओर नहीं दिया जाता। अिसी का कुपरिणाम लडकियों को आगे चलकर भुगतना पड़ता है। अुम्र के पहले पांच सालों मे शरीर की हड्डियाँ और स्नायु वगैरा मजवूत होते है, शरीर वनता है। अिन दिनो यदि लड़की को कैलशियम (चूना) न मिला या खूराक में प्रमाणतः कमी रही तो हड्डियाँ

स्कूल में—अेक दूसरे की मदद करना भी बहुमूल्य है। वे सफाअी पसन्द करते है और अिसके लिये काम करने को सदा तत्पर रहते हैं।

स्कूल में—सफाअी-नायक सब बच्चों के मुंह और हाथ देखता है। अिससे सफाअी के लिये कितनी प्रेरणा मिलती है !

कमजोर और सिकुड़ी हुअी हो जाती है। यदि घर स्वस्थ-साफ न हो, हवा-प्रकाश का अभाव हो तो लडकियो मे खून की कमी रहती है; वे शरीर से कमजोर रहती है। वे अविकसित हड्डियो और शरीर के कारण कष्ट अुठाती है। अिसका पता किसी को नही रहता, लेकिन शादी के वाद जव वे अपने वैवाहिक जीवन की जिम्मेदारी अुठाने में असमर्थ होती है, तो अुनका वैवाहिक जीवन असफल रहता है और कअी को प्रसव मे या प्रसव के प्रत्याघातों के कारण अपनी जाने कुर्बान करनी पडती हैं। अिसलिअे पालकों को लडकी के स्वास्थ्य की ओर वचपन से ध्यान देना चाहिये। हम जितना ध्यान लडके के स्वास्थ्य की ओर देते है, अुससे ज्यादा नही तो कम से कम अुतना ही लड़की की ओर भी दे।

स्त्रियों को अिन वातो का ज्ञान करा देना चाहिये। गर्भिणी स्त्री को खुद अपना खयाल रखना चाहिये। अुसे यह भी समझना चाहिये कि जो वच्चा पेट में है अुसे माँ की हड्डी और खून से पोषण मिलता है। अिसलिये माँ नौ महीने तक अपने आपका खयाल रखती है। वह अपना भी खयाल रखती है और अपने वच्चे का भी, जिस तरह वह दो जानो की रक्षा करती है। अुसे अपने आपको छूत के रोगों से वचाये रखना चाहिये। अुनमे नियमितता और अच्छी आदते रहनी चाहिये। अुसे अैसी चीजें अिस्तेमाल करनी चाहिये, जिनसे अुसका स्वास्थ्य ठीक रहे और वच्चे का पूरा-पूरा पोषण हो। अुसे पूरा विश्राम और आराम करना चाहिये। ये सव वाते हों और अुचित खुराक रहे, तो वह भी वलवान होगी और वच्चा भी।

गर्भिणी स्त्री को रोजाना करीबन ३,००० कैलोरी मिलना चाहिये अिसलिअे अुसके आहार में सन्तुलित आहार के सभी आवश्यक तत्त्व रहने चाहिये। अुसे अपना रोज का भोजन, दाल भात और रोटी, नियमित और हिसाव से लेना चाहिये, ज्यादा नहीं। अुसे कुछ ताजे फल और सब्जियाँ जैसे गाजर, टमाटर, मूली, गन्ने का रस या संतरा (जहाँ मिलती हो) लेनी चाहिये और साथ में यदि सम्भव हो तो दूध

–२

घी मक्खन या पावभर दूध भी लेना चाहिये। युक्त प्रमाण मे आहार, नियमित व्यायाम और विश्राम अुसे सशक्त रखेगा, और तभी माँ वच्चे के जन्म का आनन्द भोग सकेगी। पर्याप्त पोपक भोजन न पाने से ज्यादातर गरीव स्त्रियाँ और पर्दानशीन औरतें व्यायाम और ताज़ी हवा के अभाव में पीली और शक्तिहीन हो जाती है और प्रायः अुनकी हड्डियाँ सिकुड़ जाती हैं। अैसी अवस्था मे अक्सर जच्चा और वच्चा दोनों को प्रसव काल मे जान का खतरा रहता है और कभी को अपनी जान से हाथ भी धो लेना पड़ता है। यदि माँ अिस वात को समझ ले और अुसके परिवार वालो को भी अिस खतरे का ज्ञान हो जाये तो हर साल अनगिनत माँ और वच्चे मौत के मुँह से वचाये जा सकते है। वीमार माँ का वच्चा भी कमजोर होता है और जन्म के समय वच गया तो साल भर के अन्दर ही दुनिया से कूच कर जाता है। हिन्दुस्तान में अैसे वालकों की मृत्यु-संख्या को देखकर आज दुनिया के सामने हमारा सिर नीचा है। हर डेढ या दो साल वाद माँ को अपने खून और हड्डियो से निर्माण किये हुअे वच्चे से हाथ धोना पड़ता है और खुद को भार सम जीवन विताना पड़ता है।

पूर्व वुनियादी शाला के साथ अेक आरोग्य केन्द्र रहना अनिवार्य है। अुसमें महँगी दवाअियाँ भले न हों लेकिन ग्राम-सेविका का होना आवश्यक है जो माताओं को वाल संगोपन और स्वास्थ्य-रक्षा का ज्ञान दे। जो शिक्षक या शिक्षिका गाँव में काम के लिअे जायें अुन्हें सामान्य रोगो के अिलाज की थोड़ी जानकारी होना आवश्यक है, लेकिन सन्तुलित आहार और सामान्य वीमारियों को रोकने का पूरा ज्ञान होना चाहिये। अिस प्रकार पूर्व वुनियादी शिक्षक या ग्राम-सेवक को अपने प्रत्यक्ष जीवन के द्वारा तथा वातचीत मे माता-पिताओ को अिस सम्वन्ध मे मदद देनी चाहिये।

वालक के स्वास्थ्य-निर्माण में जन्म के वाद के दो साल वहुत महत्त्वपूर्ण हैं। अिन दो सालों में यदि वह अच्छी तरह पनप गया तो अुसके आगे के विकास का काम आसान है। दो वर्प के वाद वालक वहुत-कुछ अपनी माँ से स्वतंत्र रहने लगता है, लेकिन भारतवर्ष के गरीव

घरो में ये दो-ढाओी साल बड़े खतरनाक होते है । शुरु में जब वह माँ के पेट मे था तो स्वस्थ अवस्था मे था । अुसका जीवन माँ के जीवन से बँधा था, अुससे परवरिश पाता था । अुसे कोओी चिन्ता न थी । जन्म के बाद अुसका जीवन स्वतंत्र हो गया, और वह स्वतंत्रता भी अचानक मिली । अब हर चीज के लिअे परिश्रम करना है, हर बात की आदत डालनी है, सर्दी-गर्मी बरदाश्त करनी है, खाने के लिअे परिश्रम करना है, अपरिचित दुनिया से परिचय प्राप्त करना है । जीवन में यह परिवर्तन अचानक आता है । बालक कितनी पीडा बरदाश्त करके, कितना लम्बा प्रवास करके आता है कि अुसका शरीर टूटा पडता है । वह आराम चाहता है । लेकिन हम अज्ञानी शिशु-जन्म के आनन्द मे माँ और शिशु दोनों को भूले रहते है ।

तब नया जीवन प्रारंभ होता है । अब तक बच्चे के लिअे कुदरती तौर से मुलायम स्थल और गरम वातावरण तैयार था, पर बाहर आते ही बिचारे को जमीन या चटाओी पर सुला दिया जाता है । अेक फटा-पुराना चीथडा लपेट दिया जाता है । पहले माँ घूमती फिरती थी तो अुसे स्वच्छ हवा भी मिलती थी पर अब तो धुआँ भरी अँधेरी कोठरी में पड़ा रहता है जहाँ न प्रकाश है न ताजी हवा । यदि माँ तन्दुरुस्त हुओी तो दूध भी नसीब होता है और यदि कमजोर और बीमार हुओी तो अुसे भगवान ही बचाता है । जहाँ-तहाँ से दूध लाया जाता है, गन्दे ढंग से अुबाला जाता है और अुसमें किसी भी चीथडे को भिगोकर अुसे चटा दिया जाता है जिससे बालक को दस्त लग जाते हैं । फिर यदि बच्चे ने दूध नही पिया तो भी किसी को अुसकी चिन्ता नही रहती । मरे भूखा । कोओी क्या करे ? पानी अुसे नही पिलाया जाता, भले अुसे जरूरत हो । क्योकि लोग समझते है कि अुससे अुसे जुकाम हो जायेगा । अिस तरह से अुसके छह माह गुजर जाते है । यदि माँ जानकार होती तो वह अपने बालक की हिफाजत अच्छी तरह रखती । माँ को यदि दूध नही आता, या काफी दूध नही आता तो बच्चे को क्या पिलाना चाहिये या खाना चाहिये यह माँ को जानना चाहिये । माँ को मालूम होना चाहिये कि बच्चे को ताजी और स्वच्छ हवा व प्रकाश चाहिये,

मुलायम और साफ कपड़े चाहिये जिससे वह नन्हा-सा जीव वीमारियों से वचा रहे। अुसके दूध का किस प्रकार अिन्तिज़ाम होना चाहिये, कितनी वार पिलाना चाहिये ताकि न अुसकी भूख मारी जाये, न अुसे वदहजमी हो, अुसे कैसे कपड़ो मे रखा जाना चाहिये कि अुसका कोमल शरीर सर्दी और गरमी से वचा रहे, अुसे कव नहलाना, कव सुलाना चाहिये, और अिस सवसे परे अुसे यह मालूम होना चाहिये कि वह वच्चे मे शुरू से, अच्छी आदतें कैसे डाले। जव वह अिन सव वातों पर भलीभाँति ध्यान् देगी और शुरू से वच्चे को अच्छी आदते डालेगी तो वे अुसके भावी समुचित विकास में सहायक होगी। आठ-नौ महीने वाद वालक वाहरी दुनिया मे दिलचस्पी लेने लगता है। यही अुसके दाँतों के निकलने का समय है और कमजोर होने का भी, क्योकि माँ का दूध भी घटने लगता है। यदि शरीर मे चूना (कैलशियम) या खून की कमी रहती है या पहले से पूरा खाना नहीं मिलता तो अैसी हालत में जीवन खतरे में रहता है। अुसकी पूरी देखभाल रखनी पड़ती है, अुसे वीमारी से वचाना पड़ता है जिससे अुसमे धीरे-धीरे शक्ति आ जाये।

अिस तरह जहाँ पहले दो साल मे वच्चा पनप गया तो वह स्वतंत्र होने लगता है। वह स्वयं चल सकता है, वोलने लगता है, अपने चारों ओर की चीजों और परिवार के लोगों को समझने और अुनका अनुकरण करने लगता है। यही समय है जव वाहरी वातावरण का अुसके जीवन पर प्रभाव पड़ने लगता है, और अिसलिअे वह अैसा होना चाहिये कि वह वालक के समुचित विकास के अनुकूल वन सके। यही से हमारा पूर्व-वुनियादी का वर्ग शुरू होता है, यही स्कूल के काम की शुरूआत है।

दो साल का वच्चा अभी माँ से ज्यादा हिला-मिला रहता है। शाला मे आता है परन्तु अधिक देर माँ से दूर रहना अुसे नहीं सुहाता। अुसे पहले माँ और घर की जुदाअी अखरती है। अिस अुम्र में वहुत ही कम अैसे वालक होते है जिन्हें शाला का वातावरण सुहाता है, सभी को अपने घरों की याद आती है। लेकिन अगर घर और शाला का वातावरण अेक-सा रहे, माँ-वाप और शिक्षक मे कोअी भेद न दिखाअी पड़े तो वच्चा तुरन्त ही नअी परिस्थिति में घुल-मिल जायेगा। अिसलिअे

पूर्व बुनियादी शिक्षक को शुरु से ही बच्चो के घर जाने और अुनके माता-पिताओं से घनिष्ठता बढाने मे बहुत-सा समय खर्च करना चाहिये और बीच-बीच में अुन बालको से भी हँसी-खेल करना चाहिये। अैसे कभी अुन माता-पिता को मदद भी करनी चाहिये जिससे वह बालक को अपने परिवार का अेक व्यक्ति जान पडने लगे। अिस प्रकार शाला अुसके घर का अंग बन जायेगी, माता-पिताओ मे भी शाला और शिक्षको के प्रति आत्मीयता का भाव पैदा होगा जिससे वे घर मे शिक्षा का वातावरण बनाने को तैयार होगे। अैसे वातावरण से बालक को अपने विकास के लिअे घर पर बहुत मदद मिलती है।

अब हमे शरीर के विकास के साथ बालक का सर्वांगीण विकास किस तरह होगा, अिसपर विचार करना है। अिसी अुम्र में हम अिन्द्रिय विकास और भाव प्रकाशन वगैरा की बाते करते है। सृजनात्मक जीवन की नीव यही पडती है जिससे बालक सम्पूर्ण विकास की ओर जाता है। हाथ-पैर चलाने की अिच्छा शुरु से रहती है, लेकिन ढाअी साल की अुम्र से वह अपने हाथ-पैर का अुपयोग बुद्धिपूर्वक करने को छटपटाता है। वह हमेशा जानने को अुत्सुक रहता है कि कोअी क्रिया क्यो और किसलिअे की जाती है। अुसका खेल ही अुसका काम है। अुसकी हलचले बतलाती है कि वह किसी काम मे लगा है, अुसके हाव-भाव बतलाते है कि अुसे कुछ सुयोजित काम करना है, लेकिन हम मां-बाप कितने समझते है अुसकी अुन योजनाओ को! अिसलिअे हम चिढ जाते है। अुसके काम मे रोड़ा बन जाते है। शिक्षक को जानना चाहिये कि बच्चा किस वक्त कौनसी क्रिया कर रहा है, बच्चा क्या करना चाहता है, दो-ढाअी वर्ष की अुम्र के बच्चे मे हम क्या [illegible] सकते है। कुशल शिक्षक चतुर मां की आंखो से देखता है। मां जब अपने घरके काम मे लगी हो तो बच्चा भी अुतना ही काम मे लगा रहना चाहता है और जहां अेक काम पूरा हुआ नहीं कि दूसरा लेने को अुत्सुक रहता है। तब वह मां धीरज के साथ काम बताती रहती है— 'कटोरी रख आ, थोडा पानी दे, कुर्सी पोछ, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]' और बच्चा भी अिसमें बड़प्पन महसूस करता है और [illegible]-[illegible] [illegible]-

दौड़ कर सारा काम करता है। कभी माँ के साथ रोटी बेलता है, तो कभी बर्तन माँजता है; कभी बाप के काम में हाथ डालता है। काम की दृष्टि से यह काम कुछ नहीं होता, लेकिन बच्चों के लिअे वह शिक्षा है, अुसकी सृजनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा देना है। अब अिस सृजनात्मक जीवन का विवेचन करना, अुसे सजीवता प्रदान करना और समझ-बूझ कर विकसित करने में सहायक बनना यह शिक्षक का काम है।

हमारे देहात का वातावरण अिस प्रवृत्तिमय जीवन का पोषक है। बच्चा सीधा निसर्ग के सम्पर्क में रहता है, वह अपने मां-बाप को खेत में काम करते हुअे गौर से देखता है, और अुनका अनुकरण करता है। लेकिन आज के देहाती प्रौढ़ों का जीवन अनुकरणीय नहीं है। अुनके काम, अुनके जीवन के स्वरूप को हमें बदलना है। अुन घरों को हमें अैसा बनाना है कि वे जीवन को शास्त्रीय दृष्टि से देखने लगें और वह दृष्टि बालक की सृजनात्मक शक्ति के विकास में बहुत सहायक होगी। शहर के बनिस्वत गाँव के बच्चे छोटी अुम्र में ज्यादा फुर्तीले, तल्लख और खुश-मिज़ाज होते है। लेकिन अुनकी अिस सहजबुद्धि को आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिलता, अिसलिअे वह बेकस बन जाती है। लेकिन यदि अुस बालक की समुचित सार-सँभाल की जाये, अुसे बीमारियों से बचाया जाये, अुसे साफ और स्वस्थ परिस्थितियों में रखा जाये, अुसके माँ-बापो को स्वास्थ्य-सफाअी के नियमों का ज्ञान हो और वे अपनी माता-पिता की जिम्मेदारी को समझते हों तो देहाती बालक की प्रगति की सीमा नहीं बाँधी जा सकती। अुनके हाथ तैयार है, अुनमें दिमाग डालना है, और वह शिक्षक का काम है।

जब हम शिक्षा की बात कहते है तो अुस वक्त हमारे विचार में बच्चे का सर्वांगीण विकास रहता है। आज देहात जिस तरह अेक प्रकार के कूड़े-कर्कट का घर माना जाता है अुसी तरह देहाती जीवन भी रूढि-मूढ़ता, आलस्य आदि बुरे गुण रूपी कूड़े से भरा है। और अुसका खराब असर हमारे बच्चों पर पड़ता है। अिसलिअे हम जिस शिक्षा की तजवीज करें, अुसमें सद्गुणों के विकास और दुर्गुणो के दमन पर विशेष जोर दिया जाना चाहिये। बालकों को सदा काम में लगा रहना

सीखना चाहिये। यदि बालक अपनी अुम्र के पहले बारह सालों में बुरी आदतों से बचा लिये गये और अुन्हें सद्गुणों की कीमत करना आ गया तो अुनमें बहुतेरे दरअसल अुत्तम कोटि के नागरिक होंगे। वे ही बाद के जीवन में अपने गाँव की जिम्मेदारी ले लेंगे और अपने माता-पिताओं को शिक्षा देंगे। गुण-विकास के लिअे मुख्य बात है आदत। जब किसी चीज़ की आदत हो जाती है तो वह स्वभाव में दाखिल हो जाती है। यानी हमारा स्वभाव आदत से बनता है। ये आदतें बचपन में बनती हैं और अेक दफा आदत पड़ जाने पर छोड़ने में कठिनाअी होती है। अिसीलिअे अकसर कहा जाता है कि आदतें जीवन-संगिनी होती हैं। अिसलिअे मानस-शास्त्र में आदत और परिस्थिति या परवरिश वंशानुगत गुणों के मुकाबले की मानी जाती है। यहां मामूली व्यावहारिक बाल-मनोविज्ञान की दृष्टि से दो-चार बातें कहना ज़रूरी है।

८

बालकों के गुण-विकास-सम्बन्धी मनोविज्ञान की कुछ छोटी-मोटी बातें

यह तो पहले बता दिया गया है कि गुण-विकास के लिये बालकों को अच्छी आदतें डालना ज़रूरी है। जैसे नहाने-धोने, खाने-पीने, सोने-बैठने, साफ-सफाओी वगैरा की नियमितता शारीरिक विकास में सहायक होती है तथा अुसे निरोग रखती है। अुसी तरह यदि हम अुसे सयंमी बनाये तो अुसका मानसिक विकास होता है। बच्चो का जीवन भावना-प्रधान होता है। अिसलिये कभी-कभी असयम के कारण वह अधीर और हठीला हो जाता है। हमें बालकको अैसी तालीम देनी है कि अुसकी भावनाअें नियत्रण में आकर अनुकूल दिशा में ढल जायें। यदि शिक्षक बालक के सामान्य-विकास मे किसी तरह की गड़बड़ी किये बिना आत्मसंयम की आदत डालना जानता है और यदि वह बालक को आत्म-सयम सिखाकर समाज के अनुकुल बना सकता है, तो वह देखेगा कि धीरे-धीरे अुस बालक का जीवन गभीर और सयम पूर्ण बन जायेगा और आगे चलकर वह चरित्रवान, समझदार और जिम्मेदार नागरिक होगा।

हम बच्चो में छोटी-मोटी बातों के द्वारा आत्म-सयम पैदा कर सकते है, जैसे प्रार्थना पूरी न हो तब तक ग्रास न लेना, पानी परोसा जाने पर अपनी बारी आने तक रुकना, वगैरा। शिक्षा काल की आदतों द्वारा ही बच्चा आगे चलकर चरित्रवान, समझदार और जिम्मेदार नागरिक बन सकता है। अिस कोमल अुम्र मे आदत डालने का काम प्यार से ही हो सकता है। डर दिखाने या डाँटने से काम नही होता।

जिससे बालक के मन पर बोझ पडता है, अुसका मानसिक आरोग्य नष्ट हो जाता है। सफाअी की आदतें शरीर के आरोग्य के अनुकूल होती है। लेकिन अुनका असर मन पर भी पडता है। चित्त प्रसन्न रहता है। नियमित जीवन मानसिक आरोग्य के लिये लाभदायी है। अुससे जीवन सफल होता है और शिक्षा आसान हो जाती है। अिसका मतलब यह नही कि जीवन यत्र के समान हो जाये। परन्तु फिर भी, व्यवस्थित जीवन तो जरूरी है ही। अुसमें अपना भी हित है, और दूसरों का भी। अुससे चरित्र का विकास होता है।

जैसे नियमित जीवन आवश्यक है, वैसे ही प्रवृत्तिमय जीवन भी; अिसलिये प्रवृत्ति-परायणता की आदत भी बचपन से ही शुरू होनी चाहिये। छुटपन से ही अगर बच्चे को अुपयोगी काम करने की आदत पड़ जाये, यदि वह हमेशा अपने हाथ और दिमाग का अुपयोग करता रहे, और अुसकी अिन अुपयोगी प्रवृत्तियो के लिये गुंजाअिश रहे तो वह सदा कर्मरत रहेगा और कभी भी शरीर-श्रम से नहीं डरेगा, क्योंकि शरीर-श्रम से शक्ति बढती है। वह अेक सयमी, स्वाभिमानी व्यक्ति होगा जो समाज पर बोझ नही बनेगा बल्कि समाज को योग देगा। बालक अपने वातावरण से धीरे-धीरे कअी बातें ग्रहण करता है और प्रवृत्तिमय वातावरण अुसे काम करने की प्रेरणा प्रदान करता है। काम करने की आदत, और वह भी अुपयोगी काम की, बालक मे अुत्साह पैदा करती है अुसे तेज देती है, और अकर्मण्यता जीवन को नष्ट कर देती है। वह मनुष्य को निस्तेज, सुस्त और निरुपयोगी बना देती है जिससे वह समाज पर बोझ बन जाता है।

आज्ञापालन दूसरा महत्त्वपूर्ण गुण है। बालकों को आज्ञापालन की तालीम हम किस प्रकार दे सकते हैं? अिस स्वतंत्रता के युग में किसी पर दबाव नही डाला जा सकता। अैसी हालत में बच्चों को आज्ञापालन-का कर्तव्य किस तरह सिखाया जाये अिस पर विचार करना जरूरी है। हम देखते और सुनते हैं कि आज के बालक कुछ साल पहले के बालकों से ज्यादा सूझ-बूझ रखते हैं। यह परिस्थितियों का परिणाम है। प्रगति का चिह्न है। लेकिन जिसने अेक निश्चय के लिये [illegible]

लादना और भी कठिन हो जाता है। वालक की दुनिया पहले से वहुत वड़ी हो गयी है। वह घटनाओं के महत्व को समझता है और अुनका अपने ढंग से प्रतिकार करना चाहता है। अिसलिअे वह अधिक स्वच्छंदी जान पड़ता है। वड़ों ने भी समझ लिया है कि अुन्हें वालक पर अपनी अिच्छा नही लादनी है।

जवरदस्ती आज्ञा का पालन कराना वच्चे के जीवन को नष्ट कर देता है। वड़ो मे हुकूमत की आदत होती है। शुरू मे भले डर के कारण वालक आज्ञा माने लेकिन वाद मे अुसमे जवरदस्ती के प्रति विद्रोह की भावना अुठती है, और वह जिद्दी, छली या शरारती वन जाता है।

दूसरी ओर वालक को पूरी स्वतंत्रता देने के प्रश्न पर अनावश्यक जोर दिया जा सकता है। जैसे विवशता पूर्वक किया हुआ अस्वाभाविक आज्ञा-पालन वालकके लिअे अहितकर है वैसे ही अस्वाभाविक स्वतंत्रता भी अुस जीवन को नष्ट कर सकती है। यदि वालक मनमाना चलने लगे और यदि हम 'कुदरत की ओर' पद्धति मे मानते हों तो स्वतंत्रता स्वच्छंदता वन जाती है। हमने कअी गरीव और अमीर घरों के वालक के मनमानी करने की स्वतंत्रता के परिणाम देखे है। अुससे वालक के घर की ही शान्ति नष्ट नही होती, वल्कि वह सामाजिक-जीवन को भी अशान्त कर देता है। क्योंकि आज के वालक को रूसो के वातावरण की स्वतन्त्रता नहीं मिलती। आज तो वाहरी शक्तियां अितनी प्रवल हैं कि वालक अुनसे प्रभावित हुअे विना नहीं रह सकता। यदि विवशतापूर्वक किया हुआ आज्ञापालन अुसे यंत्र वना देता है तो आज के समाज में गलत स्वतंत्रता अुसे स्वेच्छाचारी वना देती है। अिसलिअे स्वेच्छापूर्वक समझ-वूझ के साथ किस प्रकार आज्ञा का पालन कराया जाये अुसके लिअे नियम और छोटी-मोटी वातें ध्यान में रखना आवश्यक है।

आज्ञा-पालन स्वाभाविक होना चाहिये। आज्ञापालन की आदत डालनी हो तो वड़ों को, चाहे माँ हो, वाप हो या शिक्षक हो, अपना आचरण और जीवन आदर्श और श्रद्धापात्र वनाना चाहिये। वच्चे के

मन में अुनके आचरण और काम के प्रति श्रद्धा पैदा होनी चाहिये। बच्चे से करने को तो हम कुछ कहें और खुद कुछ करें तो अुनके हृदय से अुसका विश्वास हट जाता है। बालक जब बड़ों में किसी आदर्श को देखता है और अुसे अपने आसपास के वातावरण में घुला हुआ पाता है तो सहज ही वह अुस ओर प्रवृत्त होता है और आज्ञाकारी बन जाता है, श्रद्धा रखने लगता है।

यह भी सच है कि हम बालक से हर वक्त आज्ञापालन की अपेक्षा नहीं कर सकते। कअी बार अैसा होता है कि बालक हमारी आज्ञा को गंभीरतापूर्वक नहीं लेता और अुसकी अवहेलना करता दिखायी देता है। अुसके अिस तरह अवहेलना करने का और भी कोअी कारण हो सकता है। तब हममें अुसके अुस आचरण का कारण समझने की योग्यता होनी चाहिये। वह थका हो, अुसकी तबीयत अुदास हो जिससे अुसे काम की अिच्छा न हो, या हमारी बात अुसके समझ में न आयी हो, या अुसका ध्यान किसी और जगह लगा हुआ हो। हममें स्थिति को परखने की शक्ति होनी चाहिये। बच्चे को आज्ञा पालन सिखाना आसान है मगर शुरू से अुसका अुचित मार्ग-दर्शन होना आवश्यक है। शिक्षा का सही तरीका और सहज नियमित वातावरण आसानी से आज्ञापालन की आदत डाल देता है। हम कोअी बात कहें तो बच्चा अुसे समझकर करे। हमारे कहने का ढंग शान्तिपूर्वक मीठा और स्पष्ट हो ताकि बच्चा [illegible] [illegible] करने को प्रवृत हो जाये। आदत पड़ने पर आज्ञा पालन सहज ही सम्भव हो जाता है।

खेल से बालक का जितना व्यक्तित्व प्रकट होता है अुतना किसी से नहीं होता। खेल से पता चलता है कि बालक में कितनी विशिष्टतायें भरी हुअी हैं। कुछ गुण तो अैसे होते हैं जैसे दुष्टता [illegible] वगैरा, जो बालक जैसे-जैसे बढ़ता जाता है वैसे-वैसे [illegible] होते हैं, लेकिन फिर भी वातावरण और संशोधन अुनके [illegible] [illegible] में [illegible] होता है। अिस लिये घर हो या शाला, अुनमें वातावरण अैसा होना चाहिये कि वह बालक के अनुवंशिक गुण, सृजनात्मक प्रवृत्ति और [illegible] को बढ़ाने में सहायक हो।

खेल बच्चो के आत्म-प्रकाशन के साधन है अिसलिये हमें अुनमें अुनकी मदद करनी चाहिये। हमे अुन्हें अैसे खेल खिलाने चाहियें जिनसे अुनमे सामाजिक जीवन के साथ चलने की भावना पैदा हो। लेकिन हम मदद करे अिसका मतलब यह नही कि हम जैसा चाहें वैसा ही बच्चे खेले। बच्चे को साधन के चुनाव और अुसके सही-सही अुपयोग के सम्बन्ध मे मार्ग-दर्शन चाहिये। हम जो साधन दे वह सृजनशक्ति को बढाने वाला हो, व्यक्तित्व का प्रदर्शन करने योग्य हो, बालक के सर्वांगीण विकास में सहायक हो। जीवन से सम्बन्धित अिर्द-गिर्द के वातावरण से मिलते हुये हों। वे महँगे नही, बल्कि अितने सस्ते और सादे हों कि अुनका कअी तरह से अुपयोग किया जा सके, जिससे वे बालक की कल्पना शक्ति को अुत्तेजित करने में सहायक बन सके। अेक संपूर्ण बने-बनाये घर की अपेक्षा घर बनाने की सामग्री का सादा-सा पुलिन्दा ज्यादा कीमती है। खेल के साधन सुरुचिपूर्ण होने चाहिअे जिससे सौंदर्य-बोध बढ़े और सांस्कृतिक विकास हो।

बच्चों को सादे, साफ-सुथरे किन्तु सुहावने कपड़े पसन्द होते है। वे सजना पसन्द करते है लेकिन वे अिसका ध्यान नहीं रखते कि अुन्हें सजाने वाली चीजे कीमती ही हों। रंग-बिरंगी फूल-पत्तियों को देखकर वे आनन्दित होते है, नाचने और गाने से अुनका मन खिल जाता है। अुत्सव अुनके जीवन का आनन्द है। अिन बातोंको वे खेल के द्वारा प्रकट करते है। रेत, मिट्टी, पानी, पत्ते, कंकड़ वगैरा, यहाँ तक कि आकाश, बरसात, बादल अुसके मन को बाग-बाग कर देते है, अुसमे सृजन शक्ति बढ़ाते है, भाव-प्रकाशन आदि अनेक कल्पपूर्ण गुणों को प्रकट करते है। अुनके खेल अुनके भावी सामुदायिक और सांस्कृतिक जीवन की नीव है। ढ़ोलक या घुंघरू की आवाज सुनकर बच्चा नाचने लगता है। गाना सुनना पसन्द करता है और स्वयं अनुकरण करता है। चित्र खीचना, रंग भरना, माला बनाना आदि सभी काम अुसे अच्छे लगते हैं। अिन्ही प्रवृत्तियों को सामने रखकर हमें पूर्व बुनियादी शाला के साधन जुटाने है। अुसमें वास्तविक जीवन और स्वाभाविक प्रवृत्ति के ज्ञान की दृष्टि से ही काम करना चाहिये।

६

पूर्व वुनियादी शाला की साधन-सामग्री

पूर्व वुनियादी वर्ग मे गिक्षण के सावनो की आवश्यकता [illegible] है, लेकिन वे साधन बच्चो के प्रत्यक्ष जीवन की परिस्थिति से लिये जाने चाहिये । वे साधन शिक्षणात्मक, सृजक शक्ति के सहायक और व्यक्तित्व का विकास करनेवाले होने चाहिये । देहाती बच्चा तो अपना शिक्षक आप ही वनता है । वह निरीक्षण करता है, अनुकरण करता है और सीखता है । पेड़-पत्ती, कीचड-मिट्टी धूल-कंकड़ सभी चीजें असके खेल और शिक्षा के साधन है । श्रीमती आशादेवी ने अेक दफा ठीक कहा था कि बच्चे की जेब मे कअी चीजे रहती हैं जो हमारी दृष्टि मे निकम्मी है परन्तु वही असके सर्वांगीण विकास मे सहायक होती है ।

पूर्व वुनियादी का शिक्षक जब किसी देहात मे जाकर शाला का प्रबन्ध करता है तो असके सामने पहला सवाल आता है साधनो का । साधन कैसे जुटाये जायँ ? कहाँ से लाये जायें ? कौन से साधन शाला मे रखने लायक है और कौन से नही ? हमारा सामान बाजार से बना-बनाया नही मिलता । हमें अपने देहात में ही तैयार करना होता है । वह विना विशेष खर्च का, किन्तु अैसा होना चाहिये कि असमे बालक का सौंदर्य-बोध बढ सके । शिक्षक बच्चे के गिर्द-गिर्द की वास्त-विकता को नही भूल सकता । जो भी साधन वह जुटाता या तैयार करता है, असले शाला में कृत्रिम वातावरण नही बनना चाहिये ।

साधन आसपास की प्रकृति से, घर से और गाँव में से या अैसी जगहो से जिनसे बालक का परिचय हो, जुटाये जाने चाहिये । साधनों

के अुपयोग से वालक का ज्ञान वढ़ना चाहिये। अुन साधनों से अुसकी सृजन-शक्ति का विकास होना चाहिये। अुनसे अुसकी जिज्ञासा और कल्पना शक्ति वढ़नी चाहिये, अुससे अुसमें अन्वेषण शक्ति और अपने विचार गढ़ने की शक्ति पैदा होनी चाहिये। अिससे अुसे आनन्द और आत्म-प्रकाशन के लिअे क्षेत्र मिलेगा। साधनों के सम्बन्ध में अूपर जो सुझाव रखे गये है वे अैसे है कि गरीव और अमीर सभी वच्चो को आनंद मिल सकता है और साथ ही अुससे शिक्षा भी मिल सकेगी।

हमने देखा कि साधनों के द्वारा वालकके जन्मजात गुणों का विकास होना चाहिये और वे अुसके अिर्दगिर्द से ही अुपलब्ध किये जाने चाहिये। अिसलिअे पूर्व वुनियादी का पाठ्यक्रम स्वाभाविक तौर से पाँच भागों में बाँटा गया है.— स्वास्थ्य-सफाअी, भोजन, पानी, दस्तकारी और वागवानी। ये सव खेल-से ही हैं। दाँतून, कंघी, तेल, रीठा, सफेद मिट्टी या केले की राख, सभी शरीर और कपड़े की सफाअी के लिअे अुपयोगी है। पहले हमें निजी सफ़ाअी करनी है: कपड़े और शरीर की सफाअी; अुसके वाद शाला की सफाअी आती है। शाला-सफाअी के साधन चाहिये: झाड़ू, टोकरी, वाल्टी आदि। ये सव स्थानीय होने चाहियें। अिनके आकार वच्चो की सहूलियत के अनुसार हों। अुन्हें स्वयं अुपयोग करना सिखाया जाये। पीने का पानी किस तरह से साफ रखा जाता है, यह वालको को देखना और जानना चाहिये, अिसलिअे पीने के पानी की हिफाज़त शिक्षक और वच्चे मिलकर करें। भोजन हम शाला में नही दे सकेंगे, लेकिन फिर भी अुन्हें और अुनके माता-पिताओं को नियमित और सन्तुलित भोजन करने की जानकारी देना ज़रूरी है तथा साथ ही यह भी सिखाना है कि देहात में जो भी चीजें अुपलब्ध हैं अुनका ज्यादा से ज्यादा अुपयोग कैसे किया जाये, अुन्हें किस सिलसिले से लिया जाये। देहात मे वच्चों को ऋतु के अनुसार सस्ती और ताजी साग-सब्ज़ी और फल आसानी से मिल जाते हैं, लेकिन वे खाने का तरीका और परिमाण नही जानते और पालकों को यह नही मालूम रहता कि अुन्हें अुन फलों और साग-सब्जियोंको पैदा

करना चाहिये । देहातियो के लिअे अिसका ज्ञान अत्यन्त जरूरी है । अिसलिअे यदि वालक अपने घर से कुछ ला सके तो हम अुन्हे कैसे वैठना, कैसे प्रार्थना कहना, कैसे खाना सिखा सकते है। यह प्रत्यक्ष सवक होगा । यदि शाला मे प्रवन्ध किया जा सकता हो तो नाश्ता या अेक वक्त का भोजन या दूध वच्चो को देना वहुत ही अच्छा है, क्योकि वह वहुत ज़रूरी है ।

जैसे सफाअी और भोजन के साधन चाहिये वैसे ही काम के भी साधन है । लेकिन वच्चा काम और खेल को अलग-अलग नही समझता। वह वडो की तरह काम तो नही करता, खेलता है । लेकिन खेल ही अुसका काम है क्योकि अुसके खेल का कुछ अुद्देश्य रहता है । वह अपने घर या अड़ोस-पडोस में जो कुछ होते देखता है अुसी की नकल करता है । वह वहुत-सी वाते जानना चाहता है और अपने आपको कुछ मान लेता है । जैसे, वह वढअी को कुछ काम करते देखता है, वह वढअी वन जाता है, कुछ काटता है, वनाता है, विठाता है । कुछ तौलता है, कपास साफ करता है, ओटता है, तकली चलाता है, मिट्टी के वरतन-खिलौने वनाता है, रग भरता है, धोता है, गिनता है, सजाता है, सुअी पिरोता है, सीता है । ये सव काम वच्चे के वातावरण से और अुसके जीवन से सम्वन्धित है। अिसलिये हमारे साधन अिसी जगह से अुपलव्ध किये जाने चाहिये । अिनमे कोअी चीज ज्यादा कीमतवाली या वाहर की न हो । ये सव चीजे देहात के जीवन में रोज के काम मे आनेवाली हों । तराजू वॉस की वन सकती है । वॉस के छोटे-छोटे टुकड़े रगकर भाला वना सकते है, वॉस के टुकड़ो से घर जमाने के व्लॉक वना सकते है, टोकरी और चटाअी वना सकते है, झाडू वन सकती है । मिट्टी से कअी सुन्दर-सुन्दर आकार और रग की चीजें वन सकती है । खपरैल के टुकड़े मे वाँस की डण्डी लगाकर तकली वनायी जा सकती है । अुसमे गति न होने से सूत वारीक निकलता है । चार वर्ष का वालक यदि ठीक से तालीम दी जाये तो विनौले निकाल

सकता है, कुछ कात भी सकता है, खिलौने वना सकता है, चित्र निकाल सकता है, रंग भर सकता है और कओी छोटे-मोटे काम कर सकता है।

वगीचे का काम, पानी लानेका काम, सीचने का काम, मिट्टी खोदने का काम वच्चो को वहुत प्यारा होता है। अिसलिये हमारे सावन अुनके अनुकूल होने चाहिये।

वच्चा खाना वनाना, वरतन माँजना, कपड़े धोना पसन्द करता है अिसलिये कभी-कभी अैसे कामों के लिये मौका दिया जाना चाहिये और अिसलिये अुसके अनुकूल छोटासा रसोअी घर और धोने की व्यवस्था होनी चाहिये। अभी हम सिर्फ सावनों के वारेमें सोच रहे है। अिसमे यदि माँ-वाप का सहयोग मिले तो हम सारी तजवीज विना विशेष कष्ट के कर सकेंगे; अिसलिअे हमे अुनसे सहयोग प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिये। शाला मे वच्चे को कपड़े अुतारना, खोलना, वाँधना, धोना, सुखाना, तह करके रखना, पहनना आना चाहिये; अिसलिये वहाँ वैसी गुंजायश होना जरूरी है। चरका पाखाना और पेशाव घर भी होना चाहिये जिससे वच्चे संयुक्त खाद वनाने की प्रक्रिया देख सके। अिन तरीकों को समय-समय पर माँ-वाप भी देखेंगे और अुन्हे भी सीखने को मिलेगा। खेल के लिये सीढी, झूला फिसलनी भी जरूरी है। यदि ये शाला मे रखे जा सकें तो वच्चे के लिये वहुत अुपयोगी है। यदि नही हो सकें तो दूसरे कओी खेल भी वच्चे को सिखाये जा सकते है।

हमारी शाला मे जो भी सावन हो, शिक्षक को अितना याद रखना चाहिये कि वच्चा जव अुनका अुपयोग करे तो ठीक तरह से करे। सावन यदि कम हों या न हों तो अुससे वच्चो की शिक्षा रुकने वाली नही है। हमारा लक्ष्य सावन पैदा करना है, लेकिन वच्चो के घरों से सम्पर्क स्थापित करना सावन जुटाने से भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। सावन किसी भी तरह जुट जायेंगे। यदि हम वच्चो को निजी सफाअी की नियमित और सही आदत डाल दें, वे दांतून करे, नहाये, कघी करे, कपड़े साफ पहनें वगैरा, तो काफी है। सवके साथ हिल-

स्कूल में—कपड़ा वनाने के लिये पहली-क्रियाओंमे से अेक-ओटाओी करके कपास मे से विनौला निकालना। यह काम खेल भी है और वच्चे अिसमें प्रवीण वन जाते है।

स्कूल में—कचरे का लोग क्या करते है ? दीवाल परसे वाहर फेंक देते है। लेकिन नही, कचरे का भी अुत्तम खाद वन सकता है—यदि अुसे अुचित ढग से गाड़कर ढाँक दिया जाय।

स्कूल में—कातने की क्रिया में मन की अेकाग्रता, अिच्छा-शक्ति और स्नायुओं का अच्छा समन्वय हो जाता है। सब से बड़ी प्रेरणा तो अिस बात से मिलती है कि हम अैसी चीज़ बना रहे हैं, जो वास्तव में अुपयोगी है।

स्कूल में—साफ कपड़े पहनने चाहिये। साबुन से कपड़े साफ करना भी अेक आनन्द की बात है और स्वास्थ्य के काम का अेक अंग है।

मिलकर गाने और रट लेनेको प्रोत्साहन देना चाहिये। सार-सभाल और बुद्धि मे शुरू में देहाती बच्चे शहरी बच्चो से ज्यादा चतुर और तेज होते हैं। अिसलिये हमे अुन्हे शुरू से ही हाथ मे लेना चाहिये।

यदि शिक्षक साधनो पर ही निर्भर रहता है तो साधन ही मुख्य स्थान ले लेता है। बच्चे के लिअे साधन बनने के बजाय साधनो के लिअे बच्चा बन जाता है। बच्चो की जरूरत के साधन जुटाने मे ही शिक्षक की कुशलता है। अिस अवस्था मे शिक्षक ही बच्चे का सर्वस्व है। वह माता, पिता, मित्र, बन्धु, सहायक और सेवक सभी कुछ है, अिसलिअे अुसे अपनी जिम्मेदारी भली भाँति समझकर चलना है। पूर्व-बुनियादी बाल-घरो में बच्चों की शिक्षा में साधनों की अपेक्षा शिक्षक की कार्य-कुशलता को ही ज्यादा महत्त्व है।

कार्य-पद्धति और साधनोंका अुपयोग

अिस शाला में वर्ग-व्यवस्था, समय-पत्रक, साधनों का अुपयोग कैसा हो, यही प्रश्न अब बाकी रह जाता है। ढाअी साल से लेकर सात साल तक के बच्चे पूर्व बुनियादी मे होंगे। अुनके दो विभाग होंगे। चार से कम अुम्र के बच्चे अेकाकी-स्वभाव-के होते है, अुन्हे अकेले-अकेले काम करना अच्छा लगता है। वे भले दूसरे बच्चो के साथ खेल ले, लेकिन समुदाय मे काम करना अुन्हें नहीं सुहाता। अिन बच्चों के लिअे शिक्षक कोअी निश्चित कार्यक्रम नही रख सकता। अुन्हें खुला रखना चाहिये, हाँ वर्ग का वातावरण और व्यवस्था अैसी होनी चाहिये कि अुससे बच्चों को अपने आसपास की चीजों में दिलचस्पी पैदा हो। अिसमें अपवाद अवश्य होते है। कोअी बच्चा किसी चीज के आकर्षण और आसपास के प्रभाव के कारण किसी काम में अधिक समय तक लगा रह सकता है। अिसलिअे बच्चोंको कोअी काम करने की, घूमने-फिरने की और अपना काम चुनने की पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिये। शिक्षक को बालक के आसपास की चीजें और साधनो की जमावट के सम्बन्ध में बहुत सावधान रहना चाहिये। वर्ग का सारा वातावरण अैसा होना चाहिये कि बालक जो भी काम करना चाहे, वह अुसे सही और आसानी से कर सके। जमाये हुअे हर साधन का अुद्देश्य अितना साफ होना चाहिये कि जिस अुद्देश्य से वह रखा गया है अुससे विपरीत बालक जा ही न सके। अिससे बालक की आत्म-प्रकाशन शक्ति खिलती है।

मान लीजिये कि अेक बालक छोटे से टमरेल से पानी पीना चाहता है तो अुसे पानी पीकर अुस टमरेल को मांजना चाहिये। यदि

वह किसी बरतन में पानी लेता है तो अुस पानी को अिधर-अुधर न फेंक कर किसी पौधे को देना चाहिये। यदि वह फेंकता है तो वह विनाशक प्रवृत्ति हुअी। यदि वह पानी से खेलना चाहता है तो अुसके लिये कुछ अलग व्यवस्था होनी चाहिये।

वर्ग की जगह चाहे खुली ही क्यों न हो, काफी लम्बी-चौडी और साफ-सुथरी होनी चाहिये। अुसका प्रमाण बच्चों की संख्या पर निर्भर है, लेकिन वह अैसा होना चाहिये कि अुसमें सब बच्चे आसानी से घूम-फिर सकें। हरेक साधन साफ-स्वच्छ और व्यवस्थित रूप में रखा जाना चाहिये। अेक जगह बहुत-सी चीजें नहीं रखनी चाहिये। जमावट सुयोजित होनी चाहिये। यदि हम चाहते है कि बच्चा अिस चीज से खेले तो अुस चीज को अितनी अच्छी तरह रखना चाहिये कि बच्चा देखते ही अुसे अुठा ले। बस अितना होने पर हमें सिर्फ अुस चीज से किस प्रकार खेलना यह बतलाना होगा। हमे सिर्फ अितना खयाल रखना है कि बालक को अुस चीज के प्रति आकर्षण है। वह अुसी चीज से खेलता है जिसे वह चाहता है। किसी भी चीज से खेलने के लिये अुसे विवश नही किया जाना चाहिये। वहाँ कोअी चीज अैसी न हो जो बच्चे के अुपयोग की न हो, या अुसके चलने-फिरने में बाधा डालती हो। चीजें अैसी जगह रखी जाये कि बच्चे को लेने मे दिक्कत न हो, किसी से माँगना न पडे। वे अुसके आसपास की और अिस ढग की हों कि देखते ही बच्चे को पता लग जाये कि अमुक वस्तु का अमुक-अमुक अुपयोग है, और अुसके अनुरूप ही वह काम करने लगे।

शिक्षक का काम सिर्फ अितना है कि वह बच्चों को चीजो के अुपयोग का ठीक तरीका बताये। अेक-दो बार बताने पर बच्चा खुद अुसे दोहराने लगता है। वही अुसकी शिक्षा है। शिक्षक को हमेशा सतर्क रहना चाहिये कि बच्चा किसी चीज का दुरुपयोग न करे। वह किसी की चीज को बिना रोक-टोक के ले, खेले और फिर यथा-स्थान रख दे, अैसी आदत डालनी चाहिये। किसी चीज को अुठा कर फेंकना और जहाँ-तहाँ छोड़कर चले जाना बुरी आदत है। यह विध्वंसक प्रवृत्ति है। शिक्षक को शान्ति से लेकिन दृढ़ता पूर्वक चीजो के ठीक अुपयोग

का तरीका बताना चाहिये और अपयोग करने की आदत डालनी चाहिये ।

चार से अूपर की अुम्रवाले बच्चे थोड़ा नियमित काम कर सकते हैं । शाला की सफाअी, बरतन सफाअी, बागवानी, नाप-तौल, कपास-ओटाअी, चित्र-काम, मिट्टी-काम आदि आसानी से कर सकते हैं । अुनकी हैसियत के मुताबिक शिक्षक अुन्हे थोड़ा-थोड़ा काम दे तो वे बड़ी खुशी से और जिम्मेदारी के साथ कर सकते हैं । अुनमें भी काम के निरीक्षण के लिअे टोली-नायक बनाया जा सकता है । अेक बार जहाँ आदत हो गअी और बच्चे ने काम का तरीका समझ लिया तो शिक्षा के लिअे बहुत कम काम रह जाता है । लेकिन सिर्फ काम लेना या करवाना ही शिक्षण का अुद्देश्य नही है । काम करते-करते शिक्षक को देखना चाहिये कि बच्चे को अपने काम मे आनन्द आये, अैसा अवसर मिले जिससे अुसके सहज गुणों का विकास हो । कभी-कभी अैसा देखा जाता है कि बच्चा अूब कर काम छोड़ कर चला जाता है । तब भी शिक्षक को सोचना होगा कि बच्चे ने अैसा क्यों किया । कभी-कभी बच्चा किसी बात से अुत्तेजित रहता है, या कभी किसी काम में अुसका मन नहीं लगता, या कभी अुसका मन अुचाट रहता है और कोअी भी काम नही करना चाहता । अैसे वक्त मे शिक्षक को सावधानी के साथ कारण को खोज निकालना चाहिये और काम को बदल देना चाहिये । कभी वह काम करने का ढंग बालक की रुचि के अनुकूल बना कर भी अुस काम की ओर बालक को खींच सकता है ।

समय-पत्रक के बारे में तो हमें खूब सोचना है । दूसरी शालाओं में तो बच्चे निश्चित समय पर आते हैं और निश्चित समय पर चले भी जाते है । वहाँ समय-पत्रक बनाने में कुछ ही घण्टों का सवाल रहता है । लेकिन पूर्व बुनियादी शाला में तो घर शाला से जुड़ा रहता है, अिसलिअे अुसका घर का जीवन शाला के जीवन से सम-रस रहता है । जब हम शाला को सामाजिक केन्द्र और प्रौढ़-शिक्षा केन्द्र कहते है, तो हमारा समय-पत्रक १० से ५ तक का नहीं हो सकता, बल्कि सुबह से शाम तक का होता है । बच्चा सोकर अुठता है तब से

शिक्षक को वच्चे के घर पर अुसकी निजी सफाअी की, नहाने-धोने की, खाने-पीने वगैरह की देख-रेख रखनी चाहिये। अिसी समय शिक्षक माता-पिताओ को सफाअी, स्वास्थ्य, आहार वगैरह के वारे मे समझा सकता है। सवेरे से वच्चों के घरो को जाना जरूरी है। शहरो मे यह काम नही हो सकता, पर देहात मे आसानी से हो सकता है। अिससे हमारा घर-घर से परिचय होता है। यदि कोअी वच्चा वीमार है तो हम अुसके माँ-वाप को सार-सभाल मे मदद दे सकते है, अुन्हे ठीक ढंग से सार-सँभाल करना सिखा सकते है। अेक दिन हम सामूहिक शिक्षा का भी रख सकते है जिसमे गाँव के सभी लोग—छोटे-वड़े, गरीव-अमीर सभी भाग ले सकें। अिस काम में आघ या पौन घण्टे से अधिक समय देने की आवश्यकता नही। अिस काम में हमारा अुद्देश्य यही होना चाहिये कि ज्यादा से ज्यादा पालक अुसमे शरीक हो।

वाल वर्ग के वच्चे ८॥ वजे से १०॥ वजे तक स्कूल मे रहे। वे अपना यह समय पूर्वोक्त विविध प्रवृत्तियो मे खर्च कर सकते है। निजी सफाअी, जैसे, कघी करना, दाँत साफ करना, भी प्रत्यक्ष सवक वन सकता है। दो घण्टो का सतत काम में अुपयोग किया जाना चाहिये। वह काम अैसा होना चाहिये कि जिससे अुसके व्यक्तित्व का विकास हो और आन्तरिक शक्ति प्रकट हो तथा खिले। अेक वच्चा यदि स्कूल मे दो घण्टे रहता है तो अुस अवस्था में अुतना समय काफी है। शिक्षक को शेष समय वच्चे के घर का वातावरण वनाने मे लगाना चाहिये।

जव शाला मे काम शुरू होता है तव अुसके समय का वँटवारा वच्चो की अुम्र के मुताविक और वच्चा जैसा काम अपने खेल के लिअे पसन्द करता है अुसके अनुसार होना चाहिये। शिक्षक के लिअे अेक पाठ्यक्रम भी हो सकता है लेकिन काम वच्चे की जरूरतों को समझकर कराया जाना चाहिये। हमारे पास अितना समय है और अितना काम है, अिसलिअे अैसा समय पत्रक वनाया गया है, यह नहीं होना चाहिये। समय-पत्रक तो शिक्षक के मार्ग-दर्शन के लिअे है। अेक निश्चित अुम्र मे वच्चा कौनसा काम करना पसन्द करता है, अुसे किस काम की

आवश्यकता है, वैसा काम अुसे देना चाहिये। अुस काम के लिअे कोअी समय-मर्यादा रखने की आवश्यकता नहीं। समय-पत्रक में अदल-वदल होना जरूरी है, लेकिन अैसा न हो कि वह अदल-वदल वहुत जल्दी-जल्दी हो या फिर अेक ही पत्रक अितने लम्वे समय तक चलता रहे कि वह नित्य के कामं का स्वरूप ले ले। समय-पत्रक वनाते समय निम्नलिखित वातें ध्यान में रखनी चाहिये; मौसम, वह देहाती हालतो के अनुकूल हो, अुससे वच्चे की सामाजिक-धार्मिक सहज भावनाओं का निर्वाह हो। यदि अैसा न हुआ तो शाला के जीवन और गाँव के जीवन में मेल नहीं वैठेगा। और हमारी शाला तो सामाजिक-केन्द्र ठहरी अिसलिअे वह गाँव से प्रतिकूल नही जा सकती। देहाती शाला की हाजरी मौसम के अनुसार वदलती रहती है। अिस वात की ओर अेक शिक्षक दुर्लक्ष्य नही कर सकता।

साधनों का अुपयोग हर क्रिया से सम्वन्वित है, जैसे दाँतून का दाँत साफ करने के लिअे अुपयोग किया जाता है, सावुन कपड़े धोनें, हाथ धोने के काम आता है, झाडू झाड़ने के लिअे वरती जाती है, वगैरा। अगर वच्चा दाँत साफ करके आता तो फिर दाँतून का क्या काम रहेगा? अिसका अुत्तर यह है कि दाँत साफ करना अलग वात है और दाँत किस तरह साफ किया जाता है यह सिखाना अलग वात है। घर में माँ को अितना समय कहाँ कि वह वच्चे को दाँतून करना सिखाये, या नहाना सिखाये; कभी-कभी तो वह खुद भी नही जानती। वच्चे को अपने रोज-मर्रा के काम जैसे दाँतून करना, कंघी करना, कपड़े धोना वगैरा का सही-सही ज्ञान होना चाहिये। स्वास्थ्य के अिन नियमों की आवश्यक जानकारी तत्सम्वन्वी काम के साथ दी जानी चाहिये। वच्चे को अपने शाला के समय में प्रत्यक्ष करने और देखने की आदत डालनी चाहिये। हम जानते हैं कि अूपर दी हुअी सभी क्रियायें घर-घर होती हैं, लेकिन फिर भी कितने अैसे माता-पिता हैं जो अिन्हें सही तरीके से करना जानते है? कपड़े धोने के शास्त्र से सभी अनभिज्ञ है, लड़कियों के सिर से जूँ कभी टूटती ही नहीं; खुजली और दाद अुनके घर भी दिखाअी पड़ती है जो रोजाना स्नान करते हैं। वच्चे यदि वचपन सें अिन चीजो को सही तरीके से करना सीख जायें, और अपने अुस ज्ञान को घर ले जायँ

तो अुससे अुनकी भी तरक्की होगी और घरों की हालत भी सुधरेगी। हमें अिस प्रकार अपने छोटे-मोटे साधनो के द्वारा ज्ञान का प्रसार करना है। यह अुद्देश्य सिर्फ सिद्धान्त बताने से नही, बल्कि प्रत्यक्ष काम के द्वारा सिद्ध होगा। शिक्षा की प्रगति प्रत्यक्ष काम के द्वारा होगी, अुपदेश बघारने से नही ।

झाड़ू-टोकरी का अुपयोग कौन नही जानता है, लेकिन चहार-दीवारी के बाहर भी अुनका अुपयोग है अिसे कौन जानता है ? यहाँ तक कि घर के आँगन भी साफ नही किये जाते। देहात की गली-गली मे जो कूड़े के ढेर-के-ढेर पड़े दिखाओी देते है वे अिसी अज्ञान का प्रमाण है और हमारे पूर्व बुनियादी और प्रौढ-शिक्षा के राष्ट्रीय कार्यक्रम को अुसी चीज़ को मिटाना होगा ।

८

शिक्षक

तव पूर्व वुनियादी शाला के शिक्षक की योग्यतायें क्या हों? अितना तो साफ है कि आज के प्रशिक्षण विद्यालयों में चुनाव करते समय अेक शिक्षक की जो योग्यता देखी जाती है अुससे अुसकी योग्यता विलकुल भिन्न होगी। जिस शिक्षक को देहाती वच्चों के वीच काम करना है अुसकी काविलियत की जाँच दूसरे ढंग से होगी। वह लोक-प्रिय और स्नेह-युक्त स्वभाव का होना चाहिये। अुसे यह नहीं समझना चाहिये कि वह किसी निश्चित समाज का निश्चित काम करने जा रहा है, वल्कि वह देहात के हर वच्चे का, चाहे वह शाला मे आता हो या न आता हो, मित्र, सहायक, सेवक और सच्चा शिक्षक वनकर जा रहा है। अुसमें अपनी अुपस्थिति-मात्र से गाँव का वातावरण वदलने की क्षमता होनी चाहिये। वह स्वयं अुदाहरण वन कर माँ-वाप और प्रौढ़ों को नागरिक और वड़े होने के नाते अुनकी जिम्मेदारियाँ और कर्तव्य क्या है अिसका ज्ञान कराने जा रहा है। अिसलिअे अुसे खुद अेक आदर्श जीवन विताने की कोशिश करनेवाला होना चाहिये।

हम जानते हैं कि देहात में हम जिस शिक्षा का प्रचार करना चाहते हैं वह धीरज का और पीछे पड़े रहने का कार्य है। मौजूदा वातावरण हर तरह से दूषित है। कूड़े-कचरे की गंदगी के साथ आचरण की गंदगी भी भरी पड़ी है। आलस्य तो प्रौढ़ों के जीवन का साथी वन गया है। अुसी के साथ भेदाभेद, जातपाँत, अमीरी-गरीवी, सभी लगे हैं। वच्चों की दुनिया में सहज भावना समता की होती है, अुसमें भेद-भाव नहीं रहता। वह सच्चा साम्यवादी समाज होता है। लेकिन भेद-भाव पूर्ण वातावरण के कारण वह भी सात-आठ साल की अुम्र में

धीरे-धीरे नीच-अूंच अमीर-गरीब, भेद मानने लगता है। अिस तरह वह भी गदे दूषित वातावरण का अंग बन जाता है।

पूर्व बुनियादी का शिक्षक समाज-सुधारक भी है। अुसे दृढ़ता के साथ अिन बुराअियो को दूर करके बालको की दुनिया में समता का भाव पैदा करना चाहिये। अिसलिये अुसे अमीर और गरीब सबका मित्र होना चाहिये। अैसी हालत में अुसमें विरोध सहने की शक्ति होनी चाहिये। अुसमे बच्चों की समता का वातावरण निर्माण करने की शक्ति होनी चाहिये, जिससे अुनका शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास हो। अुसमे देहाती जीवन की अच्छाअी-बुराअी को समझने की शक्ति होनी चाहिये और साथ ही अुनका सामना करने का अुत्साह और शक्ति होनी चाहिये।

अैसे गुणी शिक्षक को देहात में अपने काम का ढग खुद ही ढूंढ निकालना है। जिस गाँव मे हम काम करने को जाते है तो वहाँ के लोगो के व्यवहार से हमे तुरन्त पता चल जाता है कि वे हमें चाहते है या नही चाहते। गाँव मे प्रवेश पाने का सबसे अुत्तम साधन है बच्चा। यदि बच्चे हमारे पास आने लगें तो धीरे-धीरे अुनके माँ-बापो से सम्बन्ध हो जाता है और अुनकी आवश्यकताये हमारे सामने आने लगती है।

यह सच है कि हम पूरे देहात को अेकदम अपने हाथ मे नहीं ले सकते, अिसलिये दो-चार कुटुम्बो से घना सम्बन्ध कर ले जिससे वे हमारे काम में सहयोग दें तथा हमसे सहानुभूति रखने लगें। अिस तरह गाँव के कुछ लोगो का समर्थन प्राप्त कर लेने पर काम करने की हिम्मत बढती है और अुन्ही के द्वारा धीरे-धीरे सारे गाँव से परिचय हो जाता है तथा हमारे काम की अुपयोगिता को समझने के बाद लोग भी हमारे काम में मदद देने लगते हे।

शिक्षक का हरदम प्रयत्न रहे कि मित्रों की संख्या ज्यादा से ज्यादा बढे, लेकिन अिसका मतलब यह नही कि वह मित्र बनाने के कार्य में अपना अुद्देश्य भूल जाये। हमारा अुद्देश्य तो है देहातों को संजग करना, और अिस कार्य के लिये जितने भी मददगार मिले अुतनों

को जुटाना। हमें गाँव का वातावरण वनाना है, हमारे काम के लिये सक्रिय सहायता प्राप्त करनी है।

अिसके वाद शाला का काम शुरू होता है। दूसरा काम है वच्चों को जुटाने का। सभी माँ-वाप वच्चो के स्कूल मे जाने का महत्व नही समझते। अुनके सम्पर्क मे आने के लिअे वच्चो से अुनके घरों पर मिलने और अुनका निरीक्षण करने का तरीका अच्छा है। शिक्षक सुवह के समय वच्चो के घरों पर चक्कर लगाये, अुन्हे जगावे और शाला मे आने को कहे। माँ-वाप की घरेलू वातो में भी थोडा हिस्सा ले, वच्चों के सम्वन्ध मे दो-चार वाते कह दे। जैसे, अुनकी आदतें, स्वास्थ्य, आहार वगैरा सम्वन्धी। अिस तरह के अेक शिक्षक को वालक के सम्वन्ध में जानने का वहुत मौका मिलता है। वच्चा क्या खाता है, कव सोता है, कव और क्यों वीमार हुआ, अुसका घर और अड़ोस-पडोस कैसा है, आदि सभी वातें मालूम हो जाती है। वाद में धीरे-धीरे आरोग्य, सफाअी, खाना, कपडा आदि कअी वातों को लेकर माता-पिताओ से चर्चा की जा सकती है।

पालक-शिक्षक का सम्वन्ध सुधारने का दूसरा तरीका यह है कि कभी त्योहार-अुत्सव पर पालको को शाला में वुलाया जावे, या कभी शाला के समय मे वच्चों को काम करते हुअे देखने के लिअे आने को कहा जावे। वे जव देखेंगे कि वच्चे कौनसा खेल खेलते है, क्या काम करते है, गुरुजी अुनकी देख-भाल किस तरह करते है तो अुससे अुन्हे भी अपने वच्चो की जरूरतों का ज्ञान होगा। माँ-वाप और शिक्षक के अिस मेल का अनुभव करके वच्चे के मन मे शाला के प्रति ज्यादा-ज्यादा स्नेह पैदा होगा और यदि माता-पिता शिक्षक को अुसके काम में मदद देने लगें तो शिक्षा-काम आसान हो जायेगा।

शिक्षक का वच्चे के साथ जो व्यवहार होता है अुसका वड़ा महत्व है। शिक्षक वालक का मददगार है। जव तक वालक मे नअी वात के प्रति कुतूहल नही पैदा होता तव तक अुसे वह वात सिखाअी नही जा सकती। अिसका सवसे अुत्तम तरीका है प्रत्यक्ष काम के द्वारा

बच्चो के सामने आदर्श रखा जाये। बच्चे बड़ों का अनुकरण करते हैं अिसलिये जब वे शिक्षक को काम मे लगा देखेंगे तो वे भी वैसा करने लगेंगे। अिस लिअे शिक्षक जो काम बच्चों से करवाने की अपेक्षा रखता है अुसकी व्यवस्थित योजना या रचना अुसे बच्चो के सामने अिस तरह रखनी चाहिये कि अुसके प्रति बच्चो मे सहज दिलचस्पी और करने की अिच्छा पैदा हो।

शिक्षक का स्वभाव हमेशा शान्त और खुशमिजाज होना चाहिये। छोटे बच्चे गंभीरता बरदाश्त नही कर सकते। बच्चो के द्वारा पूछे जानेवाले सवालो से बचने के लिअे निरर्थक हुक्म देना ठीक नही। बच्चे सच्चा जवाब चाहते है। और अैसे साफ जवाब देनेवाले शिक्षक पर अुन्हे श्रद्धा होती है, चाहे वह कठोर ही क्यों न हो। अिस तरह बच्चों की मनोवृत्ति को समझ कर शिक्षक को शाला में श्रद्धा और स्नेह का वातावरण पैदा करना चाहिये तथा अपने बर्ताव से बच्चों को अपना लेना चाहिये।

तात्पर्य रूप से हम कह सकते है कि पूर्व बुनियादी शिक्षक में दो खास बातें चाहियें: अेक तो वह बाल-स्नेही होना चाहिये, दूसरे अपने काम के द्वारा वह जो नव-निर्माण करना चाहता है अुसकी अुसे पूरी दृष्टि होनी चाहिये।

१
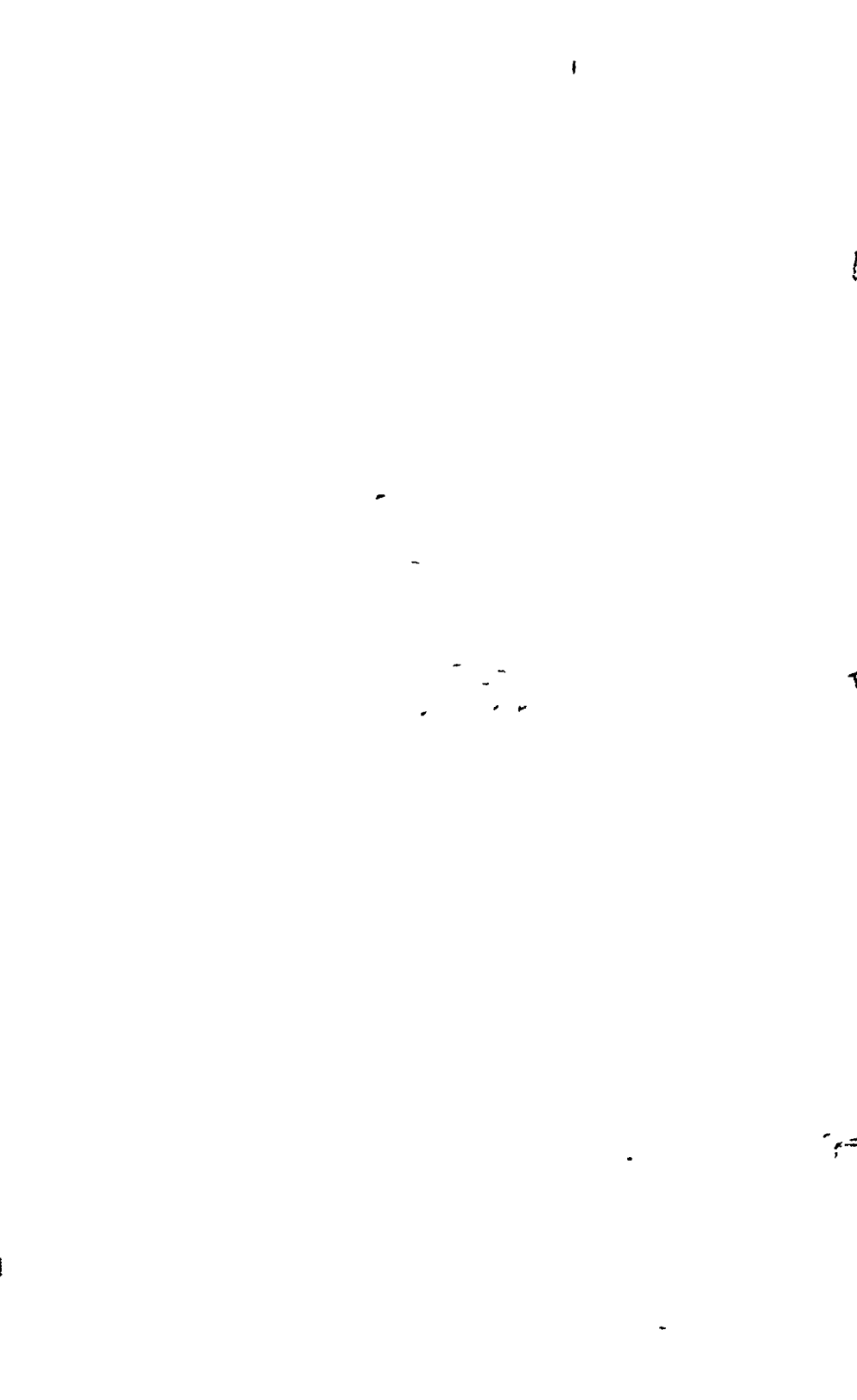
पहले साल का काम

हमारा काम प्रयोग के रूप में शुरू हुआ। मअी १९४४ में जब गांधीजी जेल से बाहर आये तो अुनके विचार और भी तरोताजा हो गये थे। अपनी बातचीत मे अुन्होने अेक दफा नअी तालीम के बारे मे कहा : "अपनी कैद मे मैं नअी तालीम की मुमकिनात (संभावनाओं) के बारे में बराबर सोचता रहा और मेरा दिमाग बेकरार हो गया। हमको अपनी मौजूदा हासिलात से सन्तोष मानकर अपने काम में यहीं नही ठहर जाना चाहिये। हमको बच्चो के घरों तक पहुँच जाना चाहिये। अुनके माँ-बाप को शिक्षा देनी चाहिये। नअी तालीम तो जीवन भर की तालीम होनी चाहिये। यह अब मुझे बिलकुल स्पष्ट हो गया है कि नअी तालीम का क्षेत्र अवश्य बढ़ना चाहिये। अुसमे जिन्दगी की हरेक हालत मे हरेक व्यक्ति की शिक्षा का प्रबन्ध होना चाहिये।... नअी तालीम का शिक्षक सबको तालीम देने वाला शिक्षक हो।"

अब तक तालीम संघ की तरफ से सिर्फ ७ से १४ साल के बालको की शिक्षा का काम चलता था। लेकिन हम सब महसूस करने लगे कि जब तक ७ से छोटी अुम्रवाले बच्चों की शिक्षा का काम हाथ में नही लिया जाता, तब तक नअी तालीम का काम अधूरा है। अिसलिअे सेवाग्राम के बालको को लेकर अिसका पहला प्रयोग करने का निश्चय किया। नवम्बर १९४४ से काम शुरू हुआ। लेकिन नवम्बर १९४४ से अप्रैल १९४५ तक पूर्व तैयारी का समय कहलायेगा। जुलाअी '४५ से ही निर्दिष्ट ध्येय को सामने रखकर यह काम बाकायदा शुरू हुआ।

अेक वात ध्यान मे रखने की यह है कि हमने प्रयोग के पहले दिन से ही, वच्चों की तालीम और अुनके पालको की तालीम दोनो को अेक ही कार्यक्रम के दो पहलू मान कर काम किया। अिसलिये हमारा काम प्रौढ़ो से गुरू होने वाला था। लेकिन फिर सवाल आया, गुरू कैसे करे ? हमे काम के तरीके की कल्पना नही थी। लेकिन जैसे जैसे काम वढ़ा अुसका स्वरूप भी वनता गया। काम का विकास धीरे-धीरे किस तरह हुआ यह पाठक खुद शिक्षक की रिपोर्ट से देख सकेगे :—

"मैंने सन् १९४४ में सेवाग्राम मे श्रीमती शान्ता नारूलकर के मार्ग-दर्शन मे सात साल से छोटे वच्चों की तालीम का काम शुरू किया। अुस समय मेरे पास ६-७ साल की अुम्र के १५-२० वच्चे थे। पहले मैंने खास कर गाँव-गाँव के वच्चे, और अुनके पालकों से परिचय करने का काम किया। अिसलिये हर रोज सुवह स्कूल शुरू होने से पहले अेक घण्टा गाँव मे निरीक्षण के लिअे दिया गया। निरीक्षण का समय अिस तरह नियोजित किया जाता था कि वालक और पालक अपने नित्य के कामों के लिअे विस्तर से अुठते ही थे कि मै अुनके घर पहुँच जाता था। अिस समय वच्चो की तालीम का मकसद क्या है, पालको के कर्तव्य क्या है वगैरह के वारे मे पालकों से वातचीत की। पहले यद्यपि यह अेक कठिन काम जान पड़ा था, लेकिन अन्त में परिणाम ठीक हुआ। न चाहनेवाले पालकों के वालक भी स्कूल में आने लगे।

"सात साल से छोटे वच्चो की तालीम मे अुनका शारीरिक विकास सवसे वड़ी वात रहती है। अिसलिअे हमारा सवसे पहला काम था, वच्चो की तन्दुरुस्ती की जाँच करना। अिसमें अुनके घर की हालत, घर की खुराक, नींद, आराम के घण्टे, वजन, अुँचाअी आदि की तथा साल-भर और हर साल होने वाली वीमारियों की जानकारी लेना जरूरी था। अिन सव वातो को लेकर सेवाग्राम के वच्चों की जाँच करने की जो कोशिश की गअी अुसका नमूना परिशिष्ट में तख्ता नं. १, २, ३ में दिया गया है।
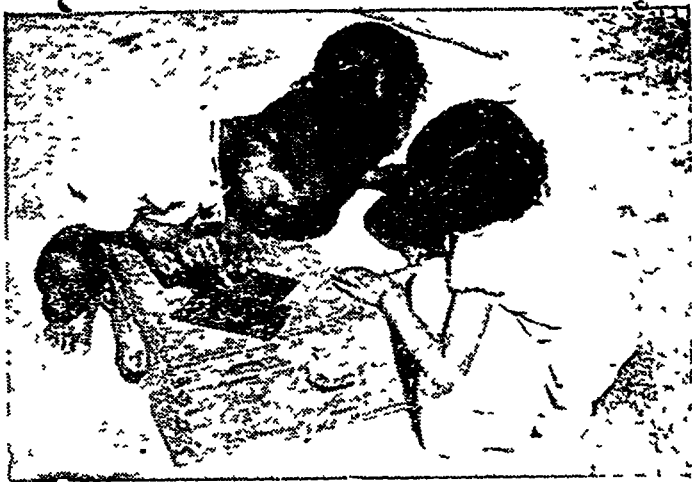
स्कूल में—यह नहीं कह सकते कि कुछ खास बाते काम में और कुछ खास बाते खेल म शुमार होती है। बच्चे बडी गभीरता और लगन से चित्रकारी करते है—और अुस चित्रकारी में कुछ अैसी बाते व्यक्त कर देते हैं कि जिन्हे शब्द व्यक्त नही कर पाते, और जिनके अस्तित्व के बारे में वे स्वय भी नही जानते।

स्कूल में—मिट्टी की चीजें बनाने में बच्चो को बहुत आनन्द आता है। अिसका अेक लाभ यह है कि अिससे बच्चो का मानसिक-शारीरिक सन्तुलन आकारो में प्रकट होता है।

स्कूल में—लोक-नृत्य के अभ्यास मे आनन्द और हर्ष के साथ-साथ संगीत और ताल के साथ शरीर की हलचल वच्चे सीखते हैं। अिससे अुनका सौंदर्य वोध वढता है।

स्कूल में—वच्चों में जल्द ही जिम्मेदारी और लगन के साथ काम करने की भावना विकसित होती है। सामाजिक जीवन में हर-अेक को कोअी भी काम स्वेच्छा से करने की प्रेरणा मिलती है। चित्र में अेक वच्चा झूले की रस्सी वाघ रहा है।

"भरती साल भर चालू रही। साल के आखीर तक कुल ७२ बच्चे शाला से परिचित हुअे। साल मे स्कूल २१४ दिन खुला। लगभग ५० बच्चे नियमित अुपस्थित रहे।

"अिस साल मे हमारा कार्यक्रम अेकसाँ रहा : समय—सवेरे ७ से ७।। स्थान—बच्चो के घर।

प्रौढ़-शिक्षा और प्राथमिक सफाअी : बच्चे सो कर अुठने के बाद पाखाना जाना, मुँह धोना, नहाना, नाश्ता करना क्रियाये करते है। अुस वक्त शिक्षक अुनके घर पर जाकर निरीक्षण करते। अुनके पालको से सफाअी, बच्चो की हिफाजत, भोजन, कपड़े आदि विषयो पर प्रसगानुसार चर्चा होती। चर्चा मे ये बाते आती ·

१. **खानपान :** बच्चो के लिअे कौन सी खूराक जरूरी है, कितनी देर बाद देनी चाहिये, भोजन में सफाअी, साफ पानी, बीमारी मे क्या देना चाहिये, बीमारी से बचाव, वगैरा।

२. **कपड़े :** अनाज और कपड़ो की जरूरत, अुसमें खादी का स्थान, बच्चो की मारफत घर मे चरखे और खादी का प्रवेश कराना।

३. **सेहत** · बच्चो की बीमारियाँ, छुआछूत के रोगो की चर्चा, घरेलू दवाअियाँ, शफाखाने मे जाँच और अिलाज करवाने की सलाह।

४. **खेती-गोपालन :** आर्थिक सवाल होने के कारण पालक अिसपर अधिक चर्चा करते है।

५. **सफाअी :**

(क) निजी सफाअी बच्चो को वक्तपर पाखाना भेजना, हाथ, पैर, मुँह धोना, दाँत साफ करना, बाल सँवारना, हरअेक अवयव की सफाअी कैसे करना, अिसकी चर्चा करना और प्रत्यक्ष करके बताना। कपडों की सफाअी का महत्व और स्थानिक साधन जैसे रीठा, हिंगनबेट या हिंगोट, राख का अुपयोग। अिन चीजों के अुपयोग का तरीका परिशिष्ट मे दिया गया है।

(ख) आम सफाअी . घर, कुआँ, अिर्द-गिर्द की सफाअी के बारे मे चर्चा करना और खुद, अकेले या अुनके साथ मिलकर, काम करके समझा देना।

६. **पढ़ाअी का शौक** : वच्चों को स्कूल में भेजने के लिअे रुचि निर्माण करना।

समय—७॥ से १०॥ (सुवह) स्थान—शाला
२॥ से ५ (दोपहरी)

(१) शाला व्यवस्था : शाला और मैदान की सफाअी, कचरा अुठाना, घूरे पर ले जाना, चटाअी विछाना, पीनेका पानी भरना. साधन की सफाअी, और रचनायें सव क्रियायें शिक्षक और वच्चे दोनो करते है। विलकुल छोटे वच्चे निरीक्षण करते।

(२) प्रार्थना : ठीक वैठना, दो मिनट तक शान्त रहना, और फिर प्रार्थना करना।

(३) सफाअी : ज्यादा-तर वच्चे घर से ही साफ होकर आते। जो वच्चा गंदा आता अुसकी सफाअी शाला मे होती। लडकियों के वाल सँवारते। खुजली फोडा फुसी वाले वच्चे 'वाल-आरोग्य-केन्द्र' में भेजे जाते। छोटे वच्चों की सफाअी वड़े वच्चे और शिक्षक करते।

(४) रचनात्मक प्रवृत्तियाँ : अैसी प्रवृत्तियों के लिये साधन की हमारे सामने वडी समस्या थी। हमें सस्ते साधन चाहिये थे। वे भी स्थानिक हो जिनसे वच्चे परिचित हों। सवसे पहले छोटे-छोटे कंकड़-पत्थर, मिट्टी और खपरैलके टुकडे अिन्हीसे वच्चे खिलौनोकी ख्वाहिश पूरी करते थे। धीरे-धीरे गाँवमें ही मिलनेवाले, लेकिन विना खर्चवाले, साधन जैसे छोटी झाड़ू, लकडी, औजार, खिलौने वगैरा वच्चोंको दिये गये। कुछ चीजे तो गाँवमे ही तैयार करवा ली। अिसके वाद जरूरतके मुताविक साधन और वढ़े। अिन साधनोके जरिये वच्चोंके शरीर, मन और वुद्धिके विकासकी ओर ध्यान दिया गया। गाँवके दूसरे खेल भी चुनकर वच्चोंको सिखाये गये। अुनसे वालकोमे निर्भय-वृत्ति, शारीरिक हलचल, चपलता और वारी-वारीसे खेलनेका अभ्यास कराया गया।

"दैनिक कार्यक्रममे आनेवाले प्रसंगो, खेलके साधनों, गानों, कहानियोके द्वारा वच्चो का शव्द-भण्डार और आत्म प्रकाशन शक्ति वढ़ाअी। प्रत्यक्ष अंक-ज्ञान नही दिया गया; लेकिन वस्तुओके आकारके

मुताबिक छोटा-बड़ा, अूँचा-ठिंगना, लम्बा-चौड़ा, हलका-भारी— की कल्पना अुन्हे प्रत्यक्ष निरीक्षण और अुपयोगके द्वारा हुअी।

स्वावलम्बन की तालीम : बच्चा अपनी अन्तर वृत्तिसे स्वावलम्बी होता है। लेकिन अनुकूल वातावरणके अभावमे परावलम्बी बन जाता है। हमारे पास आनेवाले बच्चे थोड़े ही दिनोमे अपनी जरूरतें आप पूरी करनेकी कोशिश करते हैं; जैसे, सफाअीके लिये पानी लेना, तौलियेसे शरीर पोछना, खेलका सामान लेना, और खेल खतम करके अुसे अपनी जगह पर रख देना, अपनी कटोरी लेना, दूध पीना, कटोरी धोना, फल छीलना, व खाना, घर जाना और आना, अपना सामान सँभालना और घर ले जाना। यह सब बच्चोंकी स्वावलम्बनकी तालीम है।

सामाजिक तालीम : सीधे खड़े रहना, रास्ते में ठीक तरह से चलना, समाज मे व्यवस्थित और शान्त बैठना या खड़े रहना, नाश्ता या भोजन के पहले मंत्र कहना, बडो और अतिथियो को प्रणाम करना, गाली-गलौज न करना, अपने से छोटे बच्चो की मदद करना, हर रोज प्रार्थना करना, दो मिनट शान्त रहना, शाला मे अपना सामान ठीक रखना, घर जाते वक्त चटाअी लपेटकर रखना, कतार मे खडे होना, अेक साथ नमस्ते करना, घर जाना, अिन क्रियाओ के जरिये अुनमे अनुशासन-पूर्ण और व्यवस्थित रहने की आदत डाली जाती है।

सैर-सपाटे कभी-कभी बच्चे गाँव मे और गाँव के नजदीक के बगीचे में घूमने को गये। कभी अुनकी माताये भी साथ आअी। अिस प्रकार साल के अन्त मे हमे बहुत कुछ कामयाबी मिली।

"जो बालक पहले सड़को पर धूल मे खेला करते थे अब शाला में आने लगे और बहुतेरी अच्छी बाते सीख गये। माता-पिता भी सहयोग देने लगे है। हमारा अनुभव है कि गरीब घरके बालक ज्यादा चचल होते है। वे स्वतत्र रहकर काम करते है। अुनमे यदि कुछ कमी है तो सफाअी और अच्छी आदतों की। और वह कमी है अुनके घरके वातावरण के कारण। यह शिक्षा और संस्कार पूर्ण वातावरण का काम है। वह वातावरण हमने स्कूल मे दिया तथा साथ ही अुनके घर तक पहुँचने की भी कोशिश की।"

२

१९४९ ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में पूर्व-बुनियादी शाला के काम का विवरण

यह अेक नियम-सा हो गया है कि प्राय: सभी शिक्षा संस्थाओं में गर्मियो के दिनों में छुट्टी रहती है। लेकिन नअी तालीम मे छुट्टी कैसी? गाँव के वच्चे तो गाँव में ही रहते हैं। अिस समय अुन्हे गर्मी मे घूमने-फिरने से वचाने और अुनकी हिफाजत करने की ज्यादा ज़रूरत है; क्योंकि यही समय अैसा होता है जव वच्चो मे वुखार, चेचक, आँखें आना, खुजली आदि वीमारियाँ ज़ोर पकड़ती है। दूसरे, वच्चों के माँ-वाप या पालको को भी अिस समय फुरसत रहती है और वच्चों के वारे में शिक्षक को अुनसे चर्चा करने का अच्छा मौका मिलता है। क्योंकि अुधर जुलाअी मे जव स्कूल खुलते है तो वर्षा के शुरू हो जाने से पालक अपनी खेती आदि धन्धों मे लग जाते है और अिधर ध्यान नहीं दे सकते। अिस दृष्टि से अिस साल पूर्व-वुनियादी के वच्चों का स्कूल गर्मियो में भी चालू रखा गया। अुसका अेक महीने का विवरण नीचे दिया जाता है।

काम की योजना : पिछले सालों का अनुभव था कि गर्मियों में छुट्टी देना वच्चो के विकास की दृष्टि से हानिकारक है। गर्मी मे वच्चों को स्कूल से छुट्टी देकर खुला छोड़ देने से वे धूल में खेलते है और गर्मी में मारे-मारे फिरते है। अिसके अलावा, अिसी समय (मअी-जून में) विषम ज्वर, आँख, माता, आदि वीमारियाँ रहती है। अिसलिये हमने तय किया कि वच्चों के विकास की दृष्टि से यही अच्छा है कि गर्मियों में स्कूल खुला रखा जाये। हाँ, वच्चों की ज़रूरत और मौसम को देखकर कार्यक्रम मे अदल- वदल किया जा सकता है।

वच्चों की भरती की दृष्टि से भी मअी-जून का वक्त ही अधिक अुपयुक्त है। अैसा करने से जुलाअी से अेकदम व्यवस्थित काम शुरू किया जा सकता है। आम तौर पर स्कूलो मे होता यह है कि मअी-जून छुट्टियो में चले जाते है, जुलाअी-अगस्त में तैयारी होती है। अिस तरह चार महीने वेकार चले जाते है, और पहले छह महीने में जितना काम होना चाहिये अुतना नही हो पाता। दरअसल यह छुट्टी फसल आने के मौको पर दी जानी चाहिये जिससे वच्चे खेतो में जाकर अपने माँ-वाप के काम मे हाथ वँटा सके। अिस तरह छुट्टियो का सदुपयोग होगा। शिक्षक भी स्कूल के अेक नियोजित कार्यक्रम के अनुसार छुट्टी भोग ले जिससे स्कूल पूरे साल चलती रहे। अिसलिये हमने गृष्म में भी स्कूल चालू रखने का निश्चय किया लेकिन हमारे दैनिक समय-पत्रक में कुछ परिवर्तन कर दिया।

हमारा कार्यक्रम कैसे शुरू हुआ : पहले २½ से १० वर्ष की वीच की अुम्रवाले वालको की सूची तैयार की। फिर वालको के पालको से मिले और अुन्हे समझाया कि हम स्कूल खुली रखना क्यों चाहते है। साथ ही हमने अुन्हे वालक के स्वास्थ्य, अुसके शारीरिक विकास तथा आहार, खेल और आराम का जीवन मे क्या महत्त्व है, सव वाते भी वताअी। अिससे पालक छुट्टियो मे भी अपने वालक भेजने को तैयार हो गये। क्योंकि जो वालक नियमित स्कूल मे आते रहे और जो नही आते थे अुनके स्वास्थ्य का फर्क अुनके सामने आ गया।

तव हमने छुट्टियो के कार्यक्रम पर विचार किया। हमने सवेरे दूध देने की, दुपहरी में आराम करने की जगह की, कुछ खेलो की और भिन्न-भिन्न अुम्रवाले वालको के अनुकूल कुछ-कुछ काम की व्यवस्था की। पालको ने वालको को नियमित रूपसे स्कूल में भेजने का वचन दिया।

दैनिक कार्यक्रम : हमने नित्य के कार्यक्रम मे निम्न परिवर्तन किया—

७॥ से ९॥ स्कूल-सफाअी, प्रार्थना, शरीर-सफाअी, आरोग्य, नाश्ता, कहानियाँ, गाना, वर्ग-व्यवस्था, छुट्टी।

९॥ से ११ वच्चों का घर जाकर स्नान व भोजन करना ।

११॥ से १२ स्कूल मे आना

१२ से २ सोना

२ से ३ कहानियाँ, गाने

३ से ३॥ नाश्ता (छाछ)

३॥ से ४ सूत्र-यज्ञ और छुट्टी

अिस तरह १८ अप्रैल से ३१ मअी तक कार्यक्रम रहा । फिर जब वादल घिरने लगे तो हमने यह मानकर कि डेढ़ महीने में डाली हुअी आदत घर पर भी कायम रहेगी, दोपहरीमें वच्चों को अपने-अपने घर सोने के लिअे छोड़ दिया । क्योंकि नअी तालीम का असल ध्येय तो है वच्चो को स्वस्थ और शुद्ध जीवन की अैसी आदते डालना जो घर में भी कायम रहें । अिसलिअे १ जून से ७॥ से १० के कार्यक्रम के वाद छुट्टी हो जाती थी ।

सफाअी : गृष्म के पहले से जो वच्चे शाला मे आ रहे थे वे घर से ही साफ-सुथरे आते । अिसलिअे अुन्हें साफ करने की जरूरत नहीं पड़ती । नये वालक साफ-सुथरे नहीं आते थे अिसलिअे अुनकी सफाअी स्कूल में की जाती । वाद में अुनकी माताओं को समझाया गया, अुससे वे वालक भी वहुत-कुछ साफ-सुथरे आने लगे ।

सोना : गर्मी के दिनो मे वच्चों को आराम की अधिक जरूरत रहती है । अिसलिअे अिन दिनों वच्चों को दोपहरी में घण्टा-आध घण्टा सुलाने का खास आयोजन किया गया । दोपहरीके पहले (यानी स्कूल वन्द होनेसे पहले ही) विछौने कर लिये जाते थे । वच्चे ११॥ वजे स्कूल में आना शुरू कर देते थे । वालवर्ग और पहला-दूसरा वर्ग मिला-कर कुल चालीस वच्चे सोने के लिअे आते थे । वहुतेरे वच्चे १२॥ वजे तक आ जाते थे लेकिन घर में भोजन में देर होने की वजह से कुछ वच्चों को डेढ़ वज जाता था । अिससे फायदे के वदले नुकसान होगा यह समझ-कर हमने पालकों से मिलकर अपना नया काम वताया और कह दिया

कि यदि वच्चों को सोने के लिअे स्कूल में भेजना हो तो १२ वजे के पहले भेजें जिससे वच्चों के पैर नही जलेगे और अुन्हे धूप में तकलीफ नही होगी। पालकों ने यह वात मान ली और वच्चे समय पर शाला मे आने लगे।

शुरू-शुरू मे, खास कर अेक सप्ताह, वच्चो को स्कूल मे आकर सोने में खेल मालूम होता था। अुन्हे जव सोने को कहा जाता तो कहने, "गुरुजी, नीद नही आती।" अिसपर अुन्हे चुपचाप लेटे रहने, न वोलने के लिअे कहा गया, जिससे दूसरे सोनेवालों की नीद मे खलल न हो। शिक्षक खुद भी चुपचाप लेट जाते थे। तव तो वच्चो को भी नीद आने लगी और धीरे-धीरे वे अपने-आप सोने लगे।

पानी : पीने के लिअे ठण्डे पानी की व्यवस्था सवेरे शाला वद होने से पहले ही कर ली जाती थी। वच्चो को भर-पेट पानी पिलाया जाता था।

दोपहर का नाश्ता : सवेरे नाश्ते मे दूध और दोपहर को छाछ दी जाती थी। वीमार वच्चों को घर पर ही दूध दिया जाता था, जिससे वच्चो के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ा।

पालकों से सम्बन्ध : दोपहर के समय कुछ पालक वच्चो को पहुँचाने के लिये आते थे। वे दूसरे सव वच्चो को शान्ति से लेटे हुअे देखते और हमारे नये अुपक्रम से खुश होते। अिस समय पालको को पीने के पानी और भोजन-पूर्ति (नाश्ता) के वारे में जानकारी दी जाती। कुछ पालको को अुनके सोते हुअे वच्चे दिखाने के लिये जान-वूझकर वुलाया गया। कभी वे भी ठंडा पानी और छाछ माँगते और अुन्हे दी जाती। अिसका वहुत फायदा हुआ और पालक हमारे काम को आदर की दृष्टि से देखने लगे।

वच्चों का स्वास्थ्य : हमेशा के कार्यक्रम की तरह वच्चो के स्वास्थ्य पर ध्यान दिया गया। लेकिन अभी तक जो वच्चे शाला मे नही आते थे, तथा जिनके स्वास्थ्य की ओर अुनके वाप-माँ का भी ध्यान नही था अैसे आठ-दस वच्चों को शाला मे लाना शुरू किया। अुन्हे खुजली थी।

वाल आरोग्य केन्द्र में अुनके फोड़े धोकर मरहम लगाया और दूध पिलाया। पहले तो अुनके पालक 'नाही-नूहीं' करते थे। लेकिन अुन्हें समझाया कि वच्चों के फोड़े अच्छे नही होते तव तक हम दूसरा कुछ नही करेंगे। यदि वच्चे स्कूल में नहीं आते तो हम अुनके घर जाकर अुन्हे दवाखाने मे लाते, मरहम-पट्टी करते और दूध पिलाते। अेक हफ्ते में सव वच्चे दुरुस्त हो गये। पालको को भी खुशी हुअी।

१ मअी व १ जून को वच्चो का वजन लिया गया। ज्यादातर वच्चो का वजन वढ़ा। छह वच्चे, जो दोपहरी मे सोने को नहीं आते थे, अुनका वजन घटा।

पालकों पर असर : हम पहले ही वता चुके है कि वुनियादी शिक्षा का ध्येय दुमुखी है। अेक ओर तो वच्चों का विकास करना और दूसरी ओर पालकों को वच्चों के सर्वांगीण विकास के वारे में समझाना तथा अुन्हें अपनी जिम्मेदारी का भान कराना। हमारे अिस कार्यक्रम में चार वातें मुख्य रही : वच्चों के आराम, पानी, भोजन की व्यवस्था और अुनके आरोग्य की देखभाल। अिससे वच्चों के स्वास्थ्य पर अच्छा असर पड़ा। गर्मी मे अुनका वक्त आनन्द और आराम से वीता। अिन सव परिणामो को देखकर पालको पर भी अच्छा प्रभाव पड़ा, वे हमारे काम में और भी विश्वास करने लगे।

३

तीन साल के प्रयोग के बाद
१९४७-४८ के काम का विवरण

सेवाग्राम मे पूर्व बुनियादी को शुरू हुअे तीन साल बीत चुके। हम तीसरे साल यानी जुलाअी १९४७ मे अप्रैल १९४८ तक का वार्षिक विवरण यहाँ दे रहे है। पिछले दो वर्षो के अनुभव से बाल-शिक्षा के काम मे हमने कुछ फेर-बदल किये। गर्मी की छुट्टी मे स्कूल चालू रखा। स्कूल मे अुन्ही बच्चो को दाखिल किया जिनके पालको ने अपने बच्चो को रोज समय पर पहुँचाने की जिम्मेदारी स्वीकार की।

बच्चों के घरों से सम्पर्क हमारा नैतिक कर्तव्य है : स्कूल का काम शुरू होने से पहले हर रोज अेक घंटा मैंने बच्चों के घरो पर देने का जो नियम रखा था, वह चालू रहा। सफाअी, आरोग्य, खाना, कपड़ा आदि जीवन की जरूरी बातों पर सोचने की दृष्टि से मुझे पालकों को दैनिक जीवन में अेक-दूसरे से सीखने तथा अेक-दूसरे को सिखाने के काफी प्रसग आये। अनुभव से हमने जाना कि पालको से मिलने, अुन्हें बच्चो की सार-सँभाल, सुसस्कार आदि बाते समझाने के लिअे सवेरे का समय अत्यन्त अनुकूल है। अिसीके साथ ग्राम-सफाअी को भी प्रौढ़-शिक्षा और संस्कार-निर्माण का अग माना और अुसे स्कूल की दिनचर्या में शामिल किया।

ग्राम-सफाअी का काम सवेरे ६ से ७ तक होता था। अुसमे हमने भगी-काम की श्रेष्ठता, सफाअी का महत्त्व, मिश्र खाद बनाने की क्रिया और अुस खाद का अुपयोग आदि जानकारी बालको को प्रत्यक्ष काम के द्वारा दी तथा साथ-साथ काम करके पालको को भी समझाया।

सुवह के ग्राम-भ्रमण में जो वच्चे किसी भी कारण से शाला में नहीं आ पाते थे अुनपर विशेष ध्यान दिया, जिससे वे स्कूल के वातावरण से भले ही वचित रहें, लेकिन हमारे संस्कारों से वंचित न हों। अिस तरह से "सारा गाँव मेरा स्कूल वना और गाँव के सारे वच्चे मेरी स्कूल के वच्चे वने।"

हमारे सवेरे से घर-घर भ्रमण से पालकों को स्कूल म जानेवाले और न जाने वाले वालकों के वीच का अन्तर दिखाओी देता। स्कूल में जानेवाले वच्चे खुशी-खुशी स्कूल के लिअे रवाना होते। यह वात स्कूल मे न जाने वाले वालको के भी देखने मे आती और वे भी विना रोये-धोये स्कूल जाने को निकल पडते थे।

अिसके अलावा और भी अैसे प्रसग आये जव शिक्षक-पालकों का सम्वन्ध हुआ। स्कूल के गणेशोत्सव के सहभोज में पालको ने भाग लिया। वाल-जीवन प्रदर्शन मे आये। मकर-संक्राति के अुत्सव पर वच्चो की माताओ ने भाग लिया।

अिस तरह हम सारे गाँव के सम्पर्क मे आये, जिससे सारा गाँव स्कूल वन गया और गाँव के सभी वच्चे हमारे स्कूल के वच्चे हो गये। हमारा लक्ष्य यह है कि हर घर अेक आदर्श शाला वने और शाला मे स्नेहमय घर का वातावरण हो जिसमे वच्चों के सर्वांगीण विकास मे मदद मिले।

फिरता स्कूल : शाला मे न आने वाले वच्चो के लिअे हमने अेक फिरता स्कूल भी शुरू किया। अिस साल १५ फरवरी से २ मार्च तक पूज्य कस्तूरवा गांधी सप्ताह मे हमने हमारे पूर्व वुनियादी के प्रशिक्षण के लिअे आने वाली वहनो की मदद से यह काम शुरू किया।

कार्यक्रम : पहले जो भी वच्चे मिलते अुन्हे लेकर गीत गाते हुअे हम दूसरे वच्चों के घर जाते, अुन्हे साथ लेते, माताओ को समझाते और आगे वढते थे। जिन वालकों पर अपने छोटे भाओी-वहनों की देख भाल की जिम्मेदारी थी, वे छोटे भाओी-वहनो को भी साथ में ले लेते। तीन वहनों ने तीन मुहल्लो में अैसी टोलियाँ वनाओी।

पहले सव वच्चो की शरीर-सफाओी की जाती। जिनके कपड़े गन्दे थे अुन्हें साफ किया जाता। फोड़े-फुसी वाले वच्चों को वड़े और

समझदार वच्चो या पालको के साथ आरोग्य केन्द्र में अिलाज के लिअे भेजा जाता। अिसके वाद छोटी-सी प्रार्थना होती जिसमें भजन और धुन सिखाअी जाती। वच्चो को कुछ गीत, कहानियाँ और खेल भी वताये जाते।

यह सव कार्यक्रम अैसी जगह चलता था जहाँ वच्चो की मातायें अपना दैनिक काम करती थी। अिस काम को देखकर अुन्हे भी मदद देने की अिच्छा होती और वे आती थी। अिस तरह माताओ को भी आम-सफाअी और वच्चो की सफाअी का ज्ञान मिलता।

परिणाम: अिसका परिणाम यह हुआ कि हमारे दैनिक काम के प्रति लोगो की श्रद्धा वढी और वच्चे भी प्रसन्न-चित्त और आनन्दमय वातावरण में दिखाअी देते थे। अिस पखवारे के वाद कअी नये वच्चे हमारी शाला में भरती हुअे। यह कार्यक्रम ७ से ९ तक चलता था।

दर्ज संख्या जुलाअी में अिस तरह ४५ वच्चे स्कूल मे दाखिल हुअे। जिनमें ४० वच्चे गाँव के और ५ अन्य गाँवो के थे। ४० में ४ से ९ वर्ष के २७ और २॥ से ४ वर्ष के १३ वच्चे थे। अगस्त में ९ और सितवर मे ४ वच्चे और दाखिल हुअे। अिस तरह सितंवर के अन्त में कुल वच्चे ५४ रहे। अिसके वाद वीच-वीच मे पालको के स्थानांतर, घरेलू कठिनाअियाँ, अनियमित अुपस्थिति आदि कारणो से ९ वच्चे कम हुअे और ४ वच्चे नये आये। अिसलिअे अप्रैल के अन्त मे वच्चो की संख्या ५० रही।

अुपस्थिति : जुलाअी ४७ से अप्रैल ४८ तक वच्चो की औसत हाजरी नीचे लिखे अनुसार रही—

	जुलाअी	अगस्त	सितवर	अक्टूवर	नववर	दिसवर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
दर्ज संख्या	४५	५१	५५	५४	५१	४७	५०	४२	५०	५०
औसत हाजरी	३२	४६	४४	४१	३१	२९	३३	३५	३०	२२

अिस वर्ष वच्चों की हाजरी तीन वार रखी गयी—सुवह, दोपहर और नाश्ता हाजरी। सुवह की और नाश्ते की हाजरी मे विशेष फर्क नही रहता। वीमार वच्चों को अुनके घर पर नाश्ता पहुँचाया गया हो तो अुनको नाश्ते मे हाजिर लिखा जाता है। दोपहर को छोटे वच्चे सो जाते हैं, और वड़े वच्चे अपने छोटे भाअी-वहनो को संभालने के लिये घर रहते है। अिस वजह से दोपहर की हाजगी सुवह की हाजरी से करीव आधी रही। खास कर अगस्त, सितवर और अक्टूवर मे निदाअी और नववर से फरवरी तक खेती का काम होने से अुन महीनों में वच्चो की हाजरी कम रही। अिस संवध मे पालको को समझाया गया, लेकिन अुससे हाजरी मे·मुधार नही हुआ। छोटे वच्चों को संभालने के लिअे वड़े वच्चों को घर पर रख लेने के सिवा पालकों के लिअे कोअी चारा नही रहता, क्योंकि अिसके विना वे अपने काम पर जा नही सकते।

वच्चों का स्वास्थ्य : सात वर्ष से कम अुम्र के वच्चों की मामूली विमारियाँ साल भर चलती रही। अिस वर्ष आँखे आने की सक्रामक वीमारी सभी वच्चों को हुअी। वच्चों की अन्य वीमारियाँ अिस तरह रही—

	मलेरिया	पेचिश	आँख आना	खुजली	जख्म	कुत्तेका काटना	कान वहना	कृमि	जुकाम	दाँत	हड्डी में दर्द
जुलाअी	८	४	१	८	२	१	—	—	—	—	—
अगस्त	७	१	२३	५	२	—	१	—	—	—	—
सितम्वर	७	—	१४	३	—	—	—	१	—	—	—
अक्टूवर	३	—	१	—	२	—	—	—	१०	१	—
नवम्वर	७	—	—	३	—	—	१	—	२	—	—
दिसम्वर	४	—	२	५	१	—	१	—	—	—	—
जनवरी	५	—	—	५	२	—	—	—	—	—	?
फरवरी	३	—	३	—	—	—	—	—	—	—	—
मार्च	४	—	२	२	—	—	—	—	—	—	—
अप्रैल	३	—	- -	—	—	—	—	—	—	—	—

अिन वीमारियों का अिलाज 'वाल आरोग्य केन्द्र' में किया गया। अगस्त में सव वच्चों को हैजे की मुअी दी गयी तथा फरवरी में माता

का टीका लगाया गया। आँख की वीमारी मे सव वच्चो की आँखों में हर तीसरे दिन दवा डाली गयी, जिससे अच्छा लाभ हुआ।

वच्चों का वजन: हर माह ५ तारीख के अन्दर वच्चो का वजन लिया गया। साल में ३ से ४ पौंड तक २ वच्चों का, ३ पौड तक ५ वच्चो का, १ से २ पौड तक ३ वच्चो का, ½ से १ पौड तक २ वच्चों का वजन वढा। वजन की औसत वृद्धि २ पौड रही। ४ वच्चो का वजन नही वढ़ा। वच्चो का वजन कम होने पर पालको को सूचना दी गयी।

वच्चो की डाक्टरी जाँच अिस वर्ष नही हुअी।

नाश्ता: वच्चों को प्रतिदिन, प्रति वालक करीव-करीव १० तोले दूध देने की योजना थी; लेकिन ७॥ तोले दूध दिया गया। दूध का भाव प्रति रुपया ३ सेर लगाया है। साल मे दूध का कुल खर्च २५४-)॥। हुआ। अिसमे पहले और दूसरे दर्जे के वच्चो का खर्च भी शामिल है।

	जुलाअी	अगस्त	सितवर	अक्टूवर	नववर	दिसवर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल
औसत हाजरी	४१	४८	३७	४२	३२	३१	३३	३५	३०	२२
कुल नाश्ते की कीमत	रु ३५=)॥	रु ३३।-)।	रु ३२	रु ३२	रु २१	रु २०	रु २४॥।)	रु. १६॥)	रु २१।=)	रु. १८
दूध, प्रति वालक	तोले ७॥।	तोले ६॥	तो. ६	तो ७	तो १०	तो. ८	तोले ८	तोले ७	तो. ८	तो. ७
खर्च, प्रति वालक	पाअी ६	पा ५॥	पा ५॥	पा. ५॥	पा ७॥	पा. ६॥	पा. ६॥	पा ६	पा. ६॥	पा. ६

दूध के अलावा वच्चो को वीच-वीच में संत्रा, केला छाछ व नीरा भी नाश्ते में दिये गये। हर वुधवार को सैर और सहभोज के लिअे

अतिरिक्त खर्च किया गया जो वह कुल १२॥≈)॥ का हुआ। कुल नाश्ता खर्च २६६॥≡)। हुआ। प्रतिदिन प्रति विद्यार्थी औसत खर्च अेक आना छ. पाअी आता है।

यहाँ नाश्ते के वारे मे थोड़ा स्पष्टीकरण करना जरूरी है। देहातियों के भोजन मे समतौल आहार की दृष्टि से फल या हरी सब्जी मिलना आवश्यक है। खास कर वच्चो को तो वह मिलनी ही चाहिये। लेकिन ज्यादा तर लोगो को वह नसीव नही होती। जव तक यह पूर्ति नहीं की जाती, वालकों के सम्पूर्ण विकास की वात अधूरी रहती है। अिसलिअे हमने अपनी शाला मं नाश्ता देने मे यही दृष्टि रखी है। लेकिन नाश्ते का यह खर्च शाला का नही, पालको का होना चाहिये। अिसके लिअे हम गाँव की रूढिपूर्ण धर्म-भावना का लाभ अुठा सकते हैं। आम तौर पर गाँव मे गाय फलदार दरख्त वगैरा दान मे देने का या यो ही छोड़ देने का रिवाज रहता है और अैसे दानों को हम लोगो को समझा वुझाकर शाला के नाम ले सकते है। अिससे लोगो को शिक्षा भी मिलेगी और वच्चो का काम भी वनेगा, तथा दान का भी सदुपयोग होगा; अितना ही नही कभी-कभी अैसा दान हानिकारक स्वरूप ले लेता है—जैसे छोड़ी हुअी गाय अुजाड़ करती है—वह नही होगा।

पीने का पानी : वच्चो को पीने के लिये पानी रोज ताजा और छान कर घड़े मे रखा गया। घड़े से पानी लेने के लिअे डंडीवाला वर्तन रखा गया, जिससे घड़े मे गिलास और हाथ डाल कर पानी न लेना पड़े और पानी साफ रह सके। वच्चो को पीने का पानी साफ रखने का ज्ञान हुआ तथा अुनमे सफ़ाअी की आदत पड़ी। वर्षा के दिनो मे पानी में लाल दवा डाली गयी।

शाला सफ़ाअी : शाला में आते ही वच्चे शाला की सफाअी में मदद देते हैं। स्कूल और आहाता झाड़ू लगाकर साफ करना. कागज़, कचरा आदि अुठा लेना, टोकरी में कचरा भर कर गड्ढे मे डालना—अिन कार्यो को वच्चे स्वाभाविक तौर पर करने लगे हैं। चटाअियाँ विछाना और स्कूल खतम होने पर अुन्हें लपेट कर रखना तथा सावनों

को व्यवस्थित रूप से रखना तथा व्यवस्थित रूप से काम करना—ये बातें बच्चो ने खुद की।

शरीर सफाअी : पिछले वर्ष की अपेक्षा अिस वर्ष बच्चों के शरीर की सफाअी में काफी सुधार हुआ। सब मे साफ कौन है अिसकी रोज प्रतियोगिता रखी गयी। स्कूल मे आने के पहले स्नान कराये तो बच्चे रोते है, बहुतेरे पालको की अैसी शिकायत रहती थी। अिस होड के कारण वह शिकायत कम हुअी। हर रोज प्रार्थना के बाद सब बच्चे कतार मे खड़े होते है। वे अपना सफाअी-मन्त्री चुनते है। जो साफ होगा वह सफाअी मन्त्री चुना जाता है। सफाअी मन्त्री सब बच्चो की सफाअी देखता है। बच्चो के बाल, दाँत, नाक, आँख और नाखून साफ न हो तो अुन्हे घर पर या स्कूल मे साफ करने की सूचना दी जाती है। सफाअी-मन्त्री अिसके लिअे बच्चो को पानी, तेल, राख, तौलिये देता है। छोटे बच्चो की मदद करता है। सफाअी को स्कूल के दैनिक कार्यक्रम मे महत्त्व का स्थान दिया गया है, जिसमे बच्चो मे सफाअी की आदते पड रही है और चमड़े की बीमारी मे कमी हुअी है।

कपड़ा सफाअी : पहले बच्चो को घर से कपडे साफ धोकर लाने की सूचना दी जाती थी और हफ्ते मे अेक बार स्कूल मे कपड़े साफ कर लिये जाते थे। अिस वर्ष अिसके अलावा जो बच्चे स्कूल मे मैले कपड़े पहन कर आते अुनके कपडे स्कूल मे धोने का नियम रखा गया और अुनको तब तक स्कूल के कपडे पहनने को दिये गये। स्कूल मे जो कपड़े धोये गये अुनके लिअे साबुन का अुपयोग किया गया।

सूत कताअी : ५ से ७ वर्ष के बच्चे कपास साफ करते है, सलाअी-पटरी से ओटते है और तकली पर सूत कातते है। खेत में जाकर अेक बार बच्चो ने कपास की चुनाअी भी की। जिसमे अुन्होंने कपास, चटाअी, सलाअी-पटरी, तकली, गत्ता, लपेटा तराज़ू, बाँट—अिन साधनो का अुपयोग किया।

बागबानी : स्कूल के पीछे क्यारियाँ बनाकर बच्चो ने पौधे और शाकभाजी लगायी। जमीन खोदना, खाद देना, बीज रोपना और कंद

लगाना, पानी देना, घास निकालना पौधो की देखभाल करना—ये सारे काम वच्चों ने किये। झारी से पानी देने मे अुनमे होड़ लगती थी। फूल देखकर अुन्हें वडा आनंद होता था। वागवानी मे वच्चों ने कुदाली, खुरपी, टोकरी, रस्सी, झारी—अिन साधनो का अुपयोग किया।

चित्रकला : अिस वर्ष चित्रकला मे अच्छी प्रगति दिखायी दी। खडिया मिट्टी से काले तख्ते पर अेक साथ मिलकर चित्र वनाना, खड़िया मिट्टी से खपड़े पर व्यक्तिगत चित्र खीचना और कूची से रंग द्वारा कागज पर चित्र निकालना, अिन तीन तरीकों से वच्चो ने काम किया। खड़िया और रगों का ठीक अुपयोग करना वच्चो ने सीखा। अिनमें काला तख्ता, खड़िया, खपरैल, रंग, कागज, खजूर की कूची, और कपड़ा—अिन साधनो का अुपयोग वच्चो ने किया।

मिट्टी का काम : मिट्टी से खेलने मे वच्चो को स्वाभाविक रुचि होती है। अिसलिअे मिट्टी का काम अुन्हे वहुत पसंद रहा। वच्चों ने खुरपी से मिट्टी ढीली की, कंकड़ और कचरा निकाल कर अुसे साफ किया। कागज के टुकड़ो को सड़ा कर कूटा और मिट्टी में मिला कर मिट्टी तैयार की। वच्चो ने अपनी रुचि के अनुसार मिट्टी की चीजें वनायी। खास कर गाय, वछवा, वैलगाडी, कौवा, चिड़िया, साँप, विच्छू, रसोअी के घरेलू वर्तन और तरह तरह के घरेलू खाद्य पदार्थ मिट्टी से तैयार किये। मिट्टी का काम करते वक्त हथेली से अूपर हाथ मे तथा कपड़े में मिट्टी न लगे अिसका वच्चो ने खयाल रखा। मिट्टी की चीजे सूखने पर अुनसे खेलने मे वच्चो को वड़ा आनन्द आया। अिस काम मे मिट्टी भिगोना, कंकड़ निकालना, कागज सड़ाना, कूटना तथा मिट्टी मे मिलाना, गीले कपड़े से ढक कर मिट्टी गीली रखना आदि क्रियाओ का वच्चों को अभ्यास हुआ। अुसके लिअे टोकरी, कागज, तगारी, पटिया, राख, पानी का वर्तन आदि सावनों का अुन्होंने अुपयोग किया।

शिक्षा के साधन : २॥ से ४ साल की अुम्र के वच्चों ने खेल और शिक्षा के सावन के तौर पर नीचे लिखी चीजे अिस्तेमाल की— खपरैल के टुकड़े, शंख, सीप, लकड़ी के गुटके, रीठा, गुँजा, महुआ वीज,

वाघनख लकड़ी की रंगीन तराज़ू आदि । रग परिचय के लिअे रंगीन थैलियाँ, मिट्टी के वर्तन, वैलगाड़ी, सरकड, खजूर के पत्ते, वृत्ताकार, तिकोनी, और चौकोनी आकार के लकड़ी के टुकडे आदि का अुपयोग किया । वच्चो को ये सव चीजे वहुत प्रिय है । वे अुन्हे संभाल कर रखते है । अेक वच्चा दूसरे गाँव गया था, अुस वक्त नदी मे से शख और सीप लेकर आया और अुन्हे स्कूल मे दे दिया ।

स्वावलम्बन : अधिकाश वच्चे अपना काम स्वयं कर लेते है । जो कर नही सकते अुन्हे वड़े वच्चे मदद देते है । काम के समय अुनकी ओर देखने की जरूरत नही रहती, वे जिम्मेदारी से काम करते है ।

सामाजिक आदतें : वच्चो का शाला का जीवन समाज-जीवन ही है । स्कूल द्वारा अुनमे नीचे लिखी सामाजिक आदते डाली गयी ।

ठीक तरह से वैठना, समारोह तथा नाश्ता-भोजन और प्रार्थना मे शांति से रहना, वडो को, गुरु को और मेहमानो को नमस्कार करना, किसी को गाली न देना, छोटो की मदद करना, नाश्ता तथा भोजन के प्रारंभ मे मत्र कहना, वर्ग-नायक की आज्ञा पालन करना आदि ।

भाषा : वच्चे अपना पिता का और गाँव का नाम वता सकते है । प्रत्येक क्रियावाचक नये शब्द जैसे कपास साफ करना, ओटना, कातना आदि को वाक्य मे अुपयोग कर सकते है । ऋतु के अनुसार प्राकृतिक परिवर्तन और अुसको दरसाने वाले शब्द वच्चो को ज्ञात हुअे ।

पहली और दूसरी कक्षा के वच्चो के साथ अिन छोटे वच्चो को भी वालगीत सिखाये गये । कथाओ मे मेंढक और वैल, मेंढको का राजा, वूढी माँ, तोता भाजी, कछुआ और खरगोश, कौआ चिड़िया, न्युग कौआ आदि कहानियाँ वतायी ।

गणित : खेल के साथ चीजें गिनना, वच्चो की सख्या गिनना, मतदान के समय काम, ज्यादा मतो को समझना, वजन और तराज़ू का अुपयोग करना, हलके और भारी को पहचानना, त्रिकोण और वृत्त का ज्ञान, वच्चो की संख्या देखकर फल तथा दूध आदि परोसना—अितनी वाते वच्चे कर रहे है । खेल और कवायद के समय वच्चे अपनी गिनती

स्वयं कर लेते है। ५ से ७ वर्ष अुम्र के बच्चे २० तक गिनती गिन सकते है।

प्रकृति निरीक्षण : अिसका तीन हिस्सो मे वर्गीकरण होगा।

(१) ऋतु के अनुसार तेज धूप, कड़ा जाडा घास के अूपर पड़ी हुअी ओस, विजली का चमकना आदि प्राकृतिक वातो का वच्चो ने निरीक्षण किया तथा अुनपर चर्चा की।

(२) सैर और वागवानी के समय, अलग अलग पौधो, लता और पेड़ो की पहचान हुअी, अुसके वारे मे चर्चा हुअी।

वागवानी के सनय वच्चों ने फूल के पौधो को गोवर का खाद दिया। खाद म अकुर निकले हुअे जवार, मक्का तथा मूग के जो वीज दिखे, अुसे अुन्होने अपने मित्रो तथा शिक्षको को दिखाये। वच्चो ने अुन अंकुरो का निरीक्षण किया। अंकुर की जड़ नीचे, पिंड और पत्ते अूपर निकलते है, अिसका अुन्हे ज्ञान हुआ। अंकुर निकले वीजो को अुन्होंने खाद मे से निकाल कर जमीन मे लगाया तथा अुसे सीचा।

वच्चों ने प्राणियों मे मेढक का संपूर्ण अवलोकन किया। वर्षा ऋतु मे स्कूल के अहाते के अेक गड्ढे मे मेढक ने अंडे दिये। अुनसे निकले हुअे मछली के आकार के मेढको को वच्चों ने पकड़ा और अुन्हें पानी में रखा। अुनसे वने मेढक के वच्चे तथा पूरे वढ़े हुअे चितकवरे, सफेद, पीले आदि रंग के मेढक अुन्होने देखे। वच्चो ने अुनकी आवाज तथा कूदने की नकल की। स्कूल के पास अेक पुरानी लकडी के पोले हिस्से मे अेक चुहिया और अुसके सात वच्चे वालकों को दिखायी दिये। वालको ने टोकरी मे सूत की छीजन विछा कर अुन्हें रखा। टोकरी को स्कूल के अेक कोने मे, जहाँ अँधेरा था, रख दिया। चुहिया वहाँ हमेशा रहती है, अिसका वालको ने निरीक्षण किया।

खेल : स्थायी सावनो के खेलों को छोडकर 'चुन-चुन पोली', 'अंधा-अंधा पानी कित्ता'; 'डाँगडी तुझी गाय वेल खाते'—ये ग्रामीण खेल तथा 'रेलगाड़ी', 'दो भुजा से कितने वजे' आदि अन्य खेल वच्चों को सिखाये गये। (खेलों के नाम मराठी है।)

बच्चों के कौतूहल का विषय

हवाअी जहाज का निरीक्षण बच्चो के लिअे अेक विशेष कौतूहल का विषय रहा कि स्कूल के अूपर से रोज विमान जाता है। अुसकी आवाज सुनते ही बच्चे बाहर निकल कर आकाश मे देखने लगते हैं। हवाअी जहाज बहुत अूंचा अुड़ रहा हो तो छोटा, कम अूंचा हो तो अुससे कुछ बड़ा, नजदीक हो तो काफी बड़ा, धूप हो तो चमकता हुआ दिखायी देता है और बादल हो तो अदृश्य रहता है—यह देखकर बच्चों को मज़ा आया। पानी बरसते वक्त हवाअी जहाज कैसे अुड़ता होगा—अिस संबंध में बच्चे आपस मे चर्चा करते है तथा शिक्षक से पूछकर अपनी जिज्ञासा पूर्ण करते हैं।

सैर : अिस साल पाँच वक्त सैर का कार्यक्रम रहा। सैर मुख्यत जाड़े के मौसम में की गयी। सैर को जाने के पहले शिक्षक सैर का स्थान पसंद करते। पीने के लिअे अच्छा पानी, ठहरने के लिअे छायादार पेड़ तथा खेलने के लिअे खुली जगह है या नहीं—यह देख लेते। सैर का स्थान तीन मील के अन्दर चुना जाता है। सैर की सूचना बच्चो को पहले ही दी जाती है। बच्चे अुन दिन सुबह अुठकर प्रातर्विधि से निपट कर स्नान और नाश्ता करके अपने भोजन के साथ स्कूल मे अेकत्र होते। सैर-मंत्री आगे होता और अुसके पीछे कतार में बच्चे चलते। अपना-अपना भोजन तथा कटोरी बच्चे स्वय सँभालते। बहुत ही छोटे बच्चों को बारी-बारी से शिक्षको को अपने कंधे पर अुठा-कर चलना पड़ता। दही का बर्तन, शाकभाजी, रस्सी और बाल्टी, पानी का डण्डी वाला बर्तन आदि वस्तु बच्चे बारी-बारी से अुठाते। स्थान पर पहुँचने पर सैर-मंत्री स्थान-मालिक की अिजाजत लेता है और बाद में बच्चे अन्दर जाकर जगह को साफ करते, हाथ-पैर धोकर प्रार्थना करते और भोजन की तैयारी करते। बच्चे अपनी-अपनी भोजन की गठरी खोलते और कौन क्या भोजन लाया है, अिसे सबको बताया जाता। बासी तथा सूखी जवार की रोटी, हरी मिर्च तथा नमक से लेकर घी और गेहूँ की रोटी तक भिन्न-भिन्न पदार्थ बच्चो के भोजन में होता। स्कूल की ओर से सब बच्चो को दही, हरी भाजी, प्याज तथा

धनिया दिया जाता। अिस दिन दूध-खर्च बंद रहता। जिन बच्चों को जरूरत होती अुन्हें रोटियाँ भी दी जातीं। भोजन के शुरू में मंत्र कहा जाता और श्लोक गाते हुअे भोजन चलता। भोजन के बाद बच्चे अपनी कटोरी तथा भोजन का कपड़ा साफ करते। कुछ आराम के बाद पेड़ों पर चढ़ना और मनोरंजन का कार्यक्रम होता। गाने और कहानियाँ कही जातीं। बाद में आसपास के खेत तथा बगीचों का निरीक्षण कर वापस आकर बच्चे अपने-अपने घर जाते।

त्योहार और अुत्सव : गाँव में तथा स्कूल में नीचे लिखे अुत्सव व त्योहार मनाये गये—

१५ अगस्त, श्री. भसालीजी का स्वागत, गांधीजी का निधन-दिवस, कस्तूरबा श्राद्ध दिन, बाल आरोग्य केन्द्र का वार्षिक अुत्सव, बाल जीवन प्रदर्शनी, सहभोज, बाल स्नेह सम्मेलन, व्हीं-हुरडा और मकर संक्रांति। अिन सब में बच्चों ने हिस्सा लिया।

बाल पोला : 'पोला' त्योहार मे किसान अपने बैलो को सजा कर गाँव में घुमाते हैं। दूसरे दिन बच्चों का पोला होता है। अुस दिन अपने लकड़ी के बैलों को सजाकर बच्चे स्कूल में अेकत्र हुअे। अुन्होंने स्कूल के आहाते मे तोरण बाँधा। वहाँ बैलों को खड़ा किया गया। पूजा होने के बाद अुनका जुलूस निकाला गया। बच्चे जुलूस के साथ, अपने-अपने घर गये और अुन्होंने अपने माँ से बैलों की पूजा करायी तथा खिलौनो के लिअे चंदा अेकत्रित किया। अिस अवसर पर मिट्टी के बैलों की अेक प्रदर्शनी बच्चों ने स्कूल में की।

गणेशोत्सव : बच्चों ने मिट्टी से गणेशजी की मूर्ति बनायी और स्कूल मे अुसकी स्थापना की। छः दिन गणेशजी के सामने पूजा, भजन आदि का कार्यक्रम। अेक दिन सहभोज का कार्यक्रम रहा। अुसके लिअे बच्चों ने भोजन का सामान अेकत्र किया। भोजन के लिअे पालकों को भी निमंत्रित किया गया था। बच्चों और पालकों का यह सहभोज बहुत अच्छा रहा।

बाल जीवन प्रदर्शनी : बच्चों के दैनिक जीवन से संबंधित वस्तुओं का संग्रह, बिना खर्च से बन सकें, अैसे घरेलू खिलौने, बच्चों

के मनोविकास तथा शिक्षा के साधन आदि की अेक प्रदर्शनी स्कूल में रखी गयी। अिस प्रदर्शनी से पालकों को बाल-शिक्षा के साधनों की कल्पना मिली।

बाल स्नेह सम्मेलन : दशहरे के दिन यह सम्मेलन किया गया, जिसमे बच्चों के साथ अुनके सरक्षकों तथा मित्रों को भी निमन्त्रित किया गया। सुबह गाँव मे प्रभात-फेरी निकाली गयी। स्कूल मे प्रार्थना तथा बच्चो के खेल हुअे। बच्चो को मिठाअी बाँटी गयी।

मकर-संक्रान्ति : अिस त्योहार के दिन लड़कियों ने अपने पालकों को, विशेषतः अपनी माँ-बहनो को स्कूल मे बुलाया तथा हलदी, कुंकुम और तिलगुड का आदान-प्रदान किया।

दही-हुरडा : बच्चो की सूचना के अनुसार स्कूल में 'दही-हुरडा' का कार्यक्रम था। बच्चे अपने-अपने खेत से जवार के भुट्टे लाये। स्कूल में अुनको भूना गया। बैंगन का भरता तथा दही के साथ बच्चों ने बड़े आनन्द के साथ भुना हुआ 'हुरडा' (हरे दाने) खाया। बच्चों के पालकों ने भुट्टे भून देने में शिक्षकों की मदद दी।

सहभोज : हफ्ते मे अेक दिन स्कूल मे बच्चो का सहभोज रखा गया। बच्चे अपना भोजन घर से ले आते और सब मिलकर भोजन करते। बच्चे दो बार कच्चा सामान लाये। अुनकी माताओ ने रसोअी बनायी और बच्चो को परोसा। बच्चों के बाप ने पानी लाने, बर्तन माँजने आदि कामों में मदद दी। सहभोज के जरिये बच्चों मे भ्रातृत्व की भावना का विकास करने की दृष्टि रखी गयी है।

४

पहले वर्ग के कुछ समवाय पाठ

मातृभाषा :

(क) **मौखिक :** दस्तकारी, समाज और प्रकृति के सम्बन्ध में वात-चीत ।

(ख) **लिखकर :** रोजाना कताअी का हिसाब लिखना, सामान की फिहरिस्त रखना, वच्चों के नाम लिखना, छोटे-छोटे वाक्य लिखना और पढ़ना जैसे—'कताअी की', 'पूनी वनाअी', 'तार काते' 'ओटाअी की' वगैरह ।

(ग) **कथा-कहानी :** पुराण व अितिहास की कहानियाँ, वाल श्रावण, वाल चिड़िया, नामदेव, गणेश, अेकनाथ, कृष्ण, राम-रावण युद्ध (दशहरे पर) वधु-प्रेम (रक्षा-वंधन पर) आदि ।

काल्पनिक किस्से और प्राणियो के जीवन के वारे मे, जैसे—मनुष्य और साँप, खरगोश और कछुआ, वहादुर चिड़िया, वुढ़िया और शेर आदि ।

लोक-कथाअें वच्चों ने सुनायीं—गिरगिट, वुढ़िया, शेर आदि ।

(घ) **गीत :** राष्ट्रीय— झंडा-गीत, वदेमातरम्, प्रभात-फेरी के गीत, कूच-गीत, वच्चों ने मौक़े आने पर सीख लिये ।

प्रार्थना-गीत, सरल भजन और श्लोक । काम करते-करते गाये जाने वाले कुछ गीत, जैसे 'तकली', 'सूत काते चलो', 'मेरी तकली' आदि ।

गणित :

(क) कताओी के द्वारा : काते हुअे तार गिनना और लिखना। १, २, ३ पूनियो के तार अटेरना और जोड करना। सुबह काते हुअे तारो का जोड करना।

(ख) ओटाओी के द्वारा : तोला, छटॉक, पाव से कपास तोलना। तोल कर लेना और तोल कर देना। बिनौले और रुओी तोलना। हिसाब करना।

(ग) पूनियाँ बनाने के द्वारा : पूनियो का वजन करना, तोलों और आनो में लिखना।

(घ) मासिक हिसाब के द्वारा : तार, लटी का हिसाब, आने, पैसे के भाव।

(ङ) नाश्ते के द्वारा : बच्चो की सख्या गिनकर नाश्ता देना, फल गिनना, १२ फल का अेक दर्जन। दूध---तोला, पाव और सेर। हरेक बच्चे के लिअे १० तोले दूध देना।

हर महीने बच्चो का वजन लिया। अुसके बारे में कम-ज्यादा की कल्पना। पौड का माप।

(च) वर्ग की व्यवस्था के द्वारा : सामान की जॉच, अुपयोग की चीजो को जैसे तकली, अटेरन, कपास, सूत, खुरपी, टोकरी आदि को गिनना और तोलना।

वर्ग के कमरे की लम्बाओी-चौडाओी और बच्चो की अुंचाओी; अिंच, फुट का कोष्टक तैयार करना।

(छ) समय के बारे में ज्ञान : २४ घटे का १ दिन. ७ दिन का अेक हफ्ता, ४ हफ्ते का १ माह और १२ माह का १ साल।

सामाजिक तालीम :

(क) स्कूल का जीवन : आपस मे हिल-मिल कर काम करना, बालसभा करना, काम का बँटवारा करना, अपना काम पूरा करना; अेक-दूसरे की मदद करना, भद्दी बात न करना; सभ्यता से रहना,

माँ-वाप और गुरु-जनो का आदर करना, मेहमानों का स्वागत करना, अुनको प्रणाम करना; अपनी वारी के लिअे ठहरना; सामान जहाँ रखना चाहिअे वहाँ रखना, आदि आदतें डालने की कोशिश की गयी।

(ख) गाँव का जीवन : गाँव में होनेवाले धंधों का वच्चो ने निरीक्षण किया :—टोकरी वनाना, झाडू वनाना, चटाअियाँ वुनना; नीरा से गुड वनाना, खपरैल और अीटे वनाना। आर्थिक पहलू वताया।

(ग) अुत्सव-त्योहार : अितिहास और सस्कृति से परिचय कराया।

झंडा-वंदन : नियम से पूरा करना, ठीक ढंग से खडे रहना, गाना गाना, कतार मे चलना, नमस्ते करना–सिखाने की कोशिश।

(घ) नागरिकता की अमली तालीम —वाल-सभा का सघटन किया गया। विविध मंत्रियोके काम—

१–वर्ग-मंत्री : समय पर स्कूल खोलना, घटी वजाना, वर्ग गंदा हो तो साफ कराना, ब्लैक वोर्ड, पेसिल रखना; चटाअी विछाना; वच्चों को अेक कतार में क्लास मे लाना और छुट्टी के समय वाहर ले जाना।

२–सफाअी-मंत्री : वर्ग की सफाअी, चटाअियाँ झाड़ना, स्कूल मे कही कचरा हो तो साफ़ करना, पाखाने पर मिट्टी डालना।

३–व्यक्तिगत सफाअी-मंत्री : नाखून काटना; कपड़े गंदे हों तो अुन्हे साफ करना, और दूसरों से करवाना; हाथ-मुँह, शरीर की सफाअी रखना और वर्ग के तमाम वच्चों का पूरा-पूरा ध्यान सफाअी की ओर रखना।

४–प्रार्थना-मंत्री : प्रार्थना की जगह साफ करना; चटाअी विछाना, वच्चों को ठीक वैठाना, प्रार्थना में भजन वोलने की पाली निश्चित करना; प्रार्थना शुरू करना।

५–कताअी-मंत्री : कताअी का सामान वर्ग में लाकर रखना; जरूरत पड़ने पर वच्चों को देना, पैसों तथा रुअी का हिसाव रखना, जरूरत पड़ने पर कताअी में दूसरों की मदद करना।

६-ओटाओी मंत्री : ओटाओी का सामान वर्ग मे लाना; कपास और बिनौलो का हिसाव रखना, वर्ग समाप्त होने पर सव सामान ठीक जगह पर रखना।

७-नाश्ता-मंत्री : नाश्ता वॉटने की पाली लगाना, नाश्ता लाना; वच्चो को ठीक तरह से विठाना।

८-कपड़ा-मंत्री : कपडो का हिसाव रखना, जरूरत होने पर वच्चो को कपडे देना और अुनकी सफाओी का अिंतजाम करना।

९-खेल-मंत्री : खेल के समय सीटी देकर सवको अिकट्‌ठा करना; अेक कतार करवाना, फिर पाली-पाली से खेल करवाना।

१०-पानी-मंत्री : पानी लाने के वारे में वाल-सभा में निश्चित हुआ कि गुरुजी की मदद से दो लडके पानी भरेंगे, क्योकि अकेले कूअें से पानी लाना वच्चो के लिये वहुत कठिन है।

वच्चो को घर से वुलाने के लिअे भी अेक मत्री था लेकिन फिर सवकी अेक राय से यह तय हुआ कि बच्चों को वुलाने कोओी नहीं जायगा, वे स्वय आयेंगे।

शिक्षा :

(क) सभा का नियम—वाल सभा क्या है, अुसकी जरूरत क्या है, सभा में नियम न होने से क्या होगा—आदि वाते समझायी गयीं।

(ख) सभापति का चुनाव—सभा की कार्रवाओी करनेवाले को सभापति कहते है। सभा के काम के पहले अिसका चुनाव होता है। जो नाम सुझाता है अुसे सूचक या प्रस्तावक कहते हैं। अुसका अनुमोदन दूसरे व्यक्ति के जरिये होने पर सभापति का चुनाव होता है और अुसके कहने के अनुसार सभा का काम चलता है।

(ग) विवरण देना—हर-अेक मत्री अपने काम का जवानी विवरण 'वाल-सभा' मे देता है।

(घ) चुनाव और मत-दान—खुद अिच्छानुसार काम लेना, मत देना, समान मत मिलने से चिट्‌ठी डालकर चुनाव करना।

सामान्य-विज्ञान :

सफाअी के द्वारा :

(क) (स्कूल में)--खुद की और समाज की सफाअी का महत्व। सफाअी की जरूरत, सफाअी का तरीका।

कक्षा का कमरा, आँगन, पेशाब-घर, कुँआ और आस-पास की जगह क्यों साफ रखनी चाहिये। गंदे रहने से कौन-कौन-सी बीमारियाँ फैलती है। पीने का पानी कैसे रखना। अुसे साफ क्यो रखना चाहिअे। नाश्ता करने से पहले हाथ-पाँव धो लेने की जरूरत।

(ख) (गाँव में)--गाँव के रास्ते साफ रखना, रास्तों पर पाखाना नहीं करना, पाखाने पर मिट्टी डालना, जूठन गाँव के बाहर डालना, कुअें की नाली साफ करना, खुद का मकान और आस-पास की जगह साफ रखने की कोशिश करना, गाँव में सोख-गड्ढे का महत्त्व, सोख-गड्ढ बनाने में मदद करना।

भोजन के द्वारा : गाँव में पैदा होनेवाली फसलों के नाम। हर तरह की सब्जी। हर घर का भोजन। दूध और फलों की कमी। शाला में हर रोज दस तोला दूध या अेक फल नाश्ते में देकर भोजन की कमी पूरी की गयी।

प्राकृतिक परिचय के द्वारा : बादल, ठंड, धूप—अिनका हमारे जीवन और रहन-सहन पर असर।

सैर-सपाटों के द्वारा : हर मौसम में बाहर सैर के लिअे जाते थे। पेड़, पत्ते और फूलों का निरीक्षण किया गया। पवनार गाँव में जाकर पूज्य विनोबाजी के दर्शन किये। वहाँ नदी के किनारे से वर्ग के संग्रहालय के लिये कुछ चीजें लायी।

चित्रकला : रंगो की पहचान। लाल, पीला, हरा, काला, सफेद, पत्तों का आकार, तकली, अटेरन, झंडा, खुरपी—अिनके चित्र खींचना। फूल और पेड़ों के नाम, फूलो के रंग। पेंसिल से स्लेट पर और अुंगली से मिट्टी पर चित्र बनाना। कला का जीवन में स्थान।

खेल : सामूहिक-जीवन, अनुशासन का बोध।

अिसके सिवा कतार में चलना, खेल के समय सच कहना, छोटे बच्चो से मिलकर खेलना आदि आदतें बढ़ाअी गयीं।

बच्चों के कुछ प्रश्न और अुनके जवाब

नाम	सवाल	जवाब	किस प्रसंग से प्रश्न अुठा
१. नीलकंठ—	मेरे लपेटे का वजन क्या है ?	लपेटे का वजन करके दिखाया, ८ तोले हुआ।	बच्चो का वजन लेते समय।
२. दादा—	गायके शरीर पर कपड़े नही, तो अुसे क्या ठंड नही लगती ?	ओीश्वर ने अुसके शरीर पर बाल दिये है अिससे अुसे सर्दी नही लगती। बाल ही अुसके कपडे है।	आदिम मनुष्य की रहन-सहन और अुसके कपडे की जरूरत कैसे पूरी होती थी, यह बताते समय।
३. दादा—	गाय के पैर मे कांटे नही लगते क्या ?	गाय के पैर में खुर है, अिससे अुसे कांटे नही चुभते।	
४. पंचफूला—	६३ दिन का अुपवास करने के बाद पूज्य भसाली भाअी कैसे बचे ?	कमला—वे ओीश्वर के भक्त है।	पूज्य भंसाली भाअी चिमूर गये, अुस वक्त आत्म प्रगटन में।

५. **गंगाधर**—अभी हम सव टुकड़े-टुकड़े करके पूनी क्यों कातते हैं ?	जोतू–थोड़ा-थोड़ा करके लिखना आने के लिये। गंगाधर–अेक पूनी काती तो तार गिनना नही आता; लिखते भी नहीं वनता।	दस्तकारी–कताअी–के शुरु में।
६. **रामराव**—क्या वापूजी जेल मे सूत कातते थे ?	(अिसका जवाव शिक्षक ने वच्चों को खुद वताने को कहा) रामचद्र–जेल मे तो हाथ वँधे थे, सूत कैसे कातेंगे। आत्माराम–नहीं, मेरे पिताजी तो वहुत-सा मूत कातकर लाये थे। (अुसके पिता सत्याग्रह में जेल जाकर आये है)	वापूजी के जेल से आने के वाद चर्चा करते समय।
७. **सीता :** पू. महादेव भाअी की मौत हुअी अुस समय वापू जी को कैसा लगा ?	(अिसका जवाव सवाल पूछने वाली लड़की से ही पूछा गया) सीता—अुन्हें खूव वुरा लगा होगा! वापू जी रोये होंगे ?	स्व. महादेव भाअी के श्राद्ध-दिन।
८. **पांडुरंग :** आज दूव ज्यादा क्यों मिला ?	यमू–आज दूव ज्यादा आया है। शिक्षक—नहीं, दूव रोज जितना ही है; लेकिन वच्चे कम आये अिसलिये दूव ज्यादा मिला।	नाश्ते के समय

९. अंजनी : ज्वारी से भी गेहूँ मे ज्यादा मिट्टी क्यो रहती है ?	पचफूला—ज्वारी के भुट्टे काटते है और गेहूँ को नीचे से काटते है।	अनाज सफाओी के समय।
१०. लीला : रात को मेरे घर मे पत्थर किसने फेंके ?	ताओी—मेरे भाओी और वापू ने।	दोनो सवाल गणेश-चतुर्थी की चर्चा के समय अुठे।
११. चरणदास : किस कारण से ?	शिक्षक—पुरानी वुरी पद्धति है कि गणेश-चतुर्थी के दिन घरो पर पत्थर फेकने से कोओी गाली नही देता, जो गाली देगा अुससे गणपति नाराज हो जायँगे। लेकिन यह अच्छा नही।	
१२. सुदाम : अुनके मुँह मे कितना थूक रहता है ?	देखो तो, तमाखू खाने वालो के मुह मे कितना थूक रहता है ! थूकने का मौका न मिला तो वे अुसी जगह पर थूक देते है। अैसी वुरी आदत होती है।	अेकनाथ की कहानी और अुनके वदन पर थूक डालने की शरारत करनेवाले यवनके वारेमें वताते वक्त।
१३. लीला : तेल का क्या हुआ ?	श्री पवारजी ने समर्थन किया कि तेल पीपा मे है, अुसका भी अेक पत्थर वन गया होगा।	फरीदगहा का जुलूस और गिरड टेकड़ी की कहानी के समय।

२४. शेरखाँ :	आधे पिंड का आधा ही लड़का आया होगा ?	अेक पिंडवारी ले गया। 'बाकी दो पिंड बचे। अुसके चार टुकड़े किअे। आधा पिंड मानी अेक टुकड़ा। चार टुकड़ो के चार लड़के हुअे—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न।	ये दोनों सवाल राम-जन्म के अव-सर पर कथा चालू थी, अुस समय अुठे।
२५. पांडुरंग :	पिंडवारी ले गया तो अु लड़का हुआ होगा ?	शिक्षक— अिसका अुत्तर आज नही देते। तीन–चार दिन बाद देंगे। पिंडवारी ले गया, अभी अितना ध्यान मे रखो। (हनुमान-जन्म - दिन पर अिसका अुत्तर दिया और वह बच्चों की समझ मे आया)।	

६

पालकों के शिक्षक बालक

क्रम	बालक का नाम	उम्र	पालको से वालकों का संवाद	प्रसंग
१	नारायण	४॥	दादी मुझे टट्टी के लिये दूर ले चलो।	दादी सवेरे टट्टी घर के पास ही बैठाना चाहती है।
२	परशुराम	४।	माँ मुझे नहला दे।	माँ कहती है बच्चा रोज नहलाने को तग करता है।
३	रुखमा	४।	माँ मेरे वाल वना दे।	माँ का कहना है कि रोज वाल वनाने को तग करती है।
४	जानराव	५।।।	पिता जी मेरे वाल विल्कुल काट दो।	पिता अंग्रेजी वाल कटवाना चाहता है।
५	विजय	५।	पिता मेरा नाम स्कूल मे लिखा दो।	अच्छा न होने पर भी वच्चे की जिद्द पर दाखिल कराया।
६	प्रभाकर	५	माँ मेरे कपड़े धो दो।	वच्चा कपडे धोने को रोता है।
७	सुशीला	३।	माँ मुझे स्कूल पहुँचा दे।	माँ और दादी को स्कूल पहुँचाने को तंग करती है।
८	सव वच्चे	—	हम गुब्वारे न लेगे।	गुब्वारे वाहर से आते और जल्दी टूटते है। टुकड़े गले में फँस जाते है।

७

प्रातःभ्रमण की कुछ घटनायें

विजय अेक ब्राह्मण का लड़का है। हमारे गाँव में ब्राह्मण परिवार सिर्फ यही है। दो साल पहले, जब विजय की अुम्र साढ़े तीन वर्ष की थी, वह अपने घर की सीढ़ी पर से शिक्षक को अपने नित्य के प्रात.भ्रमण पर जाते देखता। शिक्षक विजय को स्कूल में आने को कहते लेकिन अुसके माता-पिता अपने बालक को अैसी स्कूल में नहीं भेजना चाहते थे जहाँ छूआछूत का परहेज नहीं पाला जाता। फिर भी शिक्षक अपने प्रात.भ्रमण में विजय से पूछ ही लिया करते कि वह स्कूल में कब तक आनेवाला है।

अेक दिन सवेरे शिक्षक कुछ बच्चों के साथ प्रातःभ्रमण को जा रहे थे। विजय अपने दरवाजे में से देख रहा था। शिक्षक अपने और किसी काम में लग गये और अुन्होंने विजय से नमस्कार नहीं किया। माँ भी बड़ी अुत्सुकता से देख रही थी और शिक्षक का नमस्कार न करना अुसे भी अखरा।

दूसरे दिन भी वही हुआ। माँ ने शिक्षक को बुलाकर कहा: "गुरुजी, आपने विजय को आज क्यों नहीं बुलाया? वह आपकी राह देख रहा है। कल भी आप अुससे नमस्कार करना भूल गये, अुसकी ओर ध्यान भी नहीं दिया। आपको बिना बोले जाते देखकर अुसका दिल बहुत ही टूट गया है।"

शिक्षक ने मुस्कुराते हुअे कहा: "मैं अुसे बुलाना भूल गया जिसका मुझे खेद है। वह तो स्कूल में कभी भी आ सकता है। लेकिन आप आने नहीं देतीं! विवश है बिचारा! मैं क्या कर सकता हूँ?

सिर्फ बुलाने से तो अुसका पेट नही भरेगा ! " शिक्षक के शब्दो पर माँ मुस्कुराने लगी ।

दूसरे दिन विजय फिर अपने दरवाजे के सामने खड़ा रहा । शिक्षक ने जाते हुअे पूछा, 'क्यों, स्कूल में कव चलना है ?' वालक क्षण भर के लिअे अिघर-अुधर करने लगा, और माँ की ओर देखकर अेक दम चिल्ला अुठा—'मां, मै स्कूल में जा रहा हूँ' और वह तो चला शिक्षक के साथ । शिक्षक की आँखों में सन्तोष झलक रहा था । मां चुपचाप खड़ी–खड़ी देख रही थी ।

दूसरे दिन विजय स्कूल के दूसरे वच्चो के साथ नाश्ता करने के लिअे कटोरी लाया । अव वह हमारी शाला के अच्छे लड़को में से है और माँ-वाप भी स्कूल के सक्रिय हिमायती वन गये हैं ।

शिक्षक ने पूछा—"आप अपनी वच्ची को स्कूल में क्यो नही भेजती ?"

मां वोली—"आपने पूछा यह तो ठीक है । आपका काम है । लेकिन मै और वच्ची का वाप जव काम पर जाते है तव घर को कौन देखे और वच्चो को कौन संभाले ? "

अिस पर शिक्षक ने वताया—"आप घर को ताला लगा दें । वह अपने भाअी के साथ स्कूल में आ सकती है ।"

लेकिन मा वोली—"वच्चा अभी अितना वड़ा नही है कि स्कूल में जा सके और न अुसकी तवीयत ही अच्छी है । अुसकी आँखें आअी हुअी है, दिनभर रोता रहता है ।"

शिक्षक ने कहा—"कोअी वात नही । वच्ची को अपने भाअी को स्कूल में लाने दो । हम अुसकी मदद करेंगे । वह अुसे आरोग्य केद्र में ले जायगी और वहाँ अुसका अिलाज हो जायेगा ।"

अिस तरह कौशल्या, जिसको अभी ही चौथा वर्ष लगा है, अपने भाअी के साथ स्कूल में आने लगी ।

अेक दिन अपने प्रात-भ्रमण में शिक्षक को दूर कुछ शोर-गुल होता हुआ सुनाअी दिया । वे वहाँ पहुँचे तो देखते है, 'रामू वुरी

तरह रो रहा है। अुसकी मां लाल हो रही है। शिक्षक को देखते ही मां कहने लगी—"देखो गुरुजी, देखो तो अिस बच्चे को! जैसे अिस बेवकूफ की चाकरी के सिवा मुझे कुछ काम ही नही है! देखो। मुझे अिसका मुह धोने और नहलाने के लिअे कह रहा है। तभी यह कूल में जायगा। मैं कह रही हूँ—'स्कूल में जा। वहाँ गुरुजी सब कर देंगे।' लेकिन नहीं मानता। अच्छा पीटना चाहिये अिसे तो।"

शिक्षक ने सब शान्तिपूर्वक सुना। फिर मां से बोले—"मां, रामू घर पर नहाना चाहता है। लाओ, नहला दूँ। चल, रामू।" बालक खिल गया और मां भी ठडी हो गअी। तब शिक्षक ने मा से कहा: "आप गलती पर है। आप मां है और आपका काम है कि आप अपने बच्चे की सार-सँभाल करे। जब भी जरूरत हो शिक्षक तो आपकी मदद के लिअे है ही। लेकिन मा होने के नाते अुसका खाना पकाना, अुसे आराम देना, आपका काम है। और अिसलिअे आपको अुसे नहलाना-धुलाना चाहिये, अुसे अच्छी आदतें सिखानी चाहिये और स्कूल में भेजना चाहिये। अेक दफा जहाँ अुसे अपना काम करना आ गया कि वह आपका बहुत समय नहीं लेगा। मैं सदा आपकी मदद को आया करूँगा। जब कभी आपको ज्यादा काम हो बुला लिया करो।"

मा व्यंग को ताड़ गअी और हँसती हुअी बोली—"क्यों, क्या आप मेरे घर के काम में भी मदद देंगे?"

शिक्षक ने कहा—"हाँ, क्यों नही, लेकिन हमेशा नहीं। तभी जब आपको बहुत काम हो।"

अिसपर मां ठण्डी पड़ी और अुस दिन से अुसने अपने बच्चे को स्कूल में साफ-सुथरा भेजने का वायदा किया।

गीता के सिर में जुअें पड़ गअी थीं। अुसकी मां अितनी लापरवाह थी कि वह न अपने को संभालती थी न अपनी लड़की को। बात बहुत बढ गअी। शिक्षक ने अुसे कअी बार अपने और अपनी बच्ची के सिर की कंघी करने को कहा। लेकिन अुसे तो समय ही नहीं था। वह बोली—"जुअें तो रहेंगी ही। कितनी ही कंघी करो, लेकिन

लड़की अितनी गन्दी है कि वह धूल में खेले विना मानती ही नहीं । मैं अुसे किस तरह साफ रखूँ ? आप जूँ नहीं मिटा सकते । मैंने वहुत सिर पटका लेकिन कुछ नहीं हुआ । ”

शिक्षक ने कहा—“ अेक दफा और कोशिश कर देखें । यह दवा है । अुसके सिर में डालो । रीठे का गरम पानी, गरम पानी वाल सुखाने के लिअे अेक साफ कपड़ा तैयार रखना । मैं तुम्हें गीता के वाल धोने की क्रिया सिखाने के लिअे आअूँगा । ”

दूसरे दिन शिक्षक गये और परिणाम काफी सन्तोपजनक रहा । दुपहरी मे मां फिर आअी । अव अुसके हाथ मे पैसे भी थे । शिक्षक ने पूछा—“अव और क्या चाहिये ?” “ वही जो आप गीता के वालों के लिअे लाये थे । मै अव अपने वाल भी धोना चाहती हूँ । जुअें वड़ी तकलीफ देती है ।”

परिशिष्ट

१

प्रश्नोत्तर

विद्यार्थी : अिस शाला के लिये आदर्श शिक्षक कौन है ?

शिक्षक : आदर्श शिक्षक वही हो सकता है जिसका व्यक्तित्व बहुत अूंचा है। अुसके व्यक्तित्व की मधुरता से सब बच्चे जिसके पास आसानी से दौडकर आ जायेंगे और अपने साथ अपने मां-बाप को भी खीच लायेंगे।

विद्यार्थी : अैसे शिक्षक में क्या-क्या गुण होने चाहिये ?

शिक्षक : अुसमें आत्म-शक्ति के अूपर दृढ विश्वास होना चाहिये और कार्य के प्रति अेकनिष्ठा होनी चाहिये। अिस शक्ति का पूरा-पूरा अुपयोग करने की भरसक कोशिश अुसे करते रहना चाहिये। अिसीमे अुसकी परीक्षा है। यदि वह यह न करेगा तो वह खुद अपने आपको और दूसरो को भी धोखा देगा। बच्चो के प्रति प्रेम, यह तो अुसका प्रथम गुण है। अुच्च आदर्श, प्रेम-भाव, सहनशीलता, सत्य-प्रियता, अुदारता तथा गरीब जनता के साथ मिलनसार वृत्ति आदि गुण शिक्षक के लिये प्रशसनीय है। अैसा शिक्षक ही छोटे बच्चो पर अच्छे संस्कार डाल सकता है। यदि वह देहाती जीवन से सहानुभूति रखता हो व समाज-कार्य के लिये तत्पर हो तो अच्छा ही है। थोडी खेल-कूद की जानकारी तथा बीमारों की सेवा करने की आदत भी होनी चाहिये।

विद्यार्थी : बच्चो को शिक्षा देने की पद्धति क्या होनी चाहिये ?

शिक्षक : अिस पद्धति से काम करना है तो प्रथम बच्चों से किसी तरह की ज़बरदस्ती नही होनी चाहिये या अुनपर दबाव डालकर

कोअी काम नहीं करवाना है जिससे बालक में भय की भावना पैदा न होने पावे, वह यह न समझे कि मैं छोटा हूँ, कमजोर हूँ और शिक्षक बड़ा और बलवान है। शाला में काम के लिये वातावरण पैदा होना चाहिये, जिससे बालक स्वभावतया काम में जुट जाय। अुसके लिये काम और खेल मे कोअी फ़र्क नहीं रहना चाहिये।

दूसरी बात यह है कि बच्चों को हर काम खुद हाथ से स्वतंत्रता-पूर्वक करने देना चाहिये। वही काम यदि शिक्षक खुद करे तो काम अच्छा हो सकता है किन्तु बच्चों को अुससे कोअी लाभ नहीं होता। बच्चा स्वतत्रता से काम मे जुटे और अुसका अनुभव करे, यह सबसे बड़ी शिक्षा है। काम में बच्चों को जहां मार्ग-दर्शन की ज़रूरत हो, वहां वह देना आवश्यक है। अिसी मे शिक्षक की कुशलता है। बच्चों की स्वतंत्रता में बाधा न डालते हुअे अुसे सही काम में जुटाना और वैसा ही स्वभाविक वातावरण पैदा करना सचमुच अेक कठिन काम है। किन्तु सच्चा और कुशल शिक्षक मित्रभाव से यह कर सकेगा।

विद्यार्थी : बच्चो को अिस शाला में मिट्टी, खपरैल और पत्थरों से ही ज्यादा वास्ता पड़ता है, अिससे क्या फ़ायदा? यहां काम किस प्रकार करवायें?

शिक्षक : अिस अुमर में बच्चों को पत्थर, मिट्टी और पानी से ही ज्यादा प्रेम रहता है। ज्ञानेद्रियों के अभ्यास के साधन के रूप में ये चीजें अच्छा काम देती हे। खपरैल कूटना, पीसना, मिट्टी को पानी से भिगोकर मलना, अुससे कुछ चीज़ें बनाना, बच्चों को खूब पसन्द रहता है। अिन बातोसे धीरे-धीरे आत्म-संयम बढ़ता है। दुनियाके बड़े से बड़े ज्ञानकोष के मूलभूत सिद्धांत तो मिट्टी, पानी, पत्थर, प्रकाश आदि में ही भरे हैं। बच्चा अिनसे आनन्द पाता है, ज्ञान पाता है और अुसके विकास में कोअी बाधा नही आती अिसलिअे बिना खर्च के और सबसे अूंचे दर्जे के अिन साधनों का हमे अुपयोग कर लेना चाहिये। अिनके बाद और अुपयुक्त साधन भी जुटा सकते हे। अब रहा, काम किस प्रकार करवाना? अेक ही काम रोज़-रोज़ अेक ही ढंग से करवाने में वह यांत्रिक बन जाता है. अुसमें नवीनता या प्राण नहीं

रहता। अिसी कारण बालक अुससे अूब जाता है। काम चाहे अेक ही रहे लेकिन यदि तरीका बदलता रहे तो बच्चे को अुसमें से नये अनुभव का आनन्द मिले और काम भी बढ़ता जाय।

विद्यार्थी : पूर्व-बुनियादी शाला मे बच्चों को आकर्षित करने लायक रग-बिरंगी चमकीली चीज़े नही है, तब अुन्हें सुन्दरता की पहचान व तरह-तरह के रगोका ज्ञान कैसे दे सकेंगे ?

शिक्षक : प्रश्न ठीक है। बच्चो को सुन्दरता की पहचान और कलात्मक अभिरुचि देनी है तो अिसके लिये पहले शिक्षक को कला की पहचान होनी चाहिये। बाजारू व शहरो से आअी चमकीली चीज़ों में कला नही होती, वे खर्चीली भी होती है। अैसे खिलौने जुटाना शिक्षा की दृष्टि से कृत्रिमता पैदा करना है। कृत्रिम चीज़ों से कृत्रिम वातावरण पैदा होता है। जो खिलौने या चीज़ देहात के वातावरण मे पैदा होती हैं या वहां के कारीगरों से बनती है, अुनमे स्वभाविकता रहती है। वे जीवन से सम्बन्धित होती हैं। गीली मिट्टी या खपरैल के टुकड़ों से गाड़ी बनाना या तकली बनाना आदि काम अेक बालक करता है। वह खेलता है और साथ ही साथ अुसकी बुद्धि और कला की सृजन-शक्ति बढ़ती है।

विद्यार्थी : खिलौने किस प्रकार के होने चाहियें ?

शिक्षक : बालक जिन चीजों से खेलता है यदि वे अुसे आत्म-प्रकटन के लिये प्रस्तुत करती है, तो वे अच्छे खिलौने साबित हो सकती है। स्थानीय और कम खर्चीली वस्तुओं से ये सब खिलौने बना सकेंगे। जैसे मिट्टी, फटा कपडा, कपास, टूटा सूत, फटे कागज़, बॉस के टुकड़े, खपरैल, बालू, पत्थर, बीज, पत्ते, अिन सबमे खेल के अच्छे साधन भरे हुअे है। चीज़ें निर्माण करना, आकार देना, रग भरना, सजाना, सब कला का काम है। यह अेक सजीव और सृजनात्मक कला होगी। अिस तरह ये साधन स्वभाविक और बालक के विकास के पोषक होगे। वे विदेशी ढंग से कारखाने मे बने-बनाये नही लाये जायेगे। अिसमें हाथ की कला रहेगी। भारत के देहाती वातावरण मे यह चीज़ मौजूद है। अुसमें शास्त्रीय दृष्टि डालनी है। बढ़अी अपने बच्चो के लिये लकड़ी के

खिलौने, कुम्हार मिट्टी के खिलौने व लुहार लोहे के खिलौने वनाता है। प्रौढ़-शिक्षा और पूर्व-वुनियादी का गहरा सम्वन्ध है और अिसी तरह रहेगा। सावन अिसी वातावरण में वने और वालको के जीवन से सम्वन्वित होने चाहिये, चाहे वे पत्थर और मिट्टी ही क्यों न हो।

विद्यार्थी : वालक वहुत चंचल होते है, शांत नही रहते। अुन्हें शांत किस तरह रक्खें ?

शिक्षक : जो वालक चंचल ह, अुसकी चंचलता अच्छी और स्वाभाविक है। अुसमें तोड़ने की प्रवृत्ति नही होनी चाहिये। अैसी चच–लता अुसके शारीरिक स्वास्थ्य की निशानी है। अुसके पास जो शक्ति है, अुसका जव हम पूरा-पूरा अुपयोग नहीं करते और वह चाहता है कि वह अपनी शक्ति का पूरा-पूरा अुपयोग करे, लेकिन जव वह नही कर सकता, तव चंचल वनता है और मनमाने अपने शक्ति का अुपयोग करने लगता है। हम अुसे दुरुपयोग कहते है। अुसे कुछ शारीरिक परिश्रम की आवश्यकता है तथा कुछ वौद्धिक परिश्रम की भी। अिसलिये अुसे थोड़ी दौड़ और खेल-कूद कराना चाहिये, अुसके दिल के मुताविक कुछ काम करवाना चाहियें, कहानी, चित्र-कला, सगीत अैसी चीज़ें करवानी चाहियें, जिससे अुसे थोड़ी शारीरिक और वौद्धिक थकावट हो और आनन्द भी मिले।

विद्यार्थी : वालक वात नहीं सुनता और दूसरों की आदतें विगाड़ता है, चीज़ें तोड़ता है। अैसी वुरी आदतें छुड़ाने के लिये क्या करना चाहिये ?

शिक्षक : वालक क्यों नहीं सुनता, अुसकी वजह क्या है, यह शिक्षक को जाँच लेना चाहिये। कभी-कभी वालक को काम करने की तीव्र अिच्छा हो रही है या वह अेक काम में मग्न है और शिक्षक अुसे दूसरे कारणों से किसी और काम में लगाना चाहता है, अैसी हालत में यदि वच्चा नहीं सुनता तो शिक्षक को अुसे धीरज से समझाना चाहिये। या अैसी कोअी ज़रूरत न हो तो अुसे काम करते रहने देना चाहिये। अचानक काम से हटाया जाय या अुसका काम विगाड़ दिया जाय तो वालक में ज़िद्द चढ़ती है। अुसके काम या खेल हमारे महत्व की चीज़

न हो, लेकिन अुसके लिये वह महत्व की चीज़ है क्योकि अुसी मे से अुसे अेक नअी अनुभूति मिलती है। कभी-कभी काम टालने के लिये वालक नही सुनता या जिद्द करता है, यह समझने की वुद्धि शिक्षक में होनी चाहिये। यदि काम टालने की ही वात हो, तो शिक्षक को दृढ होकर कहना होगा। वच्चे को डाँटने-पीटने की कोअी ज़रूरत नही। अुसे दृढ़ता से समझाना है। जव वह देखेगा कि सव वच्चे काम में लग गये हें तो वह भी अलग नही रहेगा। अुसका परिवार वही है। अपने समाज से वाहर रहना या अलग रहना वह पसन्द नही कर सकता। फिर भी मान ले कि यदि जिद्द में वह नही मानता तो थोडी अुपेक्षा दिखाना ज़रूरी है।

अस्वास्थ्य के कारण या घर के कुछ कारणो से भी वालक काम मे अरुचि दिखावे या अलग रहे तो अुसके शारीरिक स्वास्थ्य या घरके कारणो की जाँच होना जरूरी है। ये सव वाते शिक्षक की कुशलता पर निर्भर है।

यदि चीज़ तोडने लगता है तो अुसे चीज कैसे अिस्तेमाल करना, यह पहले सिखाना चाहिये। वाद मे वह अुसी तरीके से चीज़ अिस्तेमाल करता है या नही, अिसका ख्याल रखना चाहिये। चीज ठीक से लेना, अच्छी तरह अिस्तेमाल करना, खेलना और फिर व्यवस्थित रखना आदि वातें वच्चे की सृजनशीलता को वढाती है। तोड़ना, फेंकना, वुरी तरह अिस्तेमाल करना आदि वाते विध्वंसक प्रकृति को वढाती है। अिसकी जिम्मेवारी घर के वातावरण पर भी है। वालको को जैसी आदते पड़ती है, वैसा ही अुनका स्वभाव वनता जाता है। अिसी विध्वसक प्रकृति को रोकना और सृजन प्रवृत्ति को वढाना शिक्षक का कार्य है। जव वालक का मन काम मे न लगे, अुसका जी अूव जाये, तव चीज़ें हटा देनी चाहिये, वच्चे की थकावट को समझ लेना चाहिये।

वच्चो में खुद वुरी आदते नही होती, क्योकि वच्चा जन्म से वुरा नही होता। वुरी आदतें या तो शारीरिक कमजोरी के कारण या मानसिक अस्वास्थ्य के कारण होती है। घर का वातावरण, व सगोपन पद्धति गलत या दोषपूर्ण हो तो भी आदते विगड़ती है। यहाँ हमारी

प्रौढ़ शिक्षा शुरू होती है। मां-बापो को यदि हम घर के वातावरण, रहन-सहन का प्रभाव, शाला से लाभ-हानि, वालक की शारीरिक तथा मानसिक कमज़ोरी, वाल-संगोपन का महत्व आदि वातें न समझा सकें तो वच्चों की वुरी आदतें हटाना कठिन हैं। मनुष्य-स्वभाव वचपन से ही, संस्कारों के द्वारा वनता जाता है अिसीलिये अच्छे संस्कार वढ़ाना और वुरे संस्कार मिटाना, यह शिक्षा का मुख्य अंग है। यह वालक के प्रति स्नेह और अुसके सम्वन्ध में जानकारी से ही साध्य हो सकेगा।

वालक अनुकरण करनेवाला होता है। काम अच्छे हों या वुरे वह तो अनुकरण करेगा ही, अिसलिये शिक्षक या माँ-वाप दोनो अुदाहरण से ही वच्चो के अूपर अच्छे सस्कार डाल सकेगे।

विद्यार्थी : "वाल-वाड़ी के साथ प्रौढ-शिक्षा का सम्वन्ध है," अैसा आपने कहा। अुसका मतलव क्या है और शिक्षक वह किस तरह साध्य कर सकेगा ?

शिक्षक : वाल-शिक्षा के साथ प्रौढ़-शिक्षा का गहरा सम्वन्ध है। वच्चो के ज़रिये शिक्षक माँ-वाप के पास पहुंच सकता है। यदि मा-वाप हमारे साथी वन गये. अुनकी ज़िम्मेवारी क्या है, यह समझने लगे तो गांव सुधर जायेगा। वच्चों के मां-वाप हमारे मित्र वने, अुनकी हालत तथा अड़चनो की हमे जानकारी मिले, हम अुनके सलाहकार और मददगार वने, यही हमारी प्रौढ़-शिक्षा है। सफाअी, सेहत, वाल-संगोपन आदि पर सलाह देना या वीमारी में मदद करना, यह शिक्षक को मित्र के नाते साध्य होना चाहिये। नये धन्धे वताकर आर्थिक हालत सुधारने का रास्ता दिखाना चाहिये। शिक्षक पैसो से तो अुन्हे मदद नही दे सकेगा लेकिन अुनकी वुद्धि वढ़ाना, अुन्हे स्वावलम्वी वनाना शिक्षक का काम है।

विद्यार्थी : पूर्व वुनियादी के शिक्षक रोज़ाना घर-घर वुलाने जाते हैं। अिसका मतलव क्या है ?

शिक्षक : हम वच्चों को वुलाने जाते हैं। अुसका मतलव वच्चों को वुलाना मात्र ही नहीं है। सुवह मां-वाप घर पर रहते हैं। अिस समय वुलाने के निमित्त से जाने पर पूरे घर से परिचय हो जाता है।

रोज प्रत्येक घर जाने की जरूरत नही, कुछ घर चुन लेन ठीक होंगे। पहले-पहले वच्चा शाला मे स्वय आने के लिये तैयार नही होता। लेकिन यदि वह शिक्षक को रोज-रोज मां-वाप के साथ वात-चीत करते देखे, मां-वाप भी मित्र भाव से सोचने लगें कि वच्चो को भेजना चाहिये तो वच्चा भी शिक्षक की तरफ आकर्षित होगा और अुसके मन में शिक्षक या शाला के वारे में जो डर होगा, वह हट जायेगा। अिससे प्रौढ़-शिक्षा का काम भी कुछ आगे वढेगा। जैसे, वालक का आरोग्य, आहार, सफाअी तथा अन्य प्रश्नों पर वाते करने का मौका मिलेगा।

विद्यार्थी : मांटेसरी और पूर्व-वुनियादी पद्धति में क्या फर्क है ?

शिक्षक : अिसका जवाव तो पूज्य वापूजी के शब्दो में ही देना ठीक होगा। "मैडम माटेसरी की विचारधारा ठीक है, सिद्धांत सही है। पर हिन्दुस्तान के वायु-मण्डल मे पच सके, अुस रीति से अुसका अमल होना चाहिये। मैडम माटेसरी ने यूरोप में जिस लिवास में या जिस ढग से अुसको रक्खा है, ठीक अुसी ढग से यहा रक्खा जाय तो नुकसानप्रद होगा।

"खर्च की वात को मै तुलना में गौण मानता हू। हिन्दुस्तान को पचने जैसी वात होवे तो भले ही करोड़ों का खर्च हो। मगर करोड़ो का खर्च करके अिग्लैण्ड के वायु-मण्डल की वात हो तो वह गलत है, वह आ भी नही सकती। हमें भारत की गरम हवा मे जीना सीखना चाहिये। अिस तरह वहा के वायु-मडल को लाने का कोअी प्रयत्न करे और कहें कि काम खर्चीला है तो मैं कहूंगा कि खुद वह कल्पना ही टेढ़ी है और अिसलिये अुसको छोड़ना ही चाहिये। छोड़ने का कारण अुसका खर्चीलापन नही होनो चाहिये। यद्यपि खर्चवाली वात महत्व की हो सकती है मगर जहा आवश्यकता होवे तहा खर्च हो तो विरोध नही है।

"कारखानों मे वने सावन सस्ते मिलें और देहात के महँगे पड़े फिर भी अुसी को वनवायें। सशोधन किस रीति से करना है, यह हमें सवको सिखलाना होगा। चरखा देहात में किसी तरह वना सके, सो संशोधन चल रहा है। अैसे रूप को खोज लेना और अुसे देहात में ले जाने का काम मैडम मान्टेसरी का नही है।

"अिसमे ज़हरीली वस्तु जो है वह व्यापक अर्थ मे है। केन्द्रित करके देहात में पहुंच नही सकते। अैसा करने से संभ्रम पैदा होगा। अिसका तो देहात मे विकास होना चाहिये। जिस रीति से पहले वालू में लिखते थे, फिर पत्ते लिये, फिर ताम्रपत्र को खोज निकाला, वहाँ ब्लैक-वोर्ड को चलाना ठीक नहीं। शोधन-शक्ति को हम नही पालें-पोसेंगे तो नहीं चलेगा।"

यह कुछ हिस्सा पू वापूजी के पत्र में से पढ कर सुनाया। अव हमें अपने ढंग से विचार करना है। वह पद्धति शुरू हुअी है विदेश में। तत्व या सिद्धान्त को सोचने के कारण नही परन्तु अितना सही है कि जिस तरह अुसका अुपयोग हमारे यहां किया जाता है, वह हमारे देहाती या ग़रीव वच्चों मे कृत्रिमता लानेवाली है। यहां मॉंटेसरी पद्धति में सवसे महत्व की वात साधन ही वन गये है अिसीलिये मामूली शिक्षक अुसीपर भार देते है और वार-वार अिनका अुपयोग करके वच्चे थक जाते है। ये साधन अितने परिपूर्ण (परफॅक्ट) होते है कि कभी-कभी वच्चे की स्वतत्र विचार शक्ति में वाधक वनते हैं।

पूर्व-वुनियादी में वालक के साथ प्रौढ़-शिक्षा का सम्वन्ध जोड़ दिया है। वालक, मां-वाप, शिक्षक तथा घर और शाला के सम्वन्ध अैसे हो कि अुनके प्रति मन मे भेद ही मिट जाना चाहिये। घर के जीवन में और शाला के जीवन मे वसी ममता का आभास व अेकता की भावना मिलना वच्चे की अुस अुमर मे ज़रूरी वात है। वालक चद घंटे शाला में विताता है तथा शेप घंटे घर मे। घर में भी अुसकी आरोग्य सम्वन्धी आदतो का विकास हो तथा अिसके लिये घर में भी अैसी प्रवृत्ति का समावेश हो यह ज़रूरी है। यह ज़िम्मेवारी मां-वाप की है।

पूर्व वुनियादी का शिक्षक अथवा शिक्षिका वच्चों के लिये मधुर और स्वभावानुकूल साथी है। अुसे वालक की मां जैसी सेवा और शिक्षक जैसा मार्ग-दर्शन करना है। भारत में गुरु का स्थान और नाम अूंचे दर्जे का है; वह अर्थ "टीचर" शव्द में नही मिलता। वालक स्वतंत्र है। अुसको अपने व्यक्तित्व के विकास के लिये पोपक वातावरण मिलना चाहिये। मैडम मांटेसरी अिसको मानती थी और आगे वढ़कर वह यह भी चाहती है कि वह अेक समाज का हिस्सा है, अिसलिये अुसे कौटुम्विक

जीवन मे भाग लेना है, सामुदायिक जीवन मे भी समाज के साथ मिलता जुलता रहना है। यह अुसकी शिक्षा का साधन बनेगा—कारण, यह तो बालक के जीवन की शुरुआत है, अुसमे वह पलनेवाला है।

दूसरे साधन आब-हवा तथा आवश्यकतानुसार बनते जायेंगे।

विद्यार्थी : पूर्व-बुनियादी मे और समाज-सुधार मे क्या सम्बन्ध है?

शिक्षक हमारे समाज की बुनियाद ही पूर्व-बुनियादी है। अढाअी साल के बच्चे को शाला में लाने के लिये बच्चे के मां-बाप को समझाना है। अुनके अन्दर पुराने रीति-रिवाजो के कारण जो जड़ता भरी है, अुसे हटाना है। जिस शाला मे सभी वर्णो और वर्गो के बच्चे पढ़ते है, अुस शाला में अपने बच्चों को भेजने के लिये मा-बाप को अपनी मनोवृत्ति को बदलना पडता है। अिसके साथ हमारे आदर्शो में रुकावट डालनेवाली और भी कअी बातो को सुधारने की कोशिश करनी पडती है। यह हुअी हमारी प्रौढ-शिक्षा। अिसी प्रकार क्रमवार सभी विषयो पर विचार करने से समाज में परिवर्तन आते है तब जाकर नये समाज की नींव गिरती है और अुसकी रचना होती है। अिसी से देखेंगे कि पूर्व बुनियादी शिक्षा का प्रौढ़-शिक्षा मे जो गहरा सम्बन्ध है, वह समाज-सुधार का केन्द्र बन सकता है।

विद्यार्थी : छोटे बच्चो के लिये शिक्षक का होना अच्छा है या शिक्षिका का?

शिक्षक : बच्चो के लिये शिक्षिका हो तो अच्छा है, लेकिन सहनशील, प्रेमभावी, अुदार और सच्चा शिक्षक भी हो तो अच्छा है स्नेहमयी, सुसंस्कृत भावना तथा माता-जैसा प्रेम और सहनशीलता, चाहे वह शिक्षक में हो या शिक्षिका, दोनों मे आनी चाहिये। कअी शिक्षक शिक्षिकाओं से भी अिन गुणों में श्रेष्ठ है।

विद्यार्थी : कितने बच्चों के पीछे अेक शिक्षक होना जरूरी है?

शिक्षक : ज्यादा से ज्यादा बीस बच्चों के पीछे अेक शिक्षक होना चाहिये। अिससे ज्यादा बच्चे हो तो छोटे-छोटे चचल बच्चो को संभालना कठिन है।

२

पूर्व बुनियादी तालीम समिति का विवरण

जनवरी १९४५ में सेवाग्राम में राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन के अवसर पर गांधीजी ने कहा था:—

"अब हमारा क्षेत्र सिर्फ सात से चौदह साल के बालकों का ही नहीं है, बल्कि माँ के पेट में पैदा होते हैं वहाँ तक, हमारा अर्थात् नयी तालीम का क्षेत्र है।"

गांधीजी की रहनुमायी के मुताबिक अिस सम्मेलन की अेक खास बैठक में सात साल से छोटे बच्चो की तालीम कैसी हो, अिसपर बहस हुअी और अिस बहस के नतीजे के रूप में नीचे लिखा ठहराव पास किया गया—

"अिस सम्मेलन की यह राय है कि चूंकि बुनियादी तालीम के काम के पांच साल पूरे हुअे हैं अिसलिअे यह मुनासिब है कि अब अिस मुल्क के सात साल से छोटे बच्चों की तालीम का काम भी हाथ में लिया जाय। सम्मेलन यह सिफारिश करता है कि हिन्दुस्तानी तालीमी संघ अेक समिति मुकर्रर करे जो बुनियादी तालीम से पहले की तालीम की योजना तैयार करे। यह योजना बुनियादी तालीम के लिअे नींव का काम देगी।"

अिस ठहराव के बमूजिब संघ ने अपनी २६-३-४५ की बैठक में अपने अुद्देश्यों के मुताबिक बच्चों की तालीम की अेक योजना तैयार करने के लिअे अेक समिति मुकर्रर की जिसकी अध्यक्षा श्रीमती सरलाबेन और संयोजिका श्रीमती आशादेवी थीं।

समिति की राय थी कि चूँकि पहले सात साल का समय बच्चे की ज़िंदगी का सबसे अधिक नाज़ुक और असर डालने वाला वक्त होता है और चूंकि अिस अर्से मे अुनमे जो आदते और प्रवृत्तियाँ पैदा होती हैं, बच्चे के और साथ ही साथ राष्ट्र के भावी जीवन पर अुनकी गहरी छाप पड़ती है, अिसलिअे रचनात्मक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिअे अिस अुम्र के बच्चों की तालीम को हाथ में लेना ज़रूरी है। बच्चे की जिन्दगी मे, पहले सात साल में, अुसके सर्वांगीण विकास के लिअे जितनी मेहनत, जितने पैसे और जितनी शक्ति खर्च करेगे अुतनी ही राष्ट्र की बचत होगी, क्योंकि बुनियाद पक्की हो जाने से अुस पर जो अिमारत खड़ी करेगे वह पक्की होगी। और, अिस अुम्र की तालीम की ओर अगर हम अभी पूरा-पूरा ध्यान नही देगे तो आगे चलकर अपने राष्ट्रीय ध्येय को पूरा करने के लिअे हमे दुगुना पैसा, शक्ति और मेहनत खर्च करनी पडेगी।

अिसलिअे यह कमेटी रचनात्मक कार्यक्रम की सभी सस्थाओ और कार्यकर्त्ताओ से यह अनुरोध करती है कि छोटे बच्चो की तालीम को भी वे अपने कार्यक्रम का अेक अग समझे।

सयानों की तालीम और बच्चों की तालीम का परस्पर संबंध

समिति की यह राय रही कि बच्चो की तालीम का सवाल तो असल में सयानो की तालीम का ही अेक सवाल है। आज की हालत में वह समाज और राष्ट्र की जिम्मेदारी भले ही हो, पर हमारा आखिरी मक़सद यह होना चाहिअे कि बच्चो के माँ-बाप ही बच्चों के पालन-पोषण और अुनकी तालीम या विकास के बुनियादी अुसूलों को समझे और बुद्धि-पूर्वक बच्चों की देखभाल कर सके।

अिसलिअे बच्चों की तालीम और सयानों की तालीम की योजना अेक दूसरे की पूरक होनी चाहिअे। सयानों की तालीम मे यह सिखाया

जाय कि छोटे वच्चो की देख-भाल किस तरह की जाय और अुनकी सही तालीम क्या है। साथ ही साथ वच्चों के मदरसो का अिंतज़ाम अैसा हो कि वच्चो के माँ-वाप हमेशा वहाँ के काम देख सके और फ़ुरसत मिले तो अुनके काम मे हिस्सा ले सके और कुछ सीख भी सकें।

वच्चों की तालीम का कार्यक्रम

काम कैसे शुरू करें : वच्चों की तालीम का काम शुरू करने के लिअे सवसे अच्छा केन्द्र वह होगा जहाँ आज नयी तालीम का समग्र कार्य (यानी वुनियादी, वुनियादी तालीम से आगे की और सयानों की तालीम का कान) चल रहा है। अैसे केन्द्रो में नयी तालीम का हरेक काम अेक दूसरे का पूरक और सहायक होगा। वातावरण सवके अनुकूल रहेगा। कम कार्यकर्त्ताओ से ज्यादा काम होगा, पैसे और शक्ति का खर्च कम रहेगा। जगह भी कम लगेगी।

फिर भी जहाँ अिस तरह की सहूलियते नही होगी, वहाँ भी अुत्साही कार्यकर्ता वच्चों की तालीम से ही नअी तालीम का काम शुरू कर सकते है लेकिन अिसके लिये अुनमे अितनी दृढ शक्ति और आत्म-विश्वास हो कि वे अुसी गाँव से, जहाँ वे रहें, अिस काम के लिये ज़रूरी साधन और मददगार ढूंढ निकाले।

जगह कैसी हो : जहाँ तक हो सके वच्चों के स्कूल वच्चों के घरों से अितने नज़दीक हों कि वच्चे और अुनके माँ-वाप आसानी से आ-जा सके। जगह खुली और स्वास्थ्यकर हो। अगर वच्चों के घरों के नज़दीक स्वास्थ्यप्रद खुली जगह न मिले तो थोड़ी दूर रखने मे हर्ज नही। अिसलिये वच्चों की तालीम की जगह के चुनाव में पहला ख़याल तन्दुरुस्ती का हो। वच्चों के खेल, वाग़वानी आदि प्रवृत्तियों के लिये काफी खुली जगह हो। सफाअी के लिये पास में ही पानी का प्रवंध हो। वच्चों के खाने में जो कमियाँ रहती है अुन्हें पूरा करने के लिये कम से कम अेक वार का खाना अुनको स्कूल मे दिया जाय और साफ पीने के पानी का अिन्तज़ाम हो। वच्चों की मामूली वीमारियों के अिलाज के लिये शिक्षक के पास ज्ञान और साधन हों और वीच-वीच में या ज़रूरत पड़ने पर डाक्टर की मदद भी मिल सके, अैसी व्यवस्था हो।

वच्चो की तालीम में सव काम शिक्षक और विद्यार्थी ही मिलकर करे। स्वयसेवक या स्वयसेविकाओ की मदद ली जा सकती है; लेकिन किसी काम के लिये न तो नौकर रखे जायँ और न पाखाना-सफाअी के लिये ही भगियो का अुपयोग किया जाय।

मकान कैसे हों : छोटे वच्चो की तालीम के लिये पक्के मकानों की जरूरत नही, क्योकि अुनका वक्त तो ज्यादातर खुली हवा मे वीतेगा। घर देहाती नमूने के हो, हल्के और सादे हों, लेकिन अुनमे काफी रोशनी और हवा आ सके, अिसका अिन्तजाम हो। वारिश के महीनो मे वच्चे चार दीवारो के अन्दर सुरक्षित होकर काम कर सके, अितनी जगह चाहिये। जिस कोने मे रसोअीघर, दवाखाना और काम करने और खेलने के सामान रहे, वह थोडा पक्का करके वाँधना पड़ेगा।

कितने वच्चे हों : छोटे वच्चो का स्कूल छोटा होना चाहिये ताकि वच्चो को घर-जैसा आराम हो। अेक शिक्षक ज्यादा से ज्यादा वीस वच्चो को सँभाले। लेकिन अगर मददगार, स्वयसेवक मिले तो वह और वच्चो की जिम्मेदारी ले सकता है।

शिक्षा के साधन : छोटे वच्चो की तालीम के लिअे जरूरी साधनो के वारे मे कुछ गहराअी से विचार करने की जरूरत है। वच्चो के समग्र विकास की प्रवृत्तियो के लिअे जरूरी साधन का पूरा अितजाम होना ही चाहिये लेकिन अिसके लिअे हमे अपने नीचे लिखे वुनियादी अुसूल हमेशा ध्यान मे रखना होगा—

सवसे पहली वात ख्याल मे रखने की यह है कि जो भी साधन वच्चो के हाथ मे दिये जायँ वे सचमुच अुनकी जरूरतो को समझकर हमारी ही खोज और तजवीज से तैयार की हुअी चीजे हो। वह किसी दूसरे वातावरण और किसी दूसरे समाज के वच्चो के लिअे अुपयुक्त चीजो की नकल न हो।

दूसरी वात यह है कि जो भी साधन काम मे लाये जायँ अुन्हे शिक्षक अुसी गाँव के कारीगरो की मदद से देहात मे पाये जानेवाले सामान से तैयार करे। शायद किसी वड़े केन्द्रीय कारखाने मे पहले

दर्जे के कारीगरो से वनाओी हुओी ओेक नमूने की चीजें पैसे के ख़याल से कुछ सस्ती भले ही पड़ें, लेकिन तालीम की दृष्टि से देखा जाय तो अुन्हें खुद वनाने से देहाती कारीगर और शिक्षक, दोनो को अपनी वुद्धि से नओी ओीजादें करने मे मदद मिलेगी और अुनकी कारीगरी का भी विकास होगा। अिस तरह ये चीजे सयानों की तालीम मे मदद पहुँचाने का ज़रिया भी वनेगी।

हमें ओेक वात और याद रखनी है। वह यह है कि जो भी साधन वच्चों के हाथ मे दिओे जायें वे सचमुच अुनके विकास में सहायक हो। यह वात सभी मानते है कि वच्चे के हाथ में ज्यादा साधन या सुसंपूर्ण साधन देने से वच्चो की कल्पनाशक्ति और सृजन-शक्ति का विकास नही होता। अिसलिओे वच्चो के काम या खेल के लिओे जो साधन दिये जायँ अुनमे कुछ न कुछ करने को ज़रूर वाकी रहे जिसे वच्चा अपनी कल्पना से पूरा करे। सवसे अच्छा तो यह होगा कि अपने काम और खेल के साधन वनाने मे वच्चे भी अपनी शक्ति के अनुसार हिस्सा लें।

वच्चों की तालीम का विषय

शारीरिक विकास : वच्चों की तालीम में सवसे वड़ा और सवसे ज़रूरी पहलू है अुनके शरीर का पर्याप्त विकास। अिसमे वच्चों के लिओे कैसी और कितनी खूराक चाहिओे, खानेका ठीक समय क्या है, दो भोजन के वीच मे कितना अन्तर चाहिओे, खाने का हाजमा, शरीर की हलचल और आराम, वीमारियो से वचने के अुपाय और मामूली वीमारिमो के अिलाज, शरीर और कपड़ो की सफाओी— ये सव वातें आ जाती है। आदर्श समाज मे तो यह काम घर का ही होगा। लेकिन हिंदुस्तान की मौजूदा हालत में यह वच्चों की तालीम का ओेक ज़रूरी हिस्सा हो जाता है।

हमारे वच्चो के खाने मे अुन जरूरी तत्त्वों की वड़ी कमी है जो अुनके शरीर के विकास के लिओे ज़रूरी है। अिस कमी को पूरा करने के लिओे वच्चों को मदरसे में ही ओेक या अधिक समय भोजन या

नाश्ता देने का अितजाम होना जरूरी है। वच्चो को काफी पानी पीने की आदत भी डालनी चाहिये।

मदरसो मे वच्चों को जो खूराक दी जाये वह सिर्फ अुनके पोषण के लिअे न हो वल्कि यह अुनकी सामाजिक तालीम और वृद्धि के विकास का भी जरिया वने। अिसके साथ-साथ अुन्हे भोजन के द्वारा सदाचार, सफाअी, तंदुरुस्ती की तालीम दी जा सकेगी, भाषा और सादे जवानी हिसाव भी सिखाये जा सकेगे।

तंदरुस्ती : वच्चो की तालीम का अेक और वड़ा हिस्सा है अुनकी तन्दुरुस्ती। जिस गाँव मे वच्चो की देख-भाल के लिअे कोअी संस्था काम करती हो वहाँ तो मदरसो का काम आसान रहेगा। वहां शिक्षक का काम अितना रहेगा कि जिन वच्चो के अिलाज की जरूरत हो अुन्हे केन्द्र में भेजना और देखना कि अिलाज स्कूल में और घर में भी जारी है, लेकिन ज्यादातर गाँवों में अैसा कोअी अिन्तजाम नहीं रहता; मदरसो को ही वच्चो की तन्दुरुस्ती की जिम्मेदारी अुठानी होगी।

अिसलिअे वच्चो की मामूली शिकायतो का अिलाज करने के लिअे जरूरी साधन और जानकारी शिक्षकों के पास होनी चाहिअे। अुनको अितना ज्ञान होना चाहिअे कि वे छूत की वीमारियाँ और खाने की कमी से या गलत खूराक से जो वीमारियाँ होती है अुन्हे पहचान सकें।

मदरसों मे वच्चो का नियमित वजन लेने का भी अितजाम होना चाहिअे। थोड़ी जरूरी दवाअे और कुछ अतिरिक्त खूराक भी रहे। वीच-वीच में कोअी डाक्टर स्कूल के वच्चो की तंदुरुस्ती की निगरानी करे और जरूरत होने पर वच्चों का वाकायदा अिलाज हो सके, अिसका भी प्रवंध हो।

सफाअी : वच्चो की तालीम मे सफाअी का वडा महत्त्वपूर्ण स्थान है। शरीर की सफाअी, कपडों की सफाअी, अुपयोग की चीजों और खेल के सामान की और अपने आसपास की सफाअी रखने की आदत वच्चो मे पहले दिन से ही डालने की कोशिश की जाय।

स्वावलम्बन : बच्चों के शरीर के विकास, तन्दुरुस्ती और सफाअी की तालीम के साथ-साथ अुन्हे स्वावलम्बन की तालीम देना है, यानी अुन्हे अपना काम—जैसे कपड़े धोना, नहाना, बाल सँवारना, दाँत साफ करना, कपड़े पहनना वगैरह—खुद करना सीखना है। अिससे बच्चो की अिन्द्रियो और स्नायुओं का विकास होगा। अुन्हे तन्दुरुस्ती के नियमो का अनुभव होगा और अुनमें स्वतन्त्रता की भावना पैदा होगी।

सामाजिक तालीम : हरेक बच्चा समाज का अंग होता है और वह राष्ट्र का अेक भावी नागरिक है अिसलिअे सामाजिक तालीम या नागरिकता का भी नअी तालीम मे अेक बहुत बड़ा हिस्सा है। अिसमें खाना-पीना, अुठना, बैठना, सोना, खेलना, पाखाना-पेशाब को जाना आदि विषयो मे सदाचार के नियमो को सीखना, आपस में, बडो के साथ, अतिथियो के साथ व्यवहार, अपने से छोटो की देख-भाल, अुत्सव त्यौहार मनाना और सामाजिक, राष्ट्रीय कार्यो में शक्ति के अनुसार मदद करना—ये सारी बाते रहेगी।

काम या खेल : काम या खेल बच्चों के विकास का सबसे कारगर साधन है और अुनकी तालीम के कार्यक्रम में अुसका मुख्य स्थान रहेगा। यहाँ यह कहने की जरूरत नही कि बच्चों के जीवन में काम और खेल मे कोअी अन्तर नही है। शिक्षक का काम है कि वह अैसा काम या खेल चुने जिसमें अुनके विकास की सबसे अधिक सम्भावनाअें हों।

आज तक हमने यह प्रयोग करके नही देखा है कि अेक मामूली देहात में या देहाती घर में जो प्रवृत्तियाँ और अुद्योग-धन्धे चलते हैं अुनमें से कौन-कौन काम छोटे बच्चों के सर्वांगीण विकास के साधन बन सकते हैं। यह प्रयोग अभी हमें करना है। प्रयोग शुरु करने के लिअे नीचे काम सुझाअे जाते है :—

(१) घर का काम—झाड़ू लगाना, कपडे धोना, खाना बनाने मे मदद करना वगैरह।

(२) सफाअी का काम।

(३) खेती-बागबानी ।

(४) कताअी-बुनाअी का काम ।

अिसके अलावा गाँव मे चलनेवाले दूसरे अुद्योग-धधे—जैसे बढअी का काम, लोहार का काम, घर बनाना, चटाअियाँ बनाना, रस्सी बनाना, अीटे बनाना, खपरैल बनाना और पकाना—अिनमे से भी कुछ काम बच्चो की शिक्षा के साधन बन सकते है ।

भाषा : बच्चो की शिक्षा मे अुच्चारण की स्पष्टता और शुद्धता, शब्दो का सग्रह बढाना, अपने विचारों को साफ और पूरा-पूरा व्यक्त करना, अपने भाव प्रकट करने में कविता, गीत, कहानियाँ कहने और सुनने मे आनन्द लेना—ये बाते आ जाती है । अिसके लिये भाषा का बाकायदा वर्ग नही चलाना है, बल्कि वह स्कूल मे अुनके रोजमर्रा के काम और खेल के जरिये और कहानियाँ, गीत या कविताअे और नाटक, जिन्हे बच्चे और शिक्षक स्वय तैयार करे, अुनके जरिये स्वाभाविक तौर से होनी चाहिये । लिखने-पढने की तालीम तभी शुरू की जाय जब बच्चे खुद अुसकी जरूरत महसूस करे ।

गणित : बच्चो मे गणित-बोध (Mathematical Sense) पैदा करना भी तालीम का अेक मकसद है । अुनके रोजाना के काम और खेल के सिलसिले मे गिनना, जोड़ना, घटाना, गुणा-भाग, नाप-तोल आदि हिसाब के जितने काम आ जाते है अुनका ठीक-ठीक अुपयोग कराना और अैसे मौके देने के लिये काम और खेल सोचकर निकालनें चाहिये । नाप-तोल का अन्दाज बढाने के लिये अुन्हे काफी मौका देना चाहिये । अुनके आसपास की वस्तुओ से भौमितिक (ज्यामेट्री की) आकृतियो (शकलो) के परिचय की नीव डाली जा सकती है ।

विज्ञान : अिसी तरह बच्चो मे वैज्ञानिक मनोवृत्ति पैदा करना भी तालीम का अेक अग है । अिसके लिये देहात का जीवन अेक बहुत अनुकूल क्षेत्र है । शिक्षक को चाहिये कि आसपास की खेती, जानवर और चिडियो के जीवन से फायदा अुठाकर बच्चो मे जिज्ञासा-वृत्ति, पर्यवेक्षण की शक्ति और प्रयोग की आदत पैदा करे ।

कला : अिस अुम्र के वच्चों के लिये सवसे ज्यादा ध्यान आत्म-प्रकटन पर दिया। अुनके अन्दर जो है वच्चे अुसे चित्र द्वारा प्रकट करें। अिसीसे अुनकी निरीक्षण और कल्पना की ताकत वढ़ेगी।

वच्चे के अिस आत्म-प्रकटन मे किसी वड़े का हस्तक्षेप न हो। शिक्षक वच्चों की चीजों की समालोचना न करे। हाँ, वच्चे आपस में समालोचना करे तो अच्छा है।

शिक्षक वच्चे को अपने चित्र शव्दो में वयान करने को कहे। अिससे अुनका सोचना शुरू होगा। वह वच्चे को नये-नये अनुभव देने की कोशिश करे—वन-भोजन, घुमाना, रोजमर्रा की आसपास की चीजों को निरीक्षण कराने आदि से।

चित्रकला के लिये अधिक रंग अिस्तेमाल कराये जायँ। जहाँ तक हो सके नीचे लिखी चीजे अिस्तेमाल हो—सूखे रंग, पानी के रंग, कांडी (पेस्टिल) के रंग, क्रेयॉन, पेंसिल, खड़िया वगैरह। स्लेट पर, काले तख्ते, कागज, फर्श, दीवार पर मन से तस्वीरें खीचें। रंगीन वीज सजाकर जमीन पर चित्र वनाये। शिक्षक जमीन पर खड़िया से फल, फूल, जानवर आदि के खाके वनाये जिन पर वच्चे रंगीन वीज सजायें।

शिक्षक वच्चो के चित्रो को ठीक न करे वल्कि जो चीज वनाओी हो अुसे सामने रखकर निरीक्षण कराये, अिससे वच्चा स्वय आगे वढ़ेगा। वह वच्चों मे वारीकी से निरीक्षण करने की आदत डाले।

संगीत : सगीत और नृत्य भी वच्चो की शिक्षा के वहुत वड़े साधन है। अफसोस की वात यह है कि हमारा शास्त्रीय सगीत वच्चों के अनुकूल नही है और अभी तक वच्चो को भजन, लोक-गीत वगैरह से चुन-चुनकर वच्चों के लायक सगीत अभी तैयार करना है।

तालवद्ध हलचल भी संगीत का अेक अंग है। शिक्षक को चाहिये कि वह अैसा वातावरण तैयार करे जिसमे वच्चे सगीत की लय के साथ-साथ अपने को अवाधित रूप से व्यक्त कर सकें। लोकनृत्यों में शिक्षक को अैसे जरूरी साधन मिल सकते है; लेकिन वह अुन्हे अिस

रूप मे वच्चो को न करायें जिससे अुनकी अपनी स्वाभाविक अभिव्यक्ति मे रुकावट पड़े ।

पालतू जानवरों की देख-भाल : अन्य देशो मे वच्चों की तालीम देने के लिये स्कूलो में जानवरो और पक्षियों को पाला जाता है। अिसलिये यहाँ अुनके वारे में कुछ कहना जरूरी है। गाँवो में, जहाँ वच्चे प्रकृति की गोद मे खेलते है और जहाँ वैल, गाय, वकरी, सूअर और मुर्गियाँ वगैरह देहाती जीवन का अेक अनिवार्य अग वन गयी है, यह जरूरी नही कि स्कूलों मे अुनका अलग से प्रवन्ध किया जाय। अिसके लिये स्वाभाविक तरीका तो यह रहेगा कि गाँवो मे जो पशु-जीवन है अुसमें वच्चे हिस्सा ले ताकि अुनमे शुरू से ही जानवरो के लिये ममता वोध का विकास हो और आज देहात मे जानवरो के प्रति जो अत्याचार और निष्ठुरता चलती है, अुसमे अुनकी हमदर्दी हो।

खेल-कूद : हमने पहले ही कहा है कि वच्चो के जीवन मे खेल और काम के वीच मे कोअी अन्तर नही है। अुनके लिये सव काम खेल है और सव खेल गभीर और अुद्देश्यपूर्ण कोशिश है, जिससे वे सीखते है। वच्चो की तालीम का आदर्श तो यह होना चाहिये कि काम या खेल की दो धाराअें मिलकर अेक हो जायें।

आध्यात्मिक विकास : वच्चो की तालीम मे वाकायदा धार्मिक शिक्षा का कोअी स्थान नही। अगर अुनके स्कूल मे हम प्रेम, न्याय, सव धर्मो के प्रति आदर-भाव, अेक दूसरे की मदद करने का और अेक साथ मिलकर काम करने का वातावरण पैदा कर सके तो वही वच्चों के आध्यात्मिक विकास के लिये सवसे कारगर साधन होगा।

(समिति का नया सुधरा हुआ पाठ्य-क्रम हमारे यहाँ से मिल सकता है। कीमत दस आना, डाक-खर्च ২ आना।)

पूर्व बुनियादी अवस्था में बच्चे की शिक्षा

क्रिया	साधन	विषय-ज्ञान
१. शरीर-सफाओी— दाँत, हाथ, पाँव, मुँह धोना, बाल सँवारना, नाखून काटना।	डोला, पानी, दाँतून, तौलिया, साबुन, मंजन आदि; तेल, कंघी, शीशा, जूं मारने की दवाओी, कैंची, चाकू।	दाँत कैसे माँजना और धोना; नाक-मुँह और कान कैसे साफ करना, कुल्ली कैसे करना, बाल कैसे सँवारना, धोना, पोंछना, नाखून कैसे काटना; गन्दी आदतो के परिणाम, बीमारियाँ।
२. कपड़े की सफाओी—	साबुन, सोड़ा, रीठा, हिंगनबेट, राख, गमला, बाल्टी, रस्सी।	कपड़े कैसे धोना, सुखाना, तह करना, धोने की चीजों की पहचान और अिस्तेमाल करने का तरीका।
३. शाला सफाओी— झाड़ना, झटकना।	झाड़ू, टोकरी, खुरपी, फावड़ा।	मिलजुल कर काम करना, साफ-सुथरे स्थान और वातावरण में रहना, अुसका स्वास्थ्य और वुद्धि पर असर।

क्रिया	साधन	विषय-ज्ञान
४. अनाज सफाअी— फटकना, चुनना।	सूप, टोकरी, वजन, तराजू, अनाज।	अनाजो की पहचान, नापना, तौलना, भरना, खेती की कुछ बातें जानना।
५. पानी भरना— छानना, भरना।	ढकना, मटका, रस्सी, बाल्टी, डोला, बरतन साफ करना, छानने का कपडा, ग्लास।	पानी कैसे साफ रखा जाये? गन्दे पानी से बीमारियाँ फैलती है। बीमारियों के नाम।
६. कताअी— कपास सफाअी, ओटाअी, पुनाअी।	चटाअी, कपास, सलाअी-पटरी, गत्ता, ओटना, तकली, तराजू, टोकरी।	सामान्य विज्ञान, गणित भाषा, सामाजिक व्यवहार का अभ्यास
७. रचनात्मक खेल—	खपरैल के टुकड़े, रगीन पत्थर, शख, सीप, हड्डी, मिट्टी के बरतन, लकडी के टुकडे, बैलगाड़ी, गुरगुडी, बाँसमणि, फूल, पत्ती, बाँस की तराजू, चक्की, थैलियाँ।	सजाना, तकली बनाना, तौलना, मिट्टी के बरतन बनाना, अलग-अलग हिस्से खोल कर बैठाना, पिरोना, पीसना, भरना।
८. बागवानी—	कुदाली, फावड़ी, खुरपी, आरा, रस्सी।	बीज बोना, खोदना, गोडना, पानी देना, बीज की पहचान, नापना, नालियाँ बनाना।

क्रिया	साधन	विषय-ज्ञान
. संगीत—	ढोलक, खंजरी, करताल, अकतारा, गंग।	संगीत, भजन, अभिनय, नृत्य, टिपरी।
. चित्रकला—	खड़िया मिट्टी, लकड़ी की पटरी, मिट्टी की कटोरी, रग, पेड़ या बाँस की बनाओ कूंची, रगीन सूत, कागज, कपास आदि।	चित्रकला, रंगीली अल्पना, हस्तकौशल।

४

प्रगति पत्र का नमूना

नाम················अुम्र················

हाजरी························सामान्य आरोग्य············

शारीरिक हलचल : शरीर विकास-वजन जुलाअी ४७ से मार्च ४८ तक······पौण्ड वढा।

······अिंच अूंचाअी वढी।···अिंच छाती वढी।

आरोग्य : पहले·········की शिकायत थी। अव अच्छा है। फरवरी माह में वुखार आया था।

रोग निवारण के लिये अगस्त ४७ मे हैजा का और फरवरी ४८ में चेचक का टीका दिया गया। आँखों मे दवा डाली गयी।

साधन : कमरे में रखे साधनों की पूरी जानकारी है। अुपयोग करना जानता है।

विषय-ज्ञान—

भाषा : भाव-प्रकाशन के लिये शब्द का ठीक अुपयोग करना जानता है। शब्द-संग्रह वढा। गाने गाता है। कहानी कहता है।

गणित : अुम्र के अनुसार जीवन मे जरूरी गणित का ज्ञान है। छोटा, वड़ा, लवा, चौड़ा, हलका, भारी, कम, अधिक, अूंचा, और आकार का ज्ञान है। ३० तक वच्चे या चीजें गिन लेता है।

क्रिया-ज्ञान : शरीर सफाओी, कपड़े की सफाओी, शाला सफाओी— अिन क्रियाओं का ज्ञान है। कपास साफ करना, सलाओी पटरी से ओटाओी करना और तकली पर कातना जानता है। बगीचे के काम में कुदाली और खुरपी का ठीक अुपयोग करता है।

सब क्रिया और अुसके साधन के अुपयोग का निरीक्षण करता है। स्पर्श से अुसे समझता है और भाव-प्रकाशन के बाद प्रत्येक क्रिया करता है।

सांस्कृतिक विकास—

कला—हस्तकौशल : चित्र बनाना—रंग और कूंची से कागज पर चित्र बनाता है, मिट्टी तैयार करके चीजें बनाता है।

संगीत : गाना सुनना पसन्द करता है। ताल-ज्ञान है। सादे भजन सुर से गा सकता है।

धर्म और अुत्सव : प्रार्थना और अुत्सव में भाग लेता है। अुनका महत्व जानता है।

मानसिक विकास : अेकाग्रता है। जिज्ञासा-वृत्ति है। अुसपर काम छोड़ा जा सकता है। काम की रुचि है। आकलन शक्ति बढ़ी। स्मरण शक्ति का विकास हुआ। मनन शक्ति बढ़ी। निरीक्षण शक्ति कल्पना शक्ति, भाव-प्रकाशन शक्ति का विकास हुआ।

सामाजिक विकास : समाज में किस तरह रहना चाहिये, यह समझता है। बड़ों का आदर करना जानता है। शरीर, घर और आसपास की सफाओी रखता है।

खास रुचि :

विशेष :
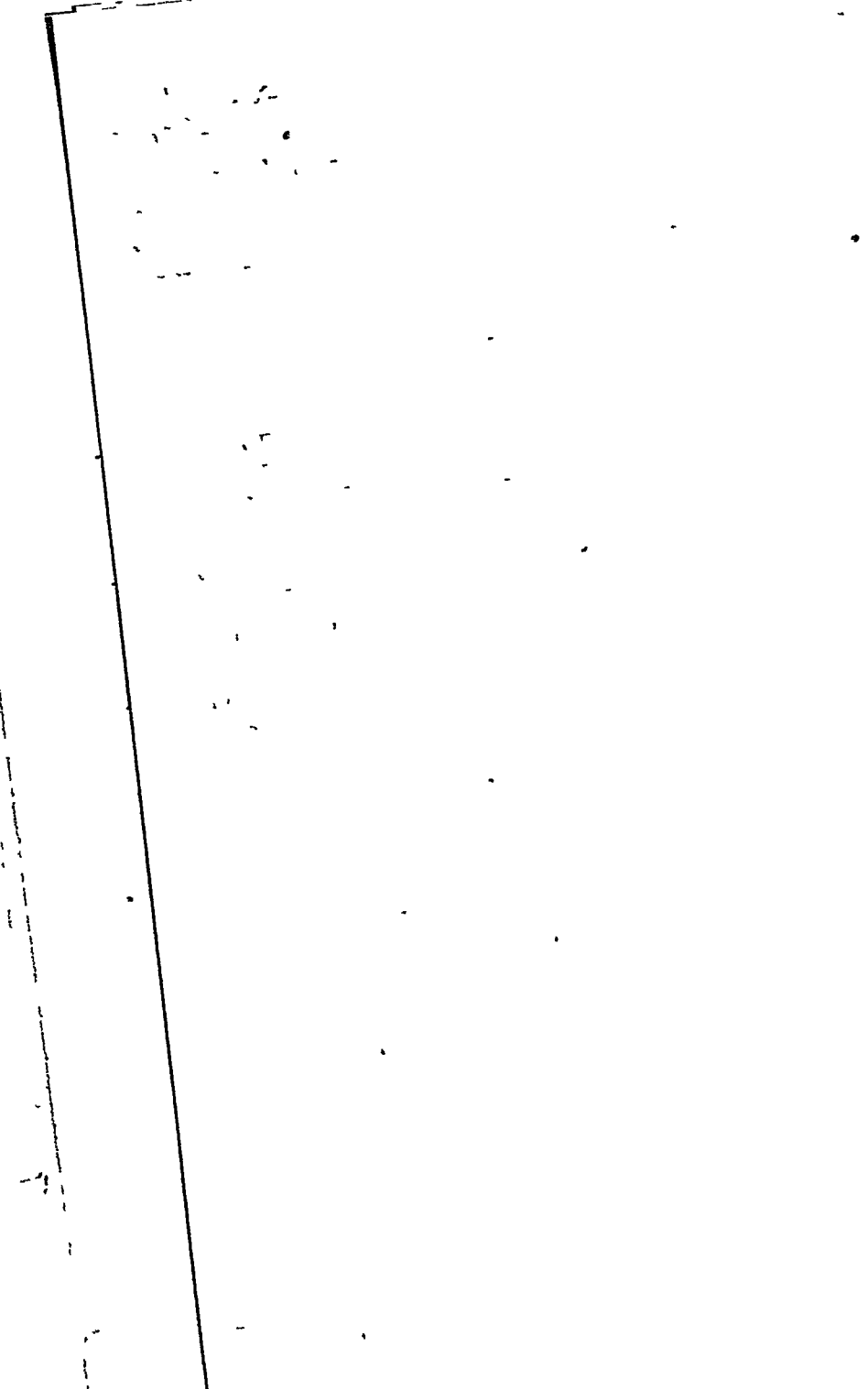
शारीरिक विकास नं० १

(बाल-वर्ग, सेवाग्राम, सन् १९४५-४६)

क्रम	नाम	जन्म-तारीख	नींद का वक्त रात से सवेरे तक	नींद के घंटे	घर का रोज का भोजन	स्कूल में हाजिरी के दिन	स्वास्थ्य
१	श्रीराम	६-७-४०	९ से ७	१०	सादा आहार, मास मछली	१२५	रक्त की कमी
२	देविका	१-३-४१	९ से ६	९	" " सवेरे दूध	२०३	नाक बहती है
३	मधुकर	१६-४-४१	८ से ७	११	" "	१५१	आंव पडता है रक्त की कमी
४	बेबी	१-७-४१	९ से ६	९	" सवेरे दूध दो बार चाय	८२	ठीक
५	गिरिधर	३-११-४१	८॥से६॥	१०	सादा भोजन	१५८	पेट साफ नहीं
६	रामराव	१७-२-४२	८॥ से ७	१०॥	" " सवेरे चाय	१५१	हमेशा खुजली रहती है
७	जानराव	२४-६-४२	८ से ६	१०	" "	१७७	ठीक
८	बाबा	७-६-४२	८ से ७	११	" "	८७	हमेशा खुजली रहती है

सूचना : सादा आहार—दाल, ज्वारी की भाकरी (रोटी), भाजी, तेल। मास-मछली हफ्ते मे अेक बार (बाजार के दिन) खाते हैं।

शारीरिक विकास नं० २

बाल-वर्ग सेवाग्राम १९४५-४६

क्रम	नाम	जन्म तारीख	छाती अिंच	अूंचाअी अिंच	वज़न									पसंदगी का खेल (प्रकार)
					जुलाअी	अगस्त	सितम्बर	अक्टू०	नवबर	दि०	जन०	फर०	मार्च	
१	श्रीराम	६-७-४०	२१	३८॥	—	—	२९	२५	२८	२८॥	२७	२८	३०	वैठने का खेल
२	देविका	१-३-४१	२०	३९	२५	२६	२६	२५	२७	२७	२७	२९	२७	"
३	मधुकर	१६-४-४१	—	—	—	२९	२५	२६	२५	२८	२८	—	२८	दौड़ने का खेल
४	बेबी	१-७-४१	१९	३९	—	—	२१॥	२५	२६	२७	—	२७	२७	वैठने का खेल
५	गिरिधर	९-११-४१	२१	३८	२८	२९	३०	३०	३०	३७	२८	२९	२९	दौडने का खेल
६	रामराव	१७-२-४२	२०	३६	२५	२५	२५	२६	२५	२६	२५	—	२७	वैठने का खेल
७	जानराव	२४-६ ४२	२०	३९	२५	२५	२६	२६	—	२६	२६	२७	२७	दौडने का खेल
८	बाबा	७-६-४२	१९	३६॥	२२	२५	२४	२४	—	२५	२४	—	—	दौडने का खेल

नमूने के तौर पर सिर्फ ८ बच्चों की जानकारी दी है।

शारीरिक विकास नं. ३

१।। से ७ साल तक के बच्चों की बीमारियाँ (सन् १९४५-४६)

अप्रैल	आँख की बीमारी, गोबर, काजण्या, माता, खुजली, खवडा (अिपिटायगो) दाद, खाँसी, बुखार, पतला दस्त, कृमि, कान बहना
मअी	आँख की बीमारी, गोबर, काजण्या, माता, खुजली, खवडा, दाद, खाँसी, बुखार, पतला दस्त, कान बहना
जून	मलेरिया, खुजली, खवडा, दाद, खाँसी, पतला दस्त
जुलाअी	मलेरिया, खुजली, खवडा, दाद, मल-बद्धता, पतला दस्त
अगस्त	मलेरिया, आँख की बीमारी, खुजली, खवडा, दाद, पतला दस्त, आँव और अुलटी, निमोनिया
सितम्बर	मलेरिया, आँख, खुजली, खवडा, दाद, खाँसी, पतला दस्त, निमोनिया
अक्टूबर	मलेरिया, आँख की बीमारी, खुजली, खवड़ा, खाँसी, मल बद्धता
नवम्बर	आँख की बीमारी, खुजली, दाद, बुखार, खाँसी, पतला दस्त, खवडा
दिसम्बर	आँख, खुजली, दाद, खवडा, बुखार, खाँसी, पतला दस्त, कान बहना, गला फूलना, जलना
जनवरी	आँख, खुजली, दाद, खवडा, बुखार, खाँसी, पतला दस्त, कान बहना, अुलटी, जलना
फरवरी	आँख, गोबर, खुजली, दाद, खवडा, बुखार, पतला दस्त, कान बहना, जलना, कृमि
मार्च	आँख, गोबर, काजण्या, माता, खुजली, खवडा, दाद, अिन्फ्लुअेंजा, खाँसी. गला फूलना, कान बहना, नाक से खून बहना

अेक वर्ष के बच्चे का विकास-क्रम

नाम—गणपत आनन्दराव

जन्म-तिथि—१९-१२-४५, वजन ८ पौण्ड

कुटुम्ब परिचय :

पिता का नाम	—आनन्दराव	माँ का नाम	—जनावाअी
आयु	—३४ वर्ष	आयु	—२६ वर्ष
आदतें	—चाय, पान-सुपारी	स्वास्थ्य	—अभी तक कोअी बीमारी नही थी। अब अेक हाथ और अेक पैर में दर्द है।
स्वास्थ्य	—अच्छा		
शिक्षण	—मराठी चौथी		
धन्धा	—बुनाअी		
आमदनी	—रु० ६००) प्रतिवर्ष	शिक्षा	—नहीं
		आदत	—चाय, पान-सुपारी

सामान्य परिचय : अेक बड़ा भाअी है। दोनों भाअी पहले मिल का सूत बुनते थे, अब खादी का काम करते हैं। आश्रम-वासियो से अधिक सम्पर्क है। समाज मे सम्मान है। स्वभाव अच्छा है। घर में छह व्यक्ति हैं—दम्पति और चार बच्चे। दूध के लिअे अेक बकरी है।

सामान्य परिचय : कताअी बुनाअी जानती है। विवाह सामाजिक रीति से हुआ है। समाज के कार्यक्रमों मे भाग लेती है। घर साफ रखती है। स्वभाव अच्छा है।

विवरण

पहला महीना	वजन—९ पौण्ड, लम्वाओ १८ अिंच, खुराक—माँ का दूध, प्रमाण—तीन-तीन घण्टे से।
दूसरा महीना	वजन—११ पौण्ड ६ औंस। लम्वाओ १९ अिंच। खूराक—माँ का दूध। गर्दन सँभालता है, हाथ-पैर हिलाता है, करवट ले सकता है, अँधेरा-अुजेला पहचानता है।
तीसरा महीना	वजन—१२ पौण्ड ८ औंस। लम्वाओ २१ अिंच। खूराक—माँ का दूध। प्रमाण—३-३ घण्टे। स्वास्थ्य—खाँसी। गर्दन सीधी रख सकता है, करवट वदलता है, चीज को पहचानता है। माँ को पहचानता है। मुह की ओर देखकर मुलकता है।
चौथा	वजन—१३ पौण्ड। लम्वाओ २२ अिंच। खूराक—माँ का दूध। तालू भरने को है। स्वास्थ्य—जाडे में खून का गिरना। माँ को पहचानता है, हँसता है, अुलटा होता है।
पाँचवाँ महीना	वजन—१८ पौण्ड ६ औंस। लम्वाओ २२ अिंच। खूराक—माँ का दूध। तालू अभी दो अंगुल खाली है। करवट अच्छी तरह वदलता है। पेट के वल सरकने की कोशिश करता है। सामने के मसूडे कठिन हो गये हैं।
छठा महीना	वजन—१५ पौण्ड ८ औंस। लम्वाओ २३॥ अिंच। खूराक—माँ का दूध। स्वास्थ्य—खून की टट्टियाँ। तालू अभी भी भरने को है। वार-वार करवट वदलता है। दाँत का अंकुर दिखने लगा है। पेट के वल सरकता है, चीज पकडता है।
सातवाँ महीना	वजन—१६ पौण्ड ८ औंस। लम्वाओ २४ अिंच। खूराक—माँ का दू । तालू अभी आधा अंगुल भरना वाकी रहा है। नीचे-अूपर दो दाँत निकल आये हैं। सामने की चीज पकडता है। गुस्सा को समझने लगा है। गुस्सा करने पर नाराज हो जाता है। वैठने की कोशिश करता है।

आठवाँ महीना	वजन—१५ पौण्ड १० औंस। लम्बाओी—२४ अिंच। तालू भर गया। स्वास्थ्य—डायरिया। खूराक—माँ के दूध के साथ गाय का दूध। नीचे के तीन दाँत निकल आये हैं। चिड़चिडा हो गया। सरकता नहीं है। कमजोर हो गया है। दवाखाना ले जाते हैं।
नवाँ महीना	वजन—१६ पौण्ड १० औंस। स्वास्थ्य—डायरिया कम है। खूराक गाय का दूध, कभी रोटी का टुकड़ा। नीचे-अूपर के चार दाँत निकल आये हैं। किसी के सहारे खड़ा हो जाता है। लेकिन कमजोरी के कारण गिर जाता है।
दसवाँ महीना	वजन—१८ पौंड ८ औंस। लम्बाओी २५॥ अिंच। स्वास्थ्य—डायरिया नहीं। खूराक—गाय का दूध, थोड़ा सा चावल, कभी-कभी रोटी का टुकड़ा। बोलने की कोशिश करता है। रंग पहचानता है। सब की बातें समझ लेता है। अनुकरण करता है।
ग्यारहवाँ महीना	वजन—१९ पौण्ड ७ औंस। लम्बाओी—२६ अिंच। खूराक—गाय का दूध, चावल रोटी। खड़ा होता है। पैर आगे रखने की कोशिश करता है। कभी-कभी स्पष्ट शब्द बोलता है। अनुकरण करता है।
बारहवाँ महीना	वजन—२० पौण्ड ८ औंस। लम्बाओी—२६ अिंच। खूराक—गाय का दूध, दाल-चावल सब्जी। दाँत अूपर के सात और नीचे के छह। बहुतेरे शब्द स्पष्ट बोलता है। खूब बोलने की अिच्छा रखता है। अेक पैर आगे रखता है। पहला वर्ष समाप्त।

कपड़े की सफाअी के प्रयुक्त देहाती साधन और तरीके

(१) **रीठा** (बाजार से लाये हुअे)--बच्चो ने रीठे फोडे। बीज खेल के लिये रखे। छिलका रात-भर पानी मे भिगोया। सवेरे मिट्टी के बर्तन में २० मिनट तक गरम किया, थोडा ठंढा होने के बाद हाथ से मलकर फेन (झाग) तैयार किया। बाद मे जरूरत के अनुसार गरम पानी में डालकर अुबाला। अुसमे कपडे डाले। नीचे अुतारकर बर्तन में अेक घटे तक कपड़े रखे। फिर धोकर साफ किये। कपडे साफ निकले।

प्रमाण----१ सेर रीठा ६ तोले छिलका छोटे कपडे ४५ धोये।

(२) **हिंगणत्रेट (हिंगोट)**----(खेत से लाये हुअे)---अूपर का छिलका फेंक दिया। गुठली १५ मिनट पानी मे भिगोयी, कपडे गीले करके साबुन की तरह लगाया। आधे घटे तक पानी मे डालकर अुबाला। फिर धोकर सुखाया। कपड़े साफ हुअे।

(३) **राख**----(खेत से)----गाँव के आसपास मुफ्त मिलनेवाले अघाडा और गोखरू के पौधे लाये गये। जलाकर राख बनाअी। रात को पानी मे भिगोअी, जिससे क्षार पानी में घुल गया और चीजे नीचे बैठ गयी। अूपर का क्षार पानी छान लिया। अुसमे और अधिक पानी डाला, और कपड़े डालकर आध घटे तक अुबाला। फिर धोकर सुखाया। कपड़े साफ निकल आये।

(४) **सोडा और साबुन**----अूपर की चीजें छोडकर सोडा और साबुन का भी हमेशा जैसा अुपयोग किया।